सरस्वती-सिरीज़ नं० ५१

योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

श्री ज्ञानचन्द्र जैन

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

सरस्वती-सिरीज़

कहानी-संग्रह

योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

इटली, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस और जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ कहानीलेखकों की सर्वोत्तम कहानियाँ

श्री ज्ञानचन्द्र जैन

Printed and Published by K. Mittra at The Indian Press Ltd. Allahabad.

मटका

(लुई जी पिरानडेलो, इटली)

[(१८६७-१९३६) आधुनिक इटालियन लेखकों में आपका सबसे ऊँचा स्थान है। आपकी प्रसिद्धि नाटककार के रूप में अधिक है, परन्तु आप एक सिद्धहस्त कहानी-लेखक भी थे। मोपासाँ और चेख़व की भाँति आपमें भी थोड़े से शब्दों में संपूर्ण जीवन को व्यक्त कर देने की अपरिमित शक्ति थी।]

उस साल ज़ैतून की फ़सल असाधारण रूप से अच्छी हुई थी। पिछले साल सभी पेड़ ख़ूब फूले थे और इस साल कुहरा पड़ने पर भी उनकी डालियाँ फलों से झुकी थीं। लोलो ने भी अपने खेत में बहुत-से ज़ैतून के पेड़ लगाये थे। यह सोचकर कि शराब की कोठरी में रक्खे हुए पुराने मटके इस साल तेल भरने के लिए काफ़ी न होंगे, उसने पहले से ही कुम्हार से एक नया मटका तैयार करने के लिए कह दिया था। उसने अपना नया मटका सबसे बड़ा बनवाया था। वह पाँच हाथ ऊँचा और तीन हाथ चौड़ा था। अन्य पाँच मटकों के बीच में वह सबका पिता मालूम पड़ता था।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि नये मटके के सम्बन्ध में लोलो और कुम्हार में झगड़ा भी हुआ। दुनिया में ऐसा कोई आदमी नहीं था, जिससे उसका झगड़ा न हो चुका हो। छोटी सी बात पर झगड़ा हो जाता था। अगर कोई उसके घर में पत्थर का छोटा सा टुकड़ा या घास का मुट्ठा फेंक देता था तो वह फ़ौरन चिल्लाकर अपने नौकर को ऊँटनी तैयार करने का आदेश करता था, जिससे वह नगर जाकर उस पर नालिश ठोंक सके। वकीलों और अदालत की फ़ीस में उसने अपनी आधी संपत्ति बरबाद कर दी थी। वह सदा एक न एक आदमी से मुक़दमा लड़ा करता

था और अंत में उसे ही हर्जाना और सारा खर्च देना पड़ता था। लोग
का कहना था कि उसका वकील उसे सप्ताह में दो-तीन बार अपने यहाँ आ
धमकते देखकर घबरा गया था। उसका आना कम करने के लिए वकील
ने उसे एक पुस्तक भेंट की थी, जो देखने में प्रार्थना-पुस्तक मालूम
पड़ती थी, परन्तु वास्तव में क़ानून की पुस्तक थी। वकील का उद्देश्य
था कि लोलो उसके यहाँ आने से पहले उस पुस्तक को देखकर स्व
निर्णय कर लिया करे कि विवादास्पद प्रश्न पर मुक़दमा चलाया भी
सकता है या नहीं।

पहले जब गाँव का कोई आदमी लोलो से नाराज़ हो जाता था त
उसका तवा गरम करने के लिए वह चिल्लाकर कहता था—जाओ, अपन
ऊँटनी तैयार कराओ! परन्तु अब उससे कहा जाता था—जाओ, अपनी
क़ानून की पुस्तक में देखो! लोलो भी बिगड़कर उत्तर देता—यही क
जा रहा हूँ, बदमाश! मैं तुझे अच्छी तरह मज़ा चखा दूँगा।

एक दिन वह नया मटका बनकर आ गया। लोलो ने उस पर एक
अच्छी रक़म—दो रुपये—खर्च किये थे। शराब की कोठरी में जगह नहीं
थी, इसलिए मटका दो-चार दिन के लिए ओसारे में रखवा दिया गय
लोलो उस बड़े मटके पर मुग्ध था। उसे बड़ा दुःख हुआ कि ऐ
सुन्दर मटका कूड़ाखाने में रखवा दिया गया, जहाँ प्रकाश और हवा
पहुँचने के कारण गंध आती थी।

फ़सल का आरम्भ हुए दो दिन हो गये थे। लोलो को ज़रा भ
अवकाश नहीं मिल रहा था। एक ओर मज़दूरों की देख-भाल का का
था, जो पेड़ों से फल गिरा रहे थे, दूसरी ओर पीठ पर खाद लादे हु
खच्चरों की पाँति खड़ी थी। लोलो ने यह खाद नये खेत में डालने
लिए मँगवाई थी। उसका मन बार-बार झुँझला पड़ता था कि सा
काम मेरे बस का नहीं। उसकी समझ में नहीं आता था कि वह किसकी
किसकी देख-भाल करे। फ़ौजी सिपाहियों की तरह वह कभी इस
कभी उस मज़दूर को फटकार बताता था कि अगर एक फल भी ग़ायब

गया तो वह उनको जीता न छोड़ेगा। वह इस तरह कहता था जैसे उसने एक-एक पेड़ के एक-एक फल गिन रक्खे थे। इसके बाद ही वह खच्चरवालों की तरफ़ मुड़ पड़ता था और उन्हें धमकाता था कि एक भी बोरी में अगर ज़रा-सी भी खाद कम निकली तो फिर उनकी ख़ैर नहीं। क़मीज़ की बाँह समेटे हुए वह इधर-उधर दौड़ता ही रहता था, चेहरे से पसीना टपकने लगता था, आँखें भेड़िये की तरह चमकती रहती थीं।

तीसरे दिन शाम को तीन मज़दूर—गन्दे और कुरूप मज़दूर—ओसारे में गये। वे भी फल तोड़ने के लिए रक्खे गये थे। वे अपनी सीढ़ियाँ बदलने के लिए ओसारे में गये थे। वहाँ नये बड़े मटके को दो टुकड़ों में टूटा देखकर वे भयभीत हो गये। ऐसा मालूम पड़ता था कि किसी ने चाक़ू लेकर बीच से मटके के दो टुकड़े कर दिये हैं।

"हे ईश्वर! यह क्या हुआ! उधर देखना, उधर!"

"हैं! यह तोड़ा किसने?"

"भगवती रक्षा करो! लोलो देखेगा तो ज़मीन-आसमान एक कर देगा! नया मटका था!"

पहला मज़दूर अपने साथियों की अपेक्षा कम भयभीत हुआ था। उसने कहा—चलो, हम लोग चुपके से ओसारे का दरवाज़ा बन्द कर बाहर चले जायँ। सीढ़ियाँ और लग्गियाँ बाहर ही दीवार के सहारे रख दें। परन्तु दूसरे मज़दूर ने कहा—क्या बेवक़ूफ़ी की बात कहते हो! तुम चतुराई में लोलो के कान नहीं काट सकते। तुम चाहे जो कहो, वह तो यही समझेगा कि मटका हमीं लोगों ने तोड़ा है। अच्छा यही होगा कि हम लोग यहीं रहें!

ओसारे के बाहर जाकर उसने दोनों हाथ भोंपू के समान मुँह पर रखकर पुकारा—मालिक हो! मालिक हो ो ो ो!

टूटा हुआ मटका देखते ही लोलो के बदन में आग लग गई। पहले तो उसने अपना क्रोध तीनों मज़दूरों पर ही उतारा। उसने एक

मज़दूर का गला पकड़ लिया और उसे दीवार से दबाकर चिल्लाकर कहा—ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, तुझे इसका मज़ा चखा दूँगा।

अन्य दो मज़दूरों नें भयभीत होकर फ़ौरन लोलो को पकड़ लिया और उसे अलग किया। तब उसका उन्मत्त क्रोध अपने ऊपर उमड़ पड़ा। वह ज़मीन पर अपने पैर पटकने लगा, अपने गालों में तमाचे मारने लगा। वह उस मटके के टूट जाने पर इस प्रकार रुदन कर रहा था, जैसे किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु हो गई हो।

"नया मटका था! नक़द दो रुपये में ख़रीदा था! अभी एकदम नया था! आख़िर मटका किसने तोड़ा? क्या वह अपने आप टूट सकता था? निश्चय उसे किसी ने तोड़ा है—द्वेषवश अथवा ईर्ष्यावश कि यह इतना सुन्दर मटका है! परन्तु कब तोड़ा? किस समय तोड़ा? मटके पर चोट का कोई निशान नहीं है। क्या वह कुम्हार के यहाँ से ही टूटा हुआ आया था? नहीं, उस समय तो लोहे की चादर की तरह बोलता था!"

मज़दूरों ने जब देखा कि लोलो के क्रोध का पहला उफ़ान ठंडा पड़ गया है तब वे लोलो को सान्त्वना देने लगे। कहने लगे—मटके पर अधिक शोक करने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि अभी मटका बन सकता है। मटका बेढंगे तौर से नहीं टूटा है, आगे का हिस्सा अलग हो गया है; एक चतुर लोहार इस मटके को अभी बिलकुल नया बना सकता है। डिम चाचा सबसे उपयुक्त आदमी हैं। उन्होंने एक सीमेंट बनाई है। उसे वे किसी को बताते नहीं कि उस सीमेंट में उन्होंने क्या-क्या मिलाया है, पर वह है बड़ी आश्चर्यजनक! एक बार वह सीमेंट लगा देने पर यह मटका फिर हथौड़े से भी नहीं तोड़ा जा सकेगा। मज़दूरों ने यह भी कहा कि अगर मालिक की आज्ञा हो जाय तो डिम चाचा सुबह होते ही यहाँ आ जायँ। यह मटका निश्चय ही बन जायगा, बल्कि पहले से भी अच्छा हो जायगा।

बहुत देर तक तो लोलो ने इन बातों पर कान तक नहीं दिया—अब व्यर्थ है, टूटा हुआ मटका बन नहीं सकता है। परन्तु अंत में वह राज़ी हो गया।

सुबह होते ही डिम चाचा पीठ पर बोरा में अपना सामान लादे हुए आ गये। डिम चाचा अति वृद्ध थे, टेढ़ा-मेढ़ा शरीर था, पके हुए बाल थे। उनके मुँह से शब्द निकलवाने के लिए, मालूम पड़ता था, चिमटी से उनकी ज़बान खींचने की आवश्यकता थी। उनकी कुरूप आकृति निराशा की सजीव प्रतिमा मालूम पड़ती थी; शायद यह निराशा इस कारण थी कि उनके आविष्कार की क़द्र करनेवाला अभी तक उनको कोई मिला नहीं था। डिम चाचा ने अभी तक अपने नवीन आविष्कार की रजिस्टरी नहीं करवाई थी और वे शायद प्रथम बार उसका सफल प्रयोग करके प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते थे। उन्हें हर समय भय लगा रहता था कि कहीं किसी को उनके नवीन आविष्कार की गुप्त विधि मालूम न हो जाय।

लोलो ने डिम चाचा को कई मिनट तक सिर से पैर तक देखने के बाद अविश्वासपूर्ण स्वर में कहा—लाओ तुम्हारी सीमेंट देखूँ तो।

डिम चाचा ने गम्भीर भाव से सिर हिलाकर कहा—आपको अभी इस सीमेंट का गुण मालूम हो जायगा।

"क्या इससे मटका जुड़ जायगा?"

डिम चाचा ने अपनी बोरी पीठ पर से उतारकर ज़मीन में रख दी और उसमें से एक लाल बंडल निकाला। एक रूमाल से कोई चीज़ बड़े यत्न से लपेटी हुई थी। वे बड़ी सावधानी से उसकी तह पर तह खोलते रहे। सब लोग बड़े ध्यान से डिम चाचा को देखते रहे। अन्त में रूमाल में से कुछ नहीं, एक ऐनक निकली, जो तागे से बँधी थी। सब लोग हँसने लगे। डिम चाचा ने इस पर ध्यान न देकर ऐनक हाथ में थामने से पहले अपनी उँगलियाँ पोंछीं, फिर ऐनक लगाकर बड़े गंभीर भाव से मटके की परीक्षा करने लगे। मटका ओसारे से निकालकर बाहर मैदान में लाया गया था। अन्त में डिम चाचा ने कहा—सीमेंट से यह जुड़ जायगा।

"लेकिन मुझे अकेले सीमेंट पर विश्वास नहीं।" लोलो ने कहा—"मैं इसमें लोहे की पत्ती भी जड़वाना चाहता हूँ।"

"अब मैं चला।" डिम चाचा ने अपनी बोरी पीठ पर रखते हुए तत्काल उत्तर दिया।

लोलो ने डिम चाचा को पकड़ लिया। उसने कहा—चले! कहाँ चले? तुम्हें तमीज़ छू नहीं गई है। अरे बेवक़ूफ़, तुझे पता नहीं कि मैं इस मटके में तेल भरूँगा और तेल चू सकता है। इतना बड़ा मटका है, तू केवल सीमेंट से जोड़ने के लिए कहता है! मैं चाहता हूँ, इसमें लोहे की पत्ती भी लगे—सीमेंट और लोहे की पत्ती दोनों! यह निर्णय करने का भार मुझ पर है।

डिम चाचा ने अपनी आँखें बन्द कर लीं, ओंठ कसकर दबा लिये और ज़ोरों से सिर हिलाया—बस, सब लोगों का यही हाल है। वे साफ़-सुथरा काम नहीं करवाना चाहते, जिससे डिम चाचा को भी अपने कलापूर्ण कार्य में संतोष हो और उसकी सीमेंट का अद्भुत गुण भी प्रकाश में आ जाय। उन्होंने ज़ोर देकर कहा—मटका फिर लोहे की चादर की तरह न बोलने लगे तो·········।

"मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।" लोलो ने गरजकर कहा—"मैं चाहता हूँ, लोहे की पत्ती भी लगे। मैं सीमेंट और लोहे की पत्ती दोनों का दाम दूँगा। कुल कितनी मज़दूरी लगेगी?"

"अगर मैं केवल सीमेंट लगाऊँ तो···।"

"हे ईश्वर! मैंने ऐसा ज़िद्दी आदमी नहीं देखा! मैं कह क्या रहा हूँ? मैं कह रहा हूँ कि इसमें लोहे की पत्ती भी लगेगी। काम हो जाने पर मज़दूरी तय कर दूँगा। मेरे पास व्यर्थ का समय नहीं है।"

लोलो मज़दूरों की देख-भाल करने के लिए चला गया।

डिम चाचा अति क्रुद्ध भाव से अपना काम करने लगे। वे जैसे-जैसे टूटे मटके पर लोहे की पत्ती चढ़ाने के लिए उसमें छेद करते जाते थे, उनके क्रोध का पारा भी चढ़ता जाता था। क्रोध के कारण उनकी आँखें

लाल अंगारे की तरह हो रही थीं, मुँह तमतमा आया था। मटके में छेद करने के बाद उन्होंने क्रुद्ध भाव से बरमा बोरी में डाल दिया और उसमें से कैंची निकालकर वे लोहे की पत्ती काटने लगे। इसके बाद उन्होंने एक मज़दूर को पुकारा, जो ज़ैतून के फल गिरा रहा था।

डिम चाचा को अति क्रुद्ध देखकर मज़दूर ने कहा—ग़ुस्से को थूक दो डिम चाचा।

डिम चाचा ने अपना हाथ हिलाया। उन्होंने सीमेंट का डिब्बा खोला और उसे दोनों हाथों में लेकर आसमान की ओर उठाया, जैसे वे यह देखकर कि मनुष्यों ने उस सीमेंट का मूल्य समझा ही नहीं, उसे ईश्वर की भेंट चढ़ा रहे थे। वे अपनी उँगलियों से मटके के टूटे हुए भाग की कोर पर सीमेंट फैलाने लगे। इसके बाद वे प्लायर लेकर मटके में जा बैठे और मज़दूर को आज्ञा दी कि वह मटके का ऊपरी हिस्सा अच्छी तरह से बिठाकर उसे थामे रहे। लोहे की कीलियाँ ठोंकने से पहले डिम चाचा ने मटके के भीतर से ही चिल्लाकर कहा—'ज़ोर से खींचकर देखो, ज़ोर से। तुममें जितनी ताक़त हो खींचकर देख लो, मटका जुड़ गया है या नहीं। उन लोगों को क्या कहूँ, जो मेरी बात पर विश्वास नहीं करते! तुम मटके को बजाकर देखो! वज़न कर देखो न! लोहे की चादर की तरह बजता है कि नहीं! जाओ, अपने मालिक को जाकर बता आओ!'

मज़दूर ने एक गहरी साँस लेकर कहा—तुम भी, डिम चाचा, बेकार की हुज्जत करते हो। मालिक ने लोहे की पत्ती भी लगाने के लिए कहा है, लगा दो। तुम्हारा क्या बिगड़ता है?

डिम चाचा एक-एक छेद में कील डालकर उसकी नोक प्लायर से चिपटी करने लगे। उन्हें सारे मटके में लोहे की पत्ती जड़ने में पूरा एक घंटा लगा, वे पसीने से तर हो गये। काम करते समय वे अपने दुर्भाग्य का रोना रोते जाते थे और मटके के बाहर खड़ा मज़दूर उन्हें सान्त्वना देता जाता था।

"अच्छा, अब मुझे बाहर निकलने में मदद दो।" डिम चाचा ने काम समाप्त होने पर कहा।

मटका था तो बड़ा, परन्तु उसकी गर्दन बड़ी पतली थी। क्रोधावेश में होने के कारण डिम चाचा ने पहले इस बात पर ध्यान नहीं दिया था। अब वे लाख प्रयत्न करते थे, परन्तु बाहर नहीं निकल पाते थे। मज़दूर उनकी सहायता करने के बजाय हँसते-हँसते दोहरा हुआ जा रहा था। बेचारे डिम चाचा मटके में क़ैद थे—उसी मटके में जिसकी उन्होंने मरम्मत की थी। अब उनके निकलने का एक ही उपाय रह गया था कि मटका तोड़ा जाय, और इस बार टूटने पर मटका फिर नहीं बन सकता था।

मज़दूरों को हँसी से लहालोट होते देखकर लोलो तेज़ी से उधर आया। डिम चाचा मटके के अन्दर बिल्ली जैसी चमकती हुई आँखों से घूर रहे थे।

"ईश्वर के लिए मुझे बाहर निकालो।" डिम चाचा चिल्ला रहे थे—"मैं बाहर निकलना चाहता हूँ! मेरी सहायता करो। शीघ्र!"

लोलो चकित रह गया। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

"क्या? तुम मटके के भीतर हो? लोहे की पत्ती जड़ते जड़ते मटके के भीतर ही बन्द हो गये?"

लोलो मटके के मुँह के निकट जाकर चिल्लाकर डिम चाचा से बोला—तुम्हारी सहायता करूँ? तुम्हारी क्या सहायता की जा सकती है? तुम भी पूरे गोबर हो। पहले से समझ-बूझ क्यों नहीं लिया? अच्छा, अपना हाथ बाहर निकालो···ठीक! अब अपना सिर निकालो। बाहर निकल आओ। नहीं, नहीं, धीरे-धीरे। भीतर जाओ, भीतर जाओ, ज़रा ठहरो। इस तरह नहीं। भीतर जाओ। क्या तुम्हारी खोपड़ी में दिमाग़ नहीं है? तुम इसके भीतर बन्द कैसे हो गये? अब मेरे मटके का क्या होगा?

"शान्ति! शान्ति!" लोलो ने दर्शकों की ओर घूमकर कहा। जैसे दर्शक ही उत्तेजित हो रहे थे, वह नहीं। उसने कहा—मेरा सिर

चकरा रहा है ! शान्ति ! यह एक अनोखी बात है ! मेरी ऊँटनी तैयार करो ! उसने मटके को अपनी उँगलियों की हड्डी से ठोंका। सच ही, वह लोहे की चादर की तरह बोलने लगा था।

"ख़ूब ! यह तो एकदम नया हो गया......तुम ज़रा सब्र करो !" उसने क़ैदी से झुककर कहा। इसके बाद अपने नौकर को फ़ौरन जाकर ऊँटनी तैयार करने की आज्ञा दी। लोलो दोनों हाथ से अपना माथा दबाता हुआ कहने लगा—मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ। यह बुड्ढा पूरा शैतान है। शान्ति ! शान्ति ! वह मटके को सँभालने के लिए उसकी ओर दौड़ता हुआ चिल्लाया। डिम चाचा का क्रोध अब शिखर पर था और वे जाल में फँसे हुए किसी हिंसक पशु की भाँति उसमें से निकलने का यत्न कर रहे थे।

"भाई मेरे, ज़रा शान्ति रक्खो। यह बिलकुल अनोखी बात है। इसे मेरे वकील ही तय कर सकते हैं, मुझे अपनी समझ पर भरोसा नहीं हो रहा है। ऊँटनी तैयार हो गई ? फ़ौरन उसे यहाँ ले आओ। मैं वकील के पास से होकर चुटकी बजाते लौटता हूँ। तब तक तुम प्रतीक्षा करो। इसमें तुम्हारा ही लाभ है। ज़रा शान्ति रक्खो, शान्ति ! मैं अपने अधिकारों को त्याग नहीं सकता। और देखो, मैं अपने कर्तव्य का पालन पहले किये देता हूँ। यह लो, मैं तुम्हें दिन भर की मज़दूरी दिये देता हूँ। ये रहे तुम्हारे ढाई रुपये ! ठीक है न ?"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए।" डिम चाचा ने चिल्लाकर कहा—"मैं बाहर निकलना चाहता हूँ।"

"सब्र करो, तुम बाहर निकाल लिये जाओगे ! परन्तु मैं अपना कर्तव्य पूरा किये देता हूँ। ये लो अपने ढाई रुपये।"

लोलो ने अपनी जेब में से रुपये निकालकर मटके में फेंक दिये, फिर सहानुभूति के स्वर में पूछा—तुमने जलपान किया है या नहीं ? दो रोटियाँ और और सामान ले आओ ! फ़ौरन! क्या तुम जलपान

नहीं करोगे ? तो जाओ भूखों मरो ! मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन कर दिया।

जलपान लाने का आदेश देकर लोलो अपनी ऊँटनी पर सवार होकर नगर की ओर चल दिया। वकील के यहाँ उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी, परन्तु सारी कहानी सुनाने के बाद जब वकील ज़ोरों से हँसने लगा तब उसे अवश्य उसका मुँह देखते हुए थोड़ी देर तक बैठे रहना पड़ा। वकील की हँसी से चिढ़कर उसने कहा—मुझे क्षमा कीजिएगा। मुझे इसमें ऐसी कोई बात नहीं मालूम पड़ती जिसमें आपको हँसी आवे। आपको तो कुछ नहीं लगता; क्योंकि आपकी कोई हानि नहीं हो रही है। परन्तु आप यह मानिएगा कि मटका मेरी सम्पत्ति है।

वकील फिर भी हँसता रहा। उसने लोलो से एक बार सारी कथा दुहराने के लिए कहा, जिससे वह फिर टहाका मार सके।

"उसके अन्दर क़ैद है ? अपने को उसके अन्दर बन्द कर लिया ? और लोलो की क्या इच्छा है ? वह उस—उस—के अन्दर ही रहे—हा ! हा ! हा !—वह उसके अन्दर ही रहे, जिससे तुम्हारा मटका न टूटे ?"

"मैं अपना मटका क्यों टूटने दूँ ?" लोलो ने अपनी मुट्ठियाँ बाँधकर, गर्म होकर, कहा—" मैं इतने रुपयों की हानि क्यों सहूँ, जिससे सब लोग मेरी हँसी उड़ावें ?"

"लेकिन यह अपराध होगा ?" वकील ने अन्त में कहा—"तुम उसे ग़ैरक़ानूनी तौर से क़ैद में रक्खोगे ?"

"अपराध क्यों ? उसे किसने क़ैद किया ? उसने स्वयं अपने को क़ैद किया है ! इसमें मेरा क्या दोष है ?"

वकील ने लोलो को समझाया कि इस मामले में क़ानून दो बातें कहता है। पहले तो आप अगर उस लोहार को ग़ैरक़ानूनी तौर से क़ैद करने के अपराध से मुक्त होना चाहते हैं तो उसे फ़ौरन रिहा कर दें। इसके बाद उस लोहार ने अपनी मूर्खता के कारण आपकी जो हानि की है उसे पूरा करने के लिए वह ज़िम्मेदार होगा।

"ओह !" लोलो ने संतोष की साँस लेकर कहा—"तो उस लोहार को मेरे मटके के दाम देने होंगे ?"

"नहीं, आप समझने में ग़लती करते हैं।" वकील ने कहा—"वह नये मटके के दाम देने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है !"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह टूटा था, बेकाम था।"

"टूटा था ! नहीं, वकील साहब। वह टूटा नहीं था। वह पहले से भी अच्छा हो गया था। लोहार स्वयं यही कहता है। अगर अब वह तोड़ा जायगा तो नहीं बन सकेगा। मेरा मटका बरबाद जायगा, वकील साहब !"

वकील ने आश्वासन दिया कि इस बात का ध्यान रक्खा जायगा और लोहार को जिस अवस्था में मटका था, उसका मूल्य देना पड़ेगा।

वकील ने कहा—अच्छा यह होगा, आप उससे स्वयं पूछ लीजिए कि वह मटके की क्या क़ीमत लगाता है।

लोलो हर्ष से उछल पड़ा। वह शीघ्रता से घर लौटा।

शाम को घर पहुँचने पर लोलो ने देखा कि खेत पर काम करनेवाले सभी मज़दूर मटके के चारों ओर इकट्ठे हैं। कुत्ते भी उस समारोह में सम्मिलित होकर हर्ष से भूँक रहे थे। डिम चाचा का क्रोध केवल उतर ही नहीं गया था, अब अपने इस विचित्र अनुभव पर वे स्वयं हँस रहे थे, जिस प्रकार कोई दुर्भाग्य-ग्रसित मनुष्य उदास भाव से हँसने लगता है।

लोलो ने मज़दूरों को एक ओर हटाकर मटके के भीतर झाँका।

"क्यों ! प्रसन्न हो न ?"

"प्रसन्न हूँ !" उत्तर मिला—"सिर पर मुक्त आकाश है। मेरे घर से यह जगह अच्छी ही है।"

"यह सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं तुमसे एक बात जानना चाहता हूँ। यह मटका मैंने दो रुपये में ख़रीदा था। तुम्हारा क्या ख़याल है, अब यह कितने का होगा ?"

"मुझे लेकर ?" डिम चाचा ने पूछा ।

मज़दूरों ने ठहाका मारा ।

"शान्ति !" लोलो ने गरजकर कहा – "या तो तुम्हारी सीमेंट अच्छी है या फिर एकदम कूड़ा । और बीच की कोई सम्भावना नहीं । अगर कूड़ा है तो तुम ठग हो; अगर अच्छी है तो इस अवस्था में भी मटके का मूल्य है । इसी लिए मैं पूछता हूँ, तुम्हारी समझ में इस मटके का अब क्या मूल्य है ।"

डिम चाचा ने थोड़ी देर विचार करने के बाद कहा—"मेरी समझ में यह आता है कि अगर आपने मुझे केवल सीमेंट से इसे जोड़ने दिया होता जैसा मैं चाहता था, तो पहले तो मैं इस मटके के अन्दर क़ैद न होता, और फिर मटके का मूल्य भी नये के समान ही होता । परन्तु लोहे की पत्ती के जड़ने से यह मटका कुरूप हो गया है । अब इसका पहले जितना मूल्य नहीं रह गया । अब अधिक से अधिक इसका मूल्य एक तिहाई रह गया है ।"

"एक तिहाई, अर्थात् साढ़े दस आने !"

"हाँ, शायद इससे भी कम हो ।"

"ख़ैर !" लोलो ने कहा—"वादा करो कि तुम मुझे इसके साढ़े दस आने दोगे ।"

"क्यों ?" डिम चाचा ने पूछा, जैसे उनकी समझ में बात नहीं आई ।

"तुम्हें निकालने के लिए यह मटका तोड़ना पड़ेगा ।" लोलो ने उत्तर दिया—"मेरे वकील ने मुझे बताया है कि तुम इस मटके की क़ीमत देने के लिए बाध्य हो । तुम्हीं ने इसकी क़ीमत साढ़े दस आने बताई है ।"

"मैं ? दाम दूँगा ?" डिम चाचा हँस पड़े—"इससे अच्छा है, मैं इसी के अन्दर सड़ जाऊँ ।"

कुछ कठिनाई के साथ डिम चाचा ने अपनी जेब में से एक टेढ़ा कुरूप पाइप निकालकर जलाया और वे उसका धुआँ मटके के बाहर फेंकने लगे।

लोलो खड़ा रहा। उसके माथे पर बल पड़ रहे थे। डिम चाचा मटके भीतर ही रहना पसन्द करेंगे, इस सम्भावना पर न तो उसने विचार किया था, न उसके वकील ने। अब क्या किया जाय? वह अपनी ऊँटनी तैयार करने का आदेश देने जा रहा था, परन्तु उसने देखा कि रात हो गई है।

लोलो ने कहा—अच्छा, तुम मटके के अन्दर ही अपना निवास-स्थान बनाना चाहते हो, सारे आदमी गवाह हैं। तुम मटके की क़ीमत चुकाने के डर से मटके के भीतर ही रहना चाहते हो। मैं मटका तोड़ने के लिए तैयार हूँ। ख़ैर, जब तुमने मटके के भीतर रहने की ज़िद पकड़ ली है तब तुम पर मुक़दमा चलाऊँगा। तुमने ग़ैरक़ानूनी तौर से मेरी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया है और अब उसे तुम मुझे अपने व्यवहार में लाने से रोकते हो।"

डिम चाचा ने धुएँ का दूसरा बादल उगलते हुए शान्तिपूर्वक कहा— नहीं मालिक! मैं आपको रोकता नहीं हूँ। क्या आप समझते हैं, मैं अपनी इच्छा से इसके अन्दर हूँ? आप मुझे बाहर निकलने दीजिए, मैं ख़ुशी से निकल आऊँगा। परन्तु आप जो मुझसे इसकी क़ीमत माँगते हैं, मैं स्वप्न में भी नहीं दे सकता।"

लोलो को इतना क्रोध चढ़ा कि वह मटके पर लात मारने जा रहा था, परन्तु उसने अपने को वश में कर लिया। मटके को दोनों हाथों से झकझोरते हुए वह ग़ुर्राया।

"आप ख़ुद देख लीजिए, मेरी सीमेंट कितनी अच्छी है।" मटके के अन्दर से डिम चाचा ने कहा।

"बदमाश!" लोलो ने गरजकर कहा—"ग़लती किसकी है—तेरी या मेरी? तू समझता है, मैं इतने पैसों की हानि सहूँ? जा, इसके अन्दर भूखों मर। मैं भी देखूँगा कि किसकी विजय होती है।"

लोलो क्रोध से तमतमाता हुआ घर के भीतर चला गया। वह यह भी भूल गया कि उसने डिम चाचा को मज़दूरी के ढाई रुपये दे दिये हैं। डिम चाचा ने इन रुपयों के बल उस रात्रि को आनन्द मनाने का निश्चय किया। खेत पर काम करनेवाले सब मज़दूर भी इस विचित्र काण्ड को देखने में इतने व्यस्त हो गये थे कि शाम को अपने-अपने घर जाना भूल गये थे और अब उन्होंने रात वहीं ओसारे में काटने का निश्चय कर लिया था। एक मज़दूर पास की सराय में जाकर सब चीज़ें ख़रीद लाया। चाँदनी रात थी, चारों ओर दिन के समान प्रकाश हो रहा था। आनन्द मनाने के लिए बड़ी सुन्दर रात थी।

कुछ रात बीते एक कोलाहल सुनकर लोलो की नींद खुल गई। उसने छज्जे पर आकर देखा कि ओसारे में जैसे भूतों का दल इकट्ठा है। उसके मज़दूर ताड़ी के नशे में चूर एक-दूसरे के हाथ बाँधे हुए मटके के चारों ओर नाच रहे थे और डिम चाचा मटके के भीतर अपनी भारी आवाज़ से गा रहे थे।

इस बार लोलो अपने को वश में नहीं रख सका। वह उन्मत्त बैल की भाँति दौड़ पड़ा और जब तक मज़दूर उसे रोकें कि उसने मटके पर कसकर एक लात जमा दी। मटका ढलुई ज़मीन पर लुढ़कने लगा। नशे में मस्त मज़दूरों की मंडली मटके को लुढ़कते देखकर पेट पकड़कर हँसने लगी। मटका ज़ैतून के एक पेड़ से टकराकर टूट गया और डिम चाचा धूल झाड़कर, विजयी की भाँति हँसते हुए, उसमें से निकलकर खड़े हो गये।

ज़िन्दगी

जेम्स ज्वाएस (इँग्लैएड)

[(१८८२) आधुनिक अँगरेज़ी कहानी-लेखकों में आपका बहुत ऊँचा स्थान है। आपके 'उलाहसिस' नामक उपन्यास ने कथा-क्षेत्र में क्रान्ति मचा दी थी। उपन्यास-कला की दृष्टि से 'उलाहसिस' साहित्य में सर्वथा नवीन प्रयोग है। आपने कहानियों को भी कला की दृष्टि से पूर्णता पर पहुँचा दिया है। प्रस्तुत कहानी से इस कथन की सर्वथा पुष्टि होती है।]

मालकिन ने आज्ञा दे दी थी कि दुकान पर काम करनेवाली धोबिनों को चाय पिलाने के बाद वह जा सकती है और मेरिया उत्सुक नेत्रों से संध्या की प्रतीक्षा कर रही थी। सारा रसोईघर चमाचम चमक रहा था। रसोईदारिन का तो कहना था कि ताँबे की बटलोइयों में तुम अपना मुँह तक देख सकती हो। आग ख़ूब तेज़ी से जल रही थी। किनारे मेज़ पर नाश्ते का सामान सजा हुआ रक्खा था। मेरिया ने अपने हाथों से उसे सजाकर रक्खा था।

मेरिया यों साधारण स्त्री थी। उसकी नाक लम्बी और ठोड़ी चौड़ी थी। वह ज़रा नाक से बोलती थी और बड़े मधुर स्वर में 'हाँ जी' और 'नाँ जी' कहा करती थी। जब धोबिनें कठौते में कपड़ा धोते-धोते लड़ने लगती थीं तो सदा मेरिया की बुलाहट होती थी और वह उन लोगों में मेल करा देने में सदा सफल होती थी। एक दिन मालकिन ने उससे कह भी दिया था—'मेरिया, तुम शान्ति स्थापित करने में बड़ी चतुर हो!' उस समय वहाँ पर छोटी मालकिन और दो अन्य

औरतें मौजूद थीं। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक मेरिया की प्रशंसा सुनकर सिर हिलाया। भूनी तो सदा यही कहा करती थी कि अगर मेरिया न होती तो मैं तो कभी उस गूँगी के साथ, जिस पर कपड़ों पर इस्तिरी करवाने का सारा भार था, काम न कर सकती। मेरिया को वहाँ सब लोग बहुत अधिक चाहते थे।

सब औरतें छः बजे तक चाय पी लेती हैं, इसलिए मेरिया को सात बजे से पहले ही छुट्टी मिल जायगी। यहाँ से बीस मिनट लगते हैं बाज़ार जाने में और बीस मिनट बाज़ार से उनके घर पहुँचने में; बीस मिनट चीज़ें ख़रीदने में लगेंगे। वह वहाँ आठ बजे से पहले पहुँच जायगी। उसने अपनी जेब से चाँदी की ज़ंजीरवाली एक पर्स निकाली और उस पर लिखे हुए शब्दों को पढ़ने लगी—'स्नेह-भेंट!' वह पर्स उसे बड़ी प्यारी थी। पाँच बरस पहले जब जो अपने भाई आल्फी के साथ छुट्टियाँ मनाने के लिए विदेश गया था तो उसने वह पर्स वहाँ से भेजी थी। पर्स में चार रुपये और कुछ पैसे थे। ट्राम का किराया चुकाने के बाद उसके पास पूरे-पूरे चार रुपये बच रहेंगे। वह संध्या बड़े आनन्द से कटेगी, बच्चों का गाना होगा! वह मना रही थी कि जो शराब पीकर घर न लौटे। जब वह पिये होता है तो और ही प्रकार का हो जाता है।

कितनी ही बार मेरिया के मन में आया कि वह जाकर उन्हीं लोगों के साथ रहे। पर उसके मन में झिचक होती थी, यद्यपि जो की बीबी का उसके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार था। फिर वह इस लांडरी के जीवन से अभ्यस्त हो गई थी। जो बड़ा अच्छा आदमी था। छुटपने में कितनी ही बार बीमार पड़ने पर वह उसकी सेवा कर चुकी थी और आल्फी की भी। जो तब बहुधा कहा करता था—'माँ तो ख़ैर माँ है, पर मेरिया मेरी सच्ची माँ है।'

घर से झगड़ा हो जाने पर दोनों भाइयों ने उसे उस लांडरी में नौकरी दिला दी थी और उसे अपना काम पसंद था। लांडरी में एक छोटे से कमरे के छोटे-छोटे बड़े सुंदर पौधे लगे थे और उसे उन पौधों की

भाल करते हुए बड़ा अच्छा लगता था। जब कभी उससे वहाँ कोई मिलने आता तो वह उसे उन पौधों को अवश्य दिखाती और उन्हें उनमें से दो-एक फूल भी भेंट करती। उसे बस वहाँ की एक चीज़ नहीं पसंद थी, दीवालें; परन्तु मालकिन बड़े सुंदर स्वभाव की थी।

जब रसोईदारिन ने उसे बताया कि सब चीज़ें तैयार हैं तो मेरिया बाहर के कमरे में जाकर बड़ी घंटी बजाने लगी। थोड़ी ही देर में दो-दो तीन-तीन के दल में सब औरतें आने लगीं। उनके हाथ पसीने से तर थे। वे मेज़ के चारों ओर बैठ गईं। मेज़ पर पहले से ही शक्कर और दूध मिली हुई चाय की वही बटलोई रक्खी थी। मेरिया ने सबको बराबर-बराबर नाश्ते का सामान परोसा। नाश्ते के समय बड़ा हँसी-मज़ाक़ होता रहा। लीज़ी ने कहा कि इस साल मेरिया का विवाह अवश्य होगा। वह हर साल यही बात कहा करती थी। मेरिया को हँसकर उत्तर देना पड़ा कि मुझे किसी आदमी की ज़रूरत नहीं है। हँसते समय उसकी आँखों में छिपी निराशा चमक उठी और नाक की नोक ठोड़ी के अग्रभाग को छूने लगी। अन्य औरतें जब चाय के बरतन खनका रही थीं, मूनी ने अपनी चाय की प्याली ऊँची कर मेरिया के स्वास्थ्य की कामना प्रकट की और कहा—मुझे दुःख है कि इसमें शराब नहीं है। मेरिया फिर खिल-खिलाकर हँस पड़ी। उसके नाटे शरीर का एक-एक अंग काँप उठा और नाक की नोक फिर ठोड़ी के अग्रभाग को छूने लगी। वह जानती थी कि मूनी उसकी शुभचिंतक है, सिर्फ़ उसका हँसने-बोलने का ढंग नीची श्रेणी की स्त्रियों जैसा है।

मेरिया को सबसे अधिक प्रसन्नता उस समय हुई, जब सब औरतें चाय पी चुकीं और रसोईदारिन सब चीज़ों को उठा-उठाकर रखने लगी। मेरिया अपने छोटे-से कमरे में गई और यह याद आते ही कि कल गिरजाघर जाना है, उसने घड़ी का एलार्म सात से हटाकर छः पर लगा दिया। इसके बाद बक्स से निकालकर अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने। आईने के सामने कपड़े बदलते हुए उसे याद आया कि जब वह नवयुवती

थी तो किस प्रकार सज-धजकर इतवार के दिन गिरजाघर जाया करती थी। उसने अपने नाटे शरीर को बड़े स्नेह से देखा, जिसे वह कितनी ही बार सजा चुकी थी। उसने देखा कि इतनी उम्र हो जाने पर भी अभी उसका छोटा-सा शरीर बड़ा सुंदर और सुगठित है।

जब मेरिया बाहर आई तो सड़कें बरसते हुए पानी से धुलकर चमक रही थीं और उसे अपनी भूरी बरसाती पर बड़ी प्रसन्नता हुई। ट्राम भरी हुई थी, इसलिए उसे एक किनारे एक स्टूल पर सब लोगों की ओर मुँह करके बैठना पड़ा। उसके छोटे पैर काठ के फ़र्श को मुश्किल से छू पाते थे। उसने अपने मन ही मन सारा कार्यक्रम निश्चित कर लिया और सोचने लगी कि क्या अच्छा होता अगर वह नौकरी न करके स्वतन्त्र व्यवसाय करती होती और उसकी जेब में अपना पैसा होता। उसे आशा थी कि आज की संध्या आनन्द से कटेगी; उसे यह सोचकर दुःख हुआ कि आल्फी और जौ में अब बोल-चाल नहीं है। वे अब हमेशा झगड़ते ही रह , यद्यपि बचपन में दोनों में गहरी मित्रता थी। यही दुनिया है।

बाज़ार आते ही मेरिया ट्राम पर से उतर पड़ी और शीघ्रता से भीड़ के अन्दर अपना रास्ता बनाती हुई आगे बढ़ी। वह बिसकुटों की एक दुकान पर गई, पर वहाँ इतनी अधिक भीड़ थी कि उसे बड़ी देर लगी। उसने एक दर्जन केक्स ख़रीद लीं। वह एक बड़ा सा बक्स लादे हुए दुकान से बाहर निकली। इसके बाद सोचने लगी कि अब क्या ख़रीदूँ। वह कोई बड़ी बढ़िया चीज़ ख़रीदना चाहती थी। उनके यहाँ सेब और अख़रोट तो बहुत होंगे! फिर कौन सी चीज़ ख़रीदी जाय। उसे बस यह समझ पड़ा कि और दूसरी क़िस्म की केक्स ख़रीदी जायँ। वह एक दूसरी दुकान पर गई। वहाँ उसने अपने पसंद की केक्स चुनने में इतनी अधिक देर लगाई कि दुकान की मालकिन ने ज़रा बिगड़कर कहा कि क्या तू अपनी शादी के लिए केक्स चुन रही है। इस पर मेरिया लजा गई और दुकान की मालकिन

मुस्कराने लगी। उसने एक बड़ी केक काग़ज़ में लपेटकर उसे देते हुए कहा—'छः आने!'

मेरिया ने सोचा कि जौ के घर तक उसे ट्राम में खड़ी होकर चलना पड़ेगा; क्योंकि किसी नवयुवक ने उसकी ओर ध्यान तक न दिया, परन्तु एक अधेड़ मनुष्य ने उसके लिए अपनी जगह ख़ाली कर दी। वह एक मोटा-ताज़ा आदमी था, चौड़ा चेहरा था और भूरी मूँछें। मेरिया ने सोचा कि यह कोई कर्नल मालूम पड़ता है। उसने विचारा कि वह नवयुवकों की अपेक्षा कितना अधिक सभ्य है। नवयुवक लोग तो उसकी ओर ताकते भर रहे, पर उसने जगह ख़ाली कर दी। वह अधेड़ मनुष्य उससे बाज़ार और वर्षा के सम्बन्ध में बातचीत करने लगा। मेरिया उसके व्यवहार से बहुत प्रसन्न थी। जब वह नहर के पुल पर उतरने लगी तो उसने उसे धन्यवाद दिया और उस अधेड़ मनुष्य ने भी उसे नमस्कार किया और हँसकर उसकी ओर देखा। मेरिया सिर झुकाकर गलियाँ पार करते समय सोचती रही कि किसी सज्जन मनुष्य का परिचय प्राप्त करना भी कितना सुखद होता है।

मेरिया ने जैसे ही जौ के घर में पैर रक्खा, सब लोग एक साथ चिल्ला उठे—'मेरिया आ गई!' जौ थोड़ी ही देर पहले काम पर से लौटा था। सब बच्चे अपनी अच्छी से अच्छी पोशाक पहने हुए थे। पड़ोस की दो बड़ी लड़कियाँ भी आई हुई थीं। मेरिया ने सबसे बड़े लड़के को केक्स का बंडल दे दिया। जौ की बीबी ने उसकी स्नेहशीलता की प्रशंसा की और लड़कों से कहा कि मेरिया को धन्यवाद दो।

मेरिया ने बच्चों की पीठ थपथपाकर कहा कि इसमें तुम्हारे पापा और मामा के लिए भी एक बड़ी सुन्दर चीज़ है। उसने बंडल खोलकर देखा, अपनी बरसाती की जेबें देखीं; पर वह बड़ी केक न मिली। तब उसने बच्चों से पूछा कि उन्होंने ग़लती से वह केक भी तो नहीं खा डाली, परन्तु बच्चों को उसका यह चोरी का दोष लगाना अच्छा नहीं लगा और वे उसकी दी हुई अन्य चीज़ों को खाने में भी हिचकने लगे। उस केक

के खो जाने के सम्बन्ध में सबों ने अपना-अपना मत बतलाया। जौ की बीबी ने कहा कि मेरिया उसे ट्राम में भूल आई है। मेरिया को याद आया कि उस अधेड़ मनुष्य को देखकर वह कितनी अधिक लजा गई थी, साथ ही उसे झुँझलाहट भी हुई थी। यह सोचकर कि उसके छः आने पैसे व्यर्थ गये और जौ तथा जौ की बीबी को भी कोई उपहार भेंट न कर सकी, मेरिया को बड़ा दुःख हुआ।

जौ ने कहा कि दुःख की कोई बात नहीं है। उसने उसे अँगीठी के निकट सोफे़ पर बिठाया और मित्रता-पूर्ण बातचीत की। उसने अपने दफ़्र की सारी बातें बताईं और प्रसन्न होकर यह भी बताया कि आज उसने अपने मैनेजर को एक बड़ा चुभता हुआ जवाब दिया। मेरिया की समझ में नहीं आया कि जौ को इस बात पर इतनी अधिक प्रसन्नता क्यों है। उसने कहा कि मैनेजर शायद तुमसे अच्छा बरताव नहीं करता। जौ ने कहा कि वह बुरा आदमी नहीं है; पर जब तक उसे उसकाया न जाय। जौ की बीबो ने पियानो बजाया। बच्चों ने अपना नाच दिखाया और गाना सुनाया। पड़ोस की दोनों लड़कियों ने अख़रोट तश्तरी में रखकर सबको दिये। परन्तु अख़रोट फोड़ने की क़ैंची किसी को नहीं मिली। जौ इस पर बड़ा दुखी हुआ और कहने लगा कि अब अख़रोट कैसे खाये जायँगे। मेरिया ने कहा कि मुझे अख़रोट पसंद नहीं हैं, इसलिए परेशान होने की ज़रूरत नहीं। जौ ने उससे पूछा कि क्या वह एक गिलास ठर्रा पियेगी, पर जौ की बीबी ने कहा कि घर में बढ़िया शराब भी है; अगर वह पसंद करे तो मँगाई जाय। मेरिया ने कहा—मैं इस वक़्त कुछ पीना नहीं चाहती, पर जौ ने ज़िद की।

मेरिया ने अंत में प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वे अँगीठी तापते हुए पुराने ज़माने की बातें करने लगे। मेरिया ने सोचा कि आल्फी की बात उठाने का अच्छा अवसर है। जौ ने कहा कि ईश्वर, मुझे मौत दे दे पर मैं इस ज़िन्दगी में उसका मुँह अब न देखूँगा। मेरिया ने दुःख प्रकट किया कि उसने व्यर्थ इस प्रसंग की चर्चा की। जौ की

बीबी ने कहा कि यह तुम्हारे लिए बड़े शर्म की बात है कि तुम अपने ही भाई के संबंध में ऐसा कहते हो, पर जौ ने कहा कि आल्फी मेरा भाई नहीं है। इस बात पर मियाँ-बीवी में कहा-सुनी होने तक की नौबत आ गई। जौ ने कहा कि मैं क्रोध करके इस संध्या का सारा आनन्द मिट्टी नहीं करूँगा और उसने स्त्री से थोड़ी शराब माँगी। पड़ोस की लड़कियों ने एक खेल की आयोजना की और सारा वातावरण फिर हँसी से मुखरित हो उठा। मेरिया बच्चों को तथा जौ और उसकी बीबी को प्रसन्न देखकर बड़ी हर्षित हुई। पड़ोस की लड़कियों ने मेज़ पर कई प्याले रख दिये और फिर बच्चों की आँखों में पट्टी बाँधकर उन्हें मेज़ के निकट खड़ा कर दिया। एक बालक के हाथ में प्रार्थना की पुस्तक दे दी और बाक़ी तीन बालकों के हाथ में पानी से भरे हुए प्याले। एक लड़की ने श्रीमती जौ की अँगूठी माँग ली। जौ की बीबी ने उस लजाती हुई लड़की की ओर देखकर कहा—'मैं समझ गई, तुम लोग क्या करने जा रही हो!' लड़कियों ने ज़िद करके मेरिया की आँखों में पट्टी बाँधी और फिर हाथ पकड़कर यह देखने के लिए कि उसके भाग्य में क्या है, उसे मेज़ के निकट ले गईं। आँखों पर पट्टी बँधाते समय मेरिया इतने ज़ोर से हँस पड़ी कि उसकी नाक की नोक ठोड़ी के अग्रभाग को छूने लगी।

लड़कियाँ हँसीं और मज़ाक़ के बीच मेरिया को मेज़ के निकट ले गईं और उससे हवा में अपना हाथ नचाने के लिए कहा। इधर-उधर टटोलते हुए अंत में मेरिया का हाथ एक प्याले में जा पड़ा। उसे लगा कि उसकी उँगलियों से कोई गीली चीज़ लगी है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस पर किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा और न किसी ने उसकी आँख की पट्टी ही खोली। कुछ क्षण तक कमरे में निःस्तब्धता रही, इसके बाद फुसफुसाहट होने लगी। किसी ने बाग़ के संबंध में कोई बात कही और अंत में श्रीमती जौ ने पड़ोस की लड़की को डाँटा और कहा कि वह उसे फ़ौरन फेंक दे। यह भी कोई खेल है! मेरिया

समझ गई कि उसका हाथ ग़लत प्याले पर पड़ा। उससे दूसरी बार यही क़वायद कराई गई और इस बार उसके हाथ में प्रार्थना की पुस्तक लगी।

इसके बाद जौ की बीवी ने प्यानो पर बच्चों का एक गाना गाया और जौ ने मेरिया को एक गिलास शराब पीने पर मजबूर किया। शीघ्र ही फिर हँसी-मज़ाक़ का बाज़ार गर्म हो गया। श्रीमती जौ ने कहा कि तुम इसी साल मठ में उपासिका हो जाओगी; क्योंकि तुम्हारा हाथ प्रार्थना की पुस्तक पर पड़ा था। मेरिया ने देखा कि जौ आज उससे जिस प्रकार हँस-बोल रहा है, उस प्रकार का अच्छा बर्ताव उसका और कभी नहीं रहा। वह उसे बीते दिनों की कितनी ही कहानियाँ सुना रहा था।

मेरिया ने कहा कि आज की सुंदर रात के लिए मैं तुम सब लोगों की बहुत कृतज्ञ हूँ।

बच्चे थक गये और उन्हें नींद सताने लगी। जौ ने मेरिया से कहा कि क्या तुम जाने से पहले अपना एक गीत न सुनाओगी, कोई पुराना गीत। श्रीमती जौ ने भी कहा 'कृपा कर एक गीत सुना दो।' मेरिया को उठकर पियानो के पास खड़े होना पड़ा। श्रीमती जौ ने बच्चों को चुप होकर मेरिया का गीत सुनने की आज्ञा दी। उसने स्वयं पहले एक कड़ी गाई, फिर कहा, 'अब मेरिया तुम।' मेरिया बहुत ही अधिक लजाती हुई अपनी महीन काँपती हुई आवाज़ में गाने लगी। उसने एक अपना पुराना गीत गाया : **मैंने स्वप्न देखा कि मैं महलों में रहती हूँ।** गीत की दूसरी कड़ी उसने दुहराकर गाई।

'मैंने स्वप्न देखा कि मैं संगमरमर के महलों में रहती हूँ। हर घड़ी दास-दासियाँ मुझे घेरे रहती हैं। मैं ही उस महल की चहारदीवारी के अंदर रहनेवालों की जीवन हूँ।

'मेरे पास इतना अधिक धन है कि उसका अनुमान भी नहीं किया जा सकता। मेरा वंश बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध है। और स्वप्न में मैंने यह भी देखा कि तुम मुझे प्यार करते हो, जिससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।'

लेकिन किसी ने भी उसकी ग़लती की ओर संकेत करने का प्रयत्न नहीं किया। जौ उसके गीत से बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा कि अब वे पुराने दिन कभी नहीं लौटेंगे! उस ग़रीब बुड्ढे के बारे में और लोगों का चाहे जो मत हो पर मेरी समझ में वह बहुत ही सुंदर गाता था। उसकी आँखों में इतना अधिक पानी भर आया कि वह यह तक नहीं समझ सका कि वह किसकी ओर देख रहा है और अंत में उसे अपनी बीबी से पूछना पड़ा कि बोतल का काग खोलने का पेंच कहाँ रक्खा है।

कष्टमय जीवन

(कैथराइन मैन्सफ़ील्ड, इँग्लैण्ड)

[(१८८८-१९२३) आपका जन्म न्यूज़ीलैंड में हुआ था, शिक्षा लंदन के क्वीन्स कालेज में पाई। वहीं आपका विवाह सुप्रसिद्ध समालोचक जान मिडिलटन मरी से हुआ। आप आधुनिक अँगरेज़ी साहित्य की सर्व श्रेष्ठ कहानी-लेखिका मानी जाती हैं। जान गाल्सवर्दी के अनुसार आपमें वस्तुओं के अंतराल में पहुँचकर उनका चित्रण करने की अद्भुत क्षमता है। आपकी कहानियों में प्लाट की अपेक्षा वातावरण की प्रधानता रहती है।]

सुबह दरवाज़ा खोलते ही कवि ने बुढ़िया माँ से, जो उसके यहाँ प्रति मंगलवार को झाड़ू लगाने आया करती थी, पहला प्रश्न यही किया—'तुम्हारा नाती अब कैसा है ?' बुढ़िया माँ दरवाज़ा पारकर छोटे से अँधेरे बरोठे में खड़ी थी। उसने पहले हाथ बढ़ाकर दरवाज़ा बंद किया, फिर शांति-पूर्वक उत्तर दिया—'हम लोग कल उसे क़ब्रिस्तान में सुला आये।'

कवि थोड़ी देर के लिए स्तंभित रह गया। उसके मुख से केवल इतने ही शब्द निकले—'यह सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ।' वह एक पुराना लंबा कोट पहने था, जिसका रंग धुल चुका था और हाथ में मिंजा हुआ समाचारपत्र था। वह बड़े असमंजस में था। बुढ़िया माँ से कुछ सांत्वना के शब्द कहे बग़ैर अपने गर्म कमरे में वापिस लौट जाने के लिए उसके पैर न उठ रहे थे। अंत में उसने बुढ़िया माँ के आर्थिक कष्टों का ध्यान कर कहा—'मुझे उम्मीद है, अंतिम संस्कार तो ठीक तौर से हो गया होगा।'

'क्या कहा आपने ?' बुढ़िया ने अवरुद्ध कंठ से पूछा।

बुढ़िया माँ इस नये दुःख की मार से पहले से भी अधिक बूढ़ी मालूम पड़ने लगी थी। कवि का हृदय आर्द्र हो आया था। 'मैं पूछता हूँ, अंतिम समय तो तुम्हें कोई ख़ास तकलीफ़ नहीं उठानी पड़ी?' कवि ने कहा। बुढ़िया माँ ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने सिर झुका लिया। वह हाथ में बैग लिये, जिसमें झाड़ू, झाड़न इत्यादि सफ़ाई की चीज़ें और बदलने के कपड़े थे, पैर घसीटती हुई रसोईघर की ओर चल पड़ी। कवि ने आँख उठाकर अँधेरे में बुढ़िया की जाती हुई मूर्त्ति देखी। इसके बाद एक साँस भर वह अपने कमरे में चला गया।

बुढ़िया ने रसोईघर में पहुँचकर अपना बैग खोला और सब चीज़ें ज़मीन पर बिखरा दीं। इसके बाद एक चोग़ा पहना और जूते बदलने के लिए ज़मीन पर बैठ गई। जूते बदलते समय कितनी ही बातें याद कर उसे मार्मिक पीड़ा होने लगी, पर ऐसी पीड़ा तो वह कई सालों से भोग रही थी। वह पीड़ा सहने की इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि उसकी आकृति अब भावशून्य हो गई थी। दुःख के अवसरों पर अब केवल उसके ओठ एक ओर खिंच जाते थे। जूते बदलकर बूढ़ी माँ ने गहरी साँस ली और दीवार से लगकर अपने घुटने खुजलाने लगी ·····।

'नानी! नानी!' उसका नन्हा-सा नाती पैरों में बटनदार जूते पहने हुए उसकी गोद में आकर बैठ गया। वह सड़क पर खेलकर आ रहा था।

'देखो तो तुमने अपने कपड़ों में कितनी धूल लगा ली है—पाजी कहीं के!'

लेकिन उसने अपने नन्हे हाथ नानी की गर्दन में डाल दिये और वह अपने गाल नानी के गालों से रगड़ने लगा।

'नानी, एक पैसा दो!' उसने झूलते हुए कहा।

'भाग जा बदमाश, नानी के पास पैसा कहाँ से आया!'

'नहीं, तुम्हारे पास है।'

'नहीं लाल, मेरे पास नहीं है।'

'नहीं, तुम्हारे पास है, मुझे एक दे दो।'

नानी की झुर्री पड़ी उँगलियों ने कपड़े के अन्दर पुराने चमड़े की बेग को टटोलना आरंभ कर दिया था।

'अच्छा जब तुम बड़े होगे तो अपनी नानी को भी पैसा दिया करोगे?'

वह एक निर्मल हँसी हँसने लगा और नानी के और कसकर चिपट गया। नानी ने अनुभव किया कि उसकी कोमल पलकें उसके गालों से रगड़ खा रही हैं। 'मेरे पास अभी पैसा कहाँ है,' उसने बुदबुदाकर कहा .....।

बुढ़िया माँ जैसे किसी तंद्रा से चौंक उठी हो। उसने स्टोव पर से लोहे की बटलोई उतारी और उसे ले जाकर पानी में डाल दिया। पानी में गरम बटलोई की छनछनाहट के भीतर जैसे उसकी वेदना डूब गई। उसने तसले में पानी भरा और उसे बर्तन धोने के लिए ले चली।

पिछले सप्ताह वह नहीं आई थी, इसलिए कवि ने अपने हाथों सारा काम किया था। सारा रसोईघर अस्त-व्यस्त पड़ा था, चीज़ें इधर-उधर लुढ़क रही थीं। कवि को धुले हुए प्यालों की कमी पड़ गई थी, इसलिए उसने हाथ पोंछने के सफ़ेद तौलियों से उन्हें पोंछ डाला था। एक बर्त्तन में छानी हुई चाय की पत्तियों का ढेर था। फ़र्श पर पावरोटियों के जले हुए टुकड़े और सिगरेट के ख़ाली बक्स बिखरे थे। कवि बहुधा अपने मित्रों से कहा करता था—'मुझे आश्चर्य होता है कि लोगों को घर सँभालने में इतनी कठिनाई क्यों होती है।'

'हाँ, तुम्हें एक बुढ़िया नौकरानी मिल गई है न, जो हर सप्ताह तुम्हारे घर की सफ़ाई कर देती है, नहीं तो तुम्हारा घर कूड़ाख़ाना होता!' उसके मित्र कहा करते।

लेकिन बुढ़िया माँ ने कवि से कभी कोई शिकायत नहीं की। बल्कि उसे उस पर दया आती थी कि वह इस दुनिया में बिलकुल अकेला है,

उसका दुख-सुख का कोई साथी नहीं। खिड़कियों से बाहर नज़र दौड़ाने पर भी अनन्त तक फैला, शोक में डूबा हुआ, नीला आसमान ही दिखाई पड़ता था। जब कभी बादल होते तो आसमान और अधिक शोकमग्न दिखाई पड़ता था, बादलों के टुकड़े चाय की पत्तियों के धब्बों की भाँति मालूम पड़ते थे।

बर्तन धोने के लिए पानी गरम होने में थोड़ी देर थी, इसलिए बुढ़िया माँ इस बीच झाड़ू लेकर फ़र्श धोने लगी। 'मैंने सदैव जीवन में एक-न-एक दुख ही भोगा', झाड़ू चलाते हुए उसके मन में आया —'मेरा जीवन बड़ा कष्टमय रहा।'

बुढ़िया माँ की पड़ोसिनें भी यही कहा करती थीं। कितनी ही बार जब वह हाथ में बैग लटकाये घर लौटी है और थककर दीवाल का सहारा लेकर खड़ी हो गई है, उसकी पड़ोसिनों ने आपस में एक-दूसरे से कहा है, 'बुढ़िया माँ का जीवन सदा कष्ट में ही बीता!' और यह इतना बड़ा सत्य था कि उसे कभी इस पर गर्व भी न हुआ था। यह बात उसके लिए वैसी ही थी, जैसे सत्ताईस नंबर की अँधेरी सीलन-वाली कोठरी में उसका रहना! कष्टमय जीवन!.........

वह सोलह वर्ष की थी, जब वह अपने गाँव स्ट्रैटफ़ोर्ड को छोड़कर रसोईदारिन के काम पर लंदन आई थी। स्ट्रैटफ़ोर्ड शेक्सपियर की जन्मभूमि है और उसका भी जन्म वहीं हुआ था। लंदन में अक्सर लोग उससे शेक्सपियर के बारे में पूछा करते थे। पर आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि उसने शेक्सपियर का नाम पहली बार लंदन के किसी थ्येटर की दीवाल पर ही देखा था!

उसे अपने गाँव की केवल इतनी ही याद है कि शाम को जब सारा परिवार आग के चारों ओर इकट्ठा होता था तो खिड़की से तारे भी उनकी ओर झाँकते रहते थे और माँ रसोईघर से उसे बकती-झकती रहती थी। एक धुँधली याद और है। दरवाज़े के सामने

एक झुरमुट था, जिसमें से बड़ी सुंदर सुगंध आती थी। लेकिन यह याद बड़ी धुँधली है। जब वह बीमार होकर अस्पताल में पड़ी थी, तभी उसकी आँखों के सामने एक-दो बार यह चित्र आया था।

अस्पताल उसे बड़ी भयानक जगह लगी। उसे बाहर जाने तक की इजाज़त नहीं थी। प्रातःकाल और सायंकाल केवल प्रार्थना के समय ही वह ऊपर जाने पाती थी। कमरा तो बड़ा अच्छा था, पर नौकरानी बड़ी दुष्ट थी। वह उसके घर के पत्रों को भी कूड़े की डलिया में डाल देती थी; क्योंकि उन पत्रों को पढ़कर वह स्वप्नलोक में विचरने लगती थी।

रसोईदारिन के काम के बाद वह एक डाक्टर के यहाँ नौकरानी हो गई। वहाँ उसे रात-दिन दौड़ना पड़ता। वहीं उसने अपने पति से विवाह किया। वह बावरची था।

'तो आपका विवाह बावरची से हुआ था?' कवि बहुधा कहा करता; क्योंकि कवि भी अपनी मोटी-मोटी पुस्तकों से दृष्टि हटाकर दुनिया की ओर देख लिया करता था, जहाँ जीवन का प्रवाह है। 'बावरची की बीवी होने में तो बड़ा मज़ा है!'

बुढ़िया माँ संदिग्ध भाव से उसकी ओर देखती।

'बड़ा स्वच्छ व्यवसाय है,' कवि कहता।

बुढ़िया माँ के मुख पर फिर भी संदेह का भाव बना रहता।

'क्या तुम ग्राहकों को गरम-गरम चपातियाँ नहीं परोसती थीं?'

'नहीं, बाबूजी', बुढ़िया माँ कहती—'मैं दुकान पर अधिक देर तक रह कहाँ पाती थी। मेरे तेरह बच्चे हुए जिनमें से सात को इन्हीं हाथों से धरती की गोद में सुला चुकी हूँ। मेरा घर क्या था, एक प्रकार का अस्पताल था!'

'अच्छा!' कवि चकित-भाव से कहता और फिर अपनी क़लम उठा लेता।

सच ही, बुढ़िया माँ के सात बच्चे मर चुके थे। उसके छहों बच्चे बिलकुल छोटे-ही छोटे थे, जब उसके पति को थाइसिस हो गई। डाक्टरों ने उससे कहा कि इसके फेफड़ों में आटे की धूल भर गई है।........ उसका पति कमीज़ सिर पर उठाये बिछौने पर बैठा था, जब डाक्टर ने उसकी पीठ पर उँगली से एक घेरा खींचा।

'अगर मैं यहाँ पर इसकी पीठ का आपरेशन करूँ' डाक्टर ने कहा—'तो तुम देखोगी कि इसके दोनों फेफड़े आटे की बोरी बन गये हैं!' लेकिन बुढ़िया अभी तक पक्के तौर से नहीं जान सकी है कि उसने सचमुच या कल्पना में ही कभी अपने मृत पति के मुँह से आटे की गर्द का एक कण तक निकलते देखा भी......

अपना और अपने छः बच्चों का पेट पालने के लिए उसे भयानक जीवन-संघर्ष का सामना करना पड़ा। बच्चे जब स्कूल जाने की उम्र के हुए, उसकी एक ननद आकर उसके साथ रहने लगी। उसे रहते दो महीना भी न हुआ था कि एक दिन उसने ऊँचे ज़ीने से फिसलकर अपनी पीठ की हड्डी तोड़ ली। पाँच साल तक बुढ़िया माँ को उस दुधमुँही लड़की की भी देखभाल करनी पड़ी, जो सदा चिल्लाया ही करती थी। सबसे बड़ा लड़का आवारा निकल गया और अपनी बहन को ही लेकर भाग गया; दो और लड़के भी विदेश चले गये, जिम फ़ौज में भर्ती होकर हिंदुस्तान चला गया, सबसे छोटी लड़की एथिल ने एक दरबान से शादी कर ली, पर उसका पति, जिस साल लेनी पैदा हुआ, उसी साल मर गया। और अब लेनी—उसका नाती भी...........

गंदे प्याले और तश्तरियों की ढेरी साफ़ करके सुखा दी गई थी। मेज़ भी खुरचकर साफ़ कर दी गई थी। तसले के गंदे पानी में एक मैला कपड़ा तैर रहा था........

वह कभी हृष्ट-पुष्ट नहीं रहा—जन्म से ही! वह बड़ा सुंदर था, मुँह बिलकुल लड़कियों जैसा था। दूर से कोई कह नहीं सकता था कि लड़का है। रेशमी घुँघराले बाल थे, नीली आँखें। उसने और उसकी माँ

ने उसे पालने में बहुत अधिक दुःख उठाया। अख़बारों में विज्ञापित दवाएँ खिलाती थीं। प्रति रविवार को एथिल किताब में से नहलाने की विधि पढ़ती जाती थी और बुढ़िया उसे उसी प्रकार नहलाती थी।

लेकिन कोई लाभ न होता था। लेनी के शरीर पर मांस चढ़ता ही नहीं था। जब वह उसे क़ब्रिस्तान ले गई थी तब भी उसमें बहुत अधिक परिवर्त्तन नहीं हुआ था।

वह शुरू से ही नानी का बेटा था..........

'बोलो तो तुम किसके लड़के हो?' बुढ़िया माँ स्टोव के पास से उठकर खिड़की के निकट आती हुई पूछती। और उसकी छाती में दुबका हुआ एक नन्हा सा मुख अपनी कोमल-वाणी में हृदय के बिलकुल निकट हँसता हुआ कहता--'मैं नानी का बेटा हूँ!'

उसी समय किसी के पैरों की आवाज़ हुई और बुढ़िया माँ ने अपने सामने कवि को देखा। वह हवा खाने के कपड़े पहने था।

'मैं बाहर जा रहा हूँ।'

'अच्छा, बाबूजी।'

'मेरे क़लमदान पर पैसे रक्खे हैं, ले लेना।'

'तुम्हारी बड़ी उम्र हो, बाबूजी।'

'हाँ, देखो बुढ़िया माँ', कवि ने शीघ्रता से कहा—'पिछली बार तुमने काफ़ी तो नहीं फेंक दी थी?'

'नहीं तो, बाबू जी।'

'बड़ा ताज्जुब है। मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ कि डिब्बे में चम्मच भर काफ़ी थी।' वह चुप हो गया। फिर कोमल पर दृढ़ स्वर में उसने कहा—'अच्छा देखो, जब कोई चीज़ फेंका करो तो मुझे बता दिया करो; ठीक है न।" और वह तेज़ी से बाहर चला गया। वह बड़ा प्रसन्न था कि उसने बूढ़ी नौकरानी पर यह अच्छी तरह प्रकट कर दिया है कि ऊपर से देखने में वह लापरवाह है, पर वास्तव में वह अपने घर की चीज़ों की उतनी ही चौकसी रखता है, जितनी कोई गृहिणी!

ज़ोरों से दरवाज़ा बंद होने का शब्द हुआ। बुढ़िया माँ ब्रुश और झाड़न लेकर सोने का कमरा साफ़ करने के लिए चली। जब वह बिस्तर ठीक करने लगी, लेनी की मधुर स्मृतियाँ फिर बटुरने लगीं। उसे क्यों इतना दुःख सहना पड़ा ? वह आज तक नहीं समझ सकी है। क्यों एक सुकुमार बालक को दो साँसों के लिए इतने दिन तक युद्ध करना पड़ा ? इस तरह बालक को पीड़ा पहुँचाने में किसी को क्या मिलता है ?

······लेनी की छोटी सी छाती के अंदर मालूम पड़ता था, जैसे कोई चीज़ उबल रही थी। जैसे उसकी छाती में कोई पत्थर का टुकड़ा अटक गया था और वह उससे छुटकारा न पा रहा था। जब वह खाँसता था, उसके माथे पर पसीने की बूँदें इकट्ठी हो जाती थीं, उसकी आँखें बाहर निकल पड़ती थीं, दोनों हाथ थर-थर काँपने लगते थे और उसकी छाती के अन्दर वह ढेला इस प्रकार उछलता था, जैसे बटलोई में आलू उबलता है। और इससे भी अधिक भयानक बात यह थी कि जब वह खाँसता होता नहीं था, तब तकिये के सहारे चुपचाप लेट जाता था, एक शब्द भी न बोलता था, न उत्तर ही देता था। जब कोई बोलता भी था तो उसकी आँखों में नाराज़ी भर आती थी।

'क्या करूँ बेटा, तुम्हारी नानी बेचारी के बस की बात तो नहीं है।' बुढ़िया माँ उसके घुँघराले बालों को कानों के पास समेटते हुए कहती। वह अपनी नानी से बेहद नाराज़ मालूम पड़ता था। वह सिर झुकाकर बगल से आँखें तरेरकर नानी की ओर देखता, जैसे उसे उसकी बात पर विश्वास नहीं आता था।

लेकिन अन्त में·····बुढ़िया माँ ने बिस्तर पर मसहरी गिरा दी। बस, अब वह उसके बारे में कुछ भी नहीं सोचेगी। बहुत हो चुका, वह अपनी ज़िन्दगी में बहुत सह चुकी है। उसने अब तक सब कुछ सहा है, अपने को दबाये रक्खा है, कभी किसी ने उसे सिसकियाँ भरते नहीं देखा है। किसी ने भी नहीं ! उसके बच्चों तक ने कभी उसे रोते हुए नहीं देखा है। उसने सदा गर्व से अपना सिर ऊँचा रक्खा है। लेकिन

अब ! लेनी भी चला गया—अब उसका क्या-बचा ? कुछ भी नहीं ! वही उसके जीवन का सर्वस्व था, वह भी अब छीन लिया गया । मेरे ही सिर पर इतना दुःख क्यों पड़ा ? उसे आश्चर्य होता था । 'मैंने क्या अपराध किया है ?' बुढ़िया ने कातर होकर पूछा—'मैंने क्या अपराध किया है ?'

बुढ़िया माँ के हाथों से ब्रुश गिर पड़ा । वह रसोईंघर में खड़ी थी । उसे दारुण व्यथा हो रही थी । उसने शीघ्रता से अपना हैट पहना और किसी स्वप्नाविष्ट व्यक्ति की भाँति मकान से बाहर चल पड़ी । उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रही है । उसकी दशा उस व्यक्ति की भाँति थी जो इतना अधिक भयग्रस्त हो जाता है कि पैर उठाकर भागता ही जाता है और समझता है कि बस इस प्रकार **भागने से ही वह बच जायगा**……।

भयानक सरदी थी । बर्फ़ जैसी ठंढी हवा शरीर में सुई की तरह चुभती थी । लोग बेतहाशा भाग रहे थे । किसी को किसी की ओर देखने की फ़ुर्सत न थी । अगर वह इतने सालों तक दुःख सहन करने के बाद अब सड़क पर ही रो पड़ती तो भी शायद ही कोई उसकी ओर ध्यान देता ।

लेकिन रो पड़ने के खयाल के साथ ही जैसे लेनी उसकी गोद में आकर बैठ गया । अरे नानी, तुम्हारी सूरत कैसी है ! क्या तुम रोना चाहती हो ? अगर उसे अब रोना ही है तो ख़ूब देर तक रो ले, अपने सारे दुर्दिनों पर आँसू बहा ले । डाक्टर के यहाँ की कष्टदायक नौकरी, सात बच्चों की मृत्यु, पति की मृत्यु, लड़कों का उसे अकेली छोड़कर चले जाना, लेनी का उसे छोड़कर चले जाना, वह किस-किस बात पर आँसू बहायेगी ? इतनी सी बातों पर आँसू बहाने के लिए क़ाफी समय भी तो चाहिए । अगर अब वह अधिक नहीं सहन कर सकती, अब जी भर-कर रो लेना ही चाहती है……तो कहाँ बैठकर अपने आँसू बहाये ?

"बुढ़िया माँ का जीवन बड़ा कष्टमय रहा !" हाँ, अवश्य ही कष्टमय रहा। उसकी ठोड़ी काँपने लगी; वह कहाँ बैठकर अपना जी हलका करे ? कहाँ ? वह घर नहीं जा सकती; बेवा लड़की है ? वह उसे रोते देख स्वयं रो-रोकर धरती-आसमान एक कर देगी। वह सड़क पर किसी बेंच पर बैठकर नहीं रो सकती लोग आ आकर उससे तरह-तरह के प्रश्न पूछेंगे। क्या वह कवि के घर चली जाय ? परन्तु किसी दूसरे के घर में विलाप करने का उसे क्या अधिकार ? अगर वह किसी के दरवाज़े पर बैठकर विलाप करेगी तो पुलिसमैन तुरन्त उसे उठा देगा।

आह, क्या ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ वह सबकी आँख बचा-कर जितनी देर चाहे बैठी रह सके ? वह न किसी दूसरे के कार्य में विघ्न डाले और न कोई दूसरा उसके कार्य में विघ्न डाले ! क्या दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ वह जी भरकर रो सके ?

बुढ़िया खड़ी हुई चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाती रही। बर्फ़ीली हवा उसके दुशाले में भर-भरकर दुशाले को गुब्बारे की तरह झुलाने लगी। पानी भी पड़ने लगा। दुनिया में ऐसा कोई स्थान नहीं था, जहाँ वह जी भरकर रो तक सके !

———

आदम

(जेकब वासरमैन, जर्मनी)

[(१८७३-१९३४) आधुनिक जर्मन लेखकों में आपका ऊँचा स्थान है। आपका प्रथम उपन्यास १८९४ में प्रकाशित हुआ, जिससे तत्काल आपकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई। आपके माता-पिता यहूदी थे, इसलिए १९३३ में जब नाजियों के हाथ में राजशक्ति आई, उन्होंने आपको प्रशियन एकाडेमी की सदस्यता से हटा दिया। आपकी पुस्तकें जर्मनी में वर्जित कर दी गईं। आपकी अंतिम पुस्तक 'जर्मन यहूदी के रूप में मेरी जीवन-कथा' बहुत प्रसिद्ध हुई थी।]

प्रधान न्यायाधीश डीस्टरवेग, जिनकी हाल में ही मृत्यु हो गई, अपराधियों के मनोविज्ञान के पंडित थे। यह कहानी उनके ही काग़ज़ों में पाई गई थी।

अक्टोबर की एक संध्या को गजेनहाजेन के पुलिस के थाने पर आदम उरबज नामक एक किसान ने जाकर कहा कि मैंने अपने अठारह साल के पुत्र साइमन की हत्या कर डाली है। लड़का घर में अपने कमरे में मरा हुआ पड़ा है। आदम अपने साथ वह छुरा भी ले आया था, जिससे उसने हत्या की थी। छुरे पर ख़ून के दाग़ थे।

आदम ने बहुत ही शान्त स्वर में अपना सारा अपराध स्वीकार किया था और बहुत ही संक्षेप में बयान दिया था। पुलिस ने उसका बयान लिख लिया। इसके बाद उसने पुलिस के अन्य प्रश्नों के उत्तर में एक शब्द भी कहने से इन्कार कर दिया। पुलिस ने रात को ही जाकर घटना-स्थल की जाँच की और आदम की सारी बातें सच निकलीं। आदम की बीबी घर में शोक की मूर्त्ति बनी बैठी थी। खेत पर काम करने-

वाली अन्य स्त्रियाँ, जिनके चेहरों पर आतंक छाया था, उसे चारों ओर से घेरे थीं।

आदम उरबज जेल में बंद कर दिया गया। उस समय मैं नया ही नया अपने क्षेत्र में आया था और कुछ सप्ताह पहले ही इस डिस्ट्रिक्ट में भेजा गया था। मैंने इस केस का स्वागत किया।

आरंभ में यह केस बिलकुल स्पष्ट मालूम पड़ा : एक किसान ने, जिसके मस्तिष्क में अपनी जाति की अज्ञता और क्रूरता बसी थी, अपने आवारा लड़के से, जो उसे सदा दुःख ही दिया करता था, छुटकारा पा लिया। इस प्रकार उसने भविष्य के दुःखों की संभावना भी मिटा दी।

सभी गवाहों ने एक स्वर में कहा कि साइमन बिलकुल निठल्ला था, आवारा था, काम से जी चुराता था, मेले-तमाशों का बड़ा शौक़ीन था और हर घड़ी कलवार की दुकान पर दिखाई पड़ता था। इस उच्छृंखल जीवन के फलस्वरूप उसे सदा रुपयों की आवश्यकता बनी रहती थी और जब उसे अपनी आतंक-ग्रसित माँ से रुपया नहीं मिलता था—इस कारण कि या तो वह देना नहीं चाहती थी या उसके पास रहता नहीं था—तो वह अन्य उपायों से रुपया प्राप्त कर लेता था। उदाहरण के लिए एक बार, अगस्त के महीने में, उसने एक अनाज के व्यापारी से छः सौ रुपये झटक लिये। उस व्यापारी ने उसके बाप से जौ ख़रीदा था और साइमन ने वह रक़म उससे ले ली, परंतु अपने बाप को नहीं दी। एक बार एक वेश्या ने उसे अपने जाल में फँसा लिया और यह कहने लगी कि उसके उससे बच्चा होनेवाला है। एक दिन साइमन उसे एक एकांत जगह में ले गया और उसका गला घोंटने लगा। राहचलते आदमियों ने स्त्री की चीख़ सुनकर उसकी रक्षा की। यह मामला अभी चल रहा था, जब आदम उरबज ने स्वयं उसे उसके अपराधों का दंड दे दिया।

गवाही में साइमन की और बहुत सी चारित्रिक बुराइयाँ प्रकाश में आईं। बचपन में ही वह बड़ा दुष्ट और शैतान था। उसके द्वारा

कभी कोई अच्छा काम हुआ ही नहीं। एक बार घर की मज़दूरनी नगर से छः धुली हुई कमीज़ें खरीद लाई। उसने बड़े गर्व से कमीज़ें अपनी मालकिन को दिखाईं। इसी समय गिरजाघर का घंटा बोलने लगा और वह कमीज़ें रसोईघर में ही छोड़कर गिरजाघर चली गई। जब वह लौटी तो उसकी दूध जैसी कमीज़ें गाड़ी के पहियों की धुरी में लिपटी रहनेवाली चरबी से इस प्रकार सनी हुई थीं कि पहनने के क़ाबिल नहीं रह गई थीं। हममें किसी को ज़रा भी संदेह नहीं था कि साइमन का ही यह काम था, परन्तु कोई सबूत नहीं मिल रहा था। इसी प्रकार एक बार एक गाड़ीवान अपनी आटे से भरी हुई गाड़ी सराय के दरवाज़े पर छोड़कर भीतर चला गया। इसके बाद जब वह लौटकर आया और अपनी गाड़ी हाँकने लगा तो सड़क पर आटे की धार सी गिरने लगी। दस-बारह बोरों में चाकू से छेद कर दिया गया था। सब जानते थे कि साइमन की ही यह शरारत है, फिर भी कोई सबूत नहीं था।

साइमन दुष्ट और चोट्टा तो था ही, बाद में उद्धत और क्रूर भी हो गया। गाँव के सभी विचारशील लोगों का एक मत था कि एक विषैली घास पनप रही थी, वह इतनी ऊँची थी कि पकड़कर कतरी भी नहीं जा सकती थी और उसकी जड़ें इतनी मज़बूत जमी थीं कि खोद-कर फेंकी भी नहीं जा सकती थीं। मुझे और गवाहियों की ज़रा भी आवश्यकता नहीं थी। कोई रहस्य की या पेचीदा बात थी ही नहीं। जहाँ तक मृत लौंडे का सवाल था, सब कुछ स्पष्ट था, सब गवाहियाँ एक ही दिशा में संकेत कर रही थीं।

अंतिम दुःखद कांड गजेनहाजेन में, एक इतवार को, मेले में घटित हुआ। दूसरे गाँव के दो किसान आदम उरबज के गाँव के कलवार की दुकान में बैठे हुए बातचीत कर रहे थे कि साइमन के नाम वारंट निकल गया है। उनकी दृष्टि आदम उरबज पर नहीं पड़ी थी, जो पास ही मेज़ पर बैठा था। बग़ल के कमरे में गाँव के ज़मींदार

अपने दोस्तों के साथ बैठे हुए थे और उत्सुक नेत्रों से आदम की ओर देख रहे थे। उन्होंने आदम को जिस ढंग से मेज़ पर अपना गिलास रखते और बेंच पर से खड़े होते देखा, उससे उन्हें प्रतीत हुआ कि संभवतः उसे अभी वेश्या का गला घोंटनेवाली बेटे की करतूत का पता नहीं। अधिकतर लोग यथाशक्ति साइमन के दुष्ट कर्मों को उस बूढ़े किसान से छिपाये रहते थे। आदम असाधारण रूप से शान्त-स्वभाव का था और अपनी मर्यादा का सदा ध्यान रखता था। इससे गाँव में उसका बड़ा मान था और लोग उसे उसके बेटे की करतूत सुनाकर दुःख देने में हिचकते थे। फिर घर पर आदम की बीबी थी, जो अपने बेटे के संबंध की कोई भी अप्रिय ख़बर दबा देती थी और अगर पति के कानों तक वह ख़बर पहुँचती भी थी तो बहुत छनकर नर्म रूप में। लेकिन लोगों की यह ग़लती थी कि वे यह सोचते थे कि जो बातें होती रहती थीं, आदम को उनका पता नहीं, अथवा जो अर्द्धसत्य बातें उसे सुनाई जाती हैं, उन पर वह आँख मूँदकर विश्वास कर लेता है। वह इतने अधिक शान्त स्वभाव का था कि लोगों को उसकी स्थिर मुद्रा से भ्रम हो जाता था और उन्हें पता नहीं चल पाता था कि उसके भीतर कितनी उथल-पुथल हुआ करती थी।

आदम की बीबी जिस समय मक्खन मथ रही थी, घर की एक नौक-रानी ने, जिसके पेट में बात नहीं पचती थी, उसे सूचना दी कि उसके बेटे पर विपत्ति पड़नेवाली है। आदम घर पहुँचकर एक खिड़की के निकट जा बैठा, जिससे स्त्री का सामना न करना पड़े। शाम हो गई थी। इसी समय एक ईंटें ढोनेवाला मज़दूर आया। उसने आदम की बीबी को सूचना दी कि साइमन मेले में एक कलवार की दुकान पर बैठा हुआ दोस्तों के साथ रँगरेलियों में मस्त है और पानी की तरह रुपया बहा रहा है। इसके बाद उसने दाँत निकालकर कहा—'लेकिन अब वह पिंजड़े में बंद हो जायगा। पुलिस रास्ते में है।' बाद में प्रकट हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी, वारंट कटने की ख़बर भी केवल अफ़वाह थी।

घर के सब नौकर मेले चले गये थे। आदम की बीबी दीवाल का सहारा लेकर बैठ गई। आदम भारी क़दमों से कमरे में टहल रहा था। शीघ्र ही सड़क पर लड़खड़ाते हुए पैरों के चलने की आवाज़ आई और गालियों के साथ दरवाज़ा भड़भड़ाया जाने लगा। आदम की बीबी उछलकर खड़ी हो गई और चलने लगी। आदम ने अपनी उँगली उठाकर केवल संकेत किया। वह ओसारे में ही ठिठक गई। साइमन का चेहरा खिड़की में से झाँकने लगा, शराब पीने के कारण मुख का रंग उतर गया था, आँखों में दुष्टता झाँक रही थी। उसकी माँ ने कातरभाव से उसे चले जाने का संकेत किया। कुछ काल तक निःस्तब्धता रही। इसके बाद बग़ल के कमरे में शोर होने लगा। साइमन पिछवाड़े के दरवाज़े से आ गया था। अँधेरा था, वह कोठारे में रक्खी हुई चीज़ों से ठोकर खाकर गिर पड़ा था। एक भारी धमाका हुआ। उसकी माँ ने कोठारे का दरवाज़ा शीघ्रता से खोल दिया और लैम्प के प्रकाश में उस शराबी को ज़मीन से उठने का यत्न करते हुए देखा। उसने अपने माता-पिता की ओर हाथ बढ़ाया, उसके मुँह से अपशब्दों की वर्षा होने लगी। संभवतः आदम उरबज के जीवन में यह सबसे कठिन घड़ी थी। उसकी बीबी ने भी बाद में कहा कि उस समय आदम सिर से पाँव तक काँप उठा था।

साइमन इस बीच उठ खड़ा हुआ। बक-झक करता हुआ वह अपने सोने के कमरे में चला गया और पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर निःस्तब्धता छा गई। आदम भी ओसारे में आकर खड़ा हो गया था। उसकी बीबी उसके पीछे कपड़े में अपना मुँह ढाँपे खड़ी थी। वे दोनों इस अवस्था में पाँच मिनट तक खड़े रहे। फिर आदम सोने के कमरे की ओर चल पड़ा। बाद में आदम की बीबी ने स्वयं कहा कि उसे उस समय मालूम हो गया था कि क्या होने जा रहा है, परन्तु उसके हाथ-पैर जड़ हो गये थे और उसमें हिलने तक की शक्ति नहीं थी। यह पता नहीं चल सका कि साइमन शराब में मस्त होने के कारण बिस्तर पर

गिरते ही सो गया था या पिता-पुत्र में कुछ कहा सुनी भी हुई थी। एक बार उसने कहा कि कमरे में निःस्तब्धता छाई रही थी और दूसरी बार कि पिता-पुत्र में बड़ी देर तक बातें होती रही थीं। परन्तु सच बात यह थी कि कमरे के दोनों दरवाज़े बंद थे और वह, अपने ही कथनानुसार, इतनी दूर खड़ी थी कि उस तक कमरे की आवाज़ तक नहीं पहुँच पाती थी। यह भी ध्यान देने योग्य है कि वह यह भी निश्चित रूप से नहीं बता सकी थी कि आदम अपने पुत्र के कमरे में कितनी देर तक रहा। एक बार उसने कहा कि वह अधिक से अधिक पन्द्रह मिनट तक रहा और दूसरी बार कि वह एक घंटे से ऊपर रहा। जिस छुरे से हत्या की गई थी वह आदम का नहीं, उसके बेटे का था। वह छुरा लड़के की कमर में लगा था या कमरे में मेज़ पर पड़ा हुआ था, यह भी अस्पष्ट है। इस महत्त्वपूर्ण बात पर आदम ने चुप्पी साध ली और गवाहियों से भी इस पर कोई प्रकाश नहीं पड़ा।

मैं यह बता दूँ कि आरम्भ में असाधारण होते हुए भी इन घटनाओं ने मुझे आकर्षित नहीं किया। इस प्रकार के अपराध में ऐसी ही घटनाएँ साधारणतया हुआ करती हैं। पिता एक दृढ़-चरित्र का किसान, अपने कुल की मर्यादा का विनाश होते देखकर उसकी किसान प्रकृति क्रोधित, उसके लिए अपने कुल की मर्यादा बनाये रखना ही सबसे बड़ा न्याय; पुत्र आवारा, जिसके उग्र और असामयिक अंत पर किसी को शोक नहीं होता; माँ दोनों नावों में पैर रक्खे हुए, उसकी बड़ी दुःखद स्थिति। साधारणतया ऐसे ही चरित्र इकट्ठा हो जाते हैं और न्याय भी बिना किसी हिचक के अपने पथ का अनुसरण करता है।

परन्तु क्रमशः, आदम उरबज के जीवन के अतीत-काल से परिचित होने के बाद, मैं उसकी ओर आकर्षित होने लगा। आप कल्पना करिए कि टहलते हुए आपकी दृष्टि एक दीवाल पर पड़ती है जो संसार की अन्य दीवालों की तरह दिखाई पड़ती है, सहसा उस दीवाल पर खिंची हुई कुछ रेखाएँ प्रकट होती हैं। जैसे-जैसे वह लेख स्पष्ट

होता जाता है, उसके पढ़ लेने की उत्सुकता भी तीव्र होती जाती है। आप एक के बाद दूसरा अक्षर पढ़ने लगते हैं और सहसा आपके सामने दीवाल के पीछे का सारा रहस्य खुल पड़ता है। कुछ ऐसी ही घटना मेरे साथ भी हुई।

तेरह वर्ष तक आदम निस्संतान रहा। उसकी बीबी इसे अपने भाग्य की अटल रेखा मानकर निश्चेष्ट हो गई; परन्तु आदम के मन में सदा विद्रोह होता रहा। उसके वंश की पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आती है, उसे बिना किसी उत्तराधिकारी के मर जाना बड़ा अपमानजनक मालूम पड़ता था। इस प्रकार दिन भर परिश्रम करने और पेट काट काट कर रुपया इकट्ठा करने से क्या लाभ ? ऐसी अवस्था में भरी हुई तिजोरी, लहलहाते हुए खेत, जंगल, पशु आदि संपत्ति से क्या लाभ ?

लेकिन आदम किसी से शिकायत न करता था, न अपनी पत्नी से और न और किसी से। इस विषय पर जब कभी बातचीत होती तो उसके मुख का रंग तक नहीं बदलता था; उसके मुँह से कभी कोई कटु शब्द नहीं निकलता था।

परन्तु, महीने में एक बार वह अपनी पत्नी को छिपी हुई दृष्टि से देख अवश्य लेता था; उसके नेत्रों से एक तेज निकलने लगता था, जो प्रतिक्षण बढ़ता जाता था। कभी-कभी खेत में काम करते हुए उसकी यह अवस्था हो जाती कि वह अपनी पत्नी को एकटक निहारने लगता। या पत्नी रात में जागने पर देखती कि वह उसके सिरहाने कुहनी टेककर एकटक उसे निहार रहा है। अथवा गिरजाघर में ही : पत्नी अन्य स्त्रियों से बातें करती होती; सहसा वह जड़ हो जाती; क्योंकि दो-तीन क़दम के फ़ासले पर वह उसे एकटक दृष्टि से निहारते हुए खड़ा देखती। कभी क्रोध का नाम नहीं, धमकी की कोई बात नहीं, शिकायत का एक शब्द नहीं, वह केवल एक मनुष्य को अपनी लम्बी पलकों के नीचे से एकटक दृष्टि से निहारते हुए देखा करती।

महीने में एक बार यह अवश्य होता था, ऐसा होना असंभावी हो गया था। आरम्भ में तो आदम की बीबी ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया, वह इसे अपना भ्रम समझती। वह खुलकर हँस पड़ती और कोई विनोद की बात कह देती। इसके बाद ऐसा समय आया जब वह पीठ फेरकर इस बात को अपने मन से निकाल देने का यत्न करती। अंत में ऐसा समय आया जब वह इस बात पर घंटों विचार कर आश्चर्यमग्न हो जाया करती, पति से तो इस बात पर प्रश्न करने का उसे साहस नहीं होता था, परन्तु पति की चोबीसों घटे आँखों के सामने नाचनेवाली छाया से वह प्रश्न किया करती।

वह इस पर विचार करती। क्या लोग एक-दूसरे से अपने मन की बात कहते-सुनते नहीं? उनके मुँह में क्या ज़ुबान नहीं है? वह अपने मन में निश्चय कर लेती कि पति से सीधा प्रश्न करेगी। परन्तु समय आने पर, उसके निकट पहुँचने पर, उसका साहस विलीन हो जाता। एक अपराध की भावना उसे घेर लेती, ज़बान बोलने का यत्न करती, परन्तु मुख से कोई शब्द न निकलता। उसके मन में होता था कि वह अपराधिनी नहीं है। दिन रोज़ के काम-धंधों में बीतते जाते थे, साथ ही उसके मन की व्यग्रता भी बढ़ती जाती थी। पति की एकटक दृष्टि का भय उसके शरीर का सारा ख़ून सुखा देता था। वह भय उसके ख़ून में उसी प्रकार मिल गया था, जिस प्रकार उसे अपने हृदय की प्रत्येक धड़कन अपराध की सूचना देती हुई मालूम पड़ती थी। जाड़े के दिनों में उसे अपने घर के भीतर का वातावरण अधिकाधिक बोझिल मालूम पड़ता था। हवा भारी हो उठती थी, आसमान खिड़कियों से आ मिलता था, संध्या ठिठक-सी जाती थी। तख़्तों पर कपड़े सूखते दिखाई पड़ते थे। गौएँ एक क़तार में बैठ जाती थीं। गौशाला की ओर जाती हुई गर्भवती नौकरानी के हाथ में लटकती हुई लालटेन का सतरंगा प्रकाश चारों ओर बर्फ़ पर छितर पड़ता था।

उसे केवल दो बातों का सदा ध्यान रहता था, अपने शरीर का और अपने भय का। अठाईस दिन और रात बिना किसी घबराहट के बीत जाते थे। आदम अँगीठी के पास बैठकर तमाखू पीता, शाम को सरांय जाता और लौट आता; अँगीठी के पास फिर बैठकर समाचारपत्र पढ़ता; भोजन के समय सब की बातें चुपचाप सुनता। उसके मुख पर कोई भी गोप्य भावना न दिखाई पड़ती, वह केवल मौन रहता।

इसके बाद परीक्षा की घड़ी आ पहुँचती। वह पहले ही से उसे अनुभव कर लेती। एक दरवाज़ा खुलता और उसके अन्दर वह खड़ा दिखाई पड़ता। दिन में भी, रात में भी, बरोठे में भी, दालान में भी। वह खड़ा हुआ एकटक दृष्टि से उसे देखा करता। धमकी की कोई बात नहीं; कोई संकेत नहीं; कोई शब्द नहीं; केवल उसकी दृष्टि कहती: जब, और स्त्रियाँ फलवती होती हैं तो तुम क्यों नहीं होती? तुम वंध्या क्यों हो?

इस प्रकार बारह बरस बीत गये और आदम की बीबी अवश रूप से इस प्रकार के जीवन की अभ्यस्त हो गई। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। रात भर वह करवटें बदलती रहती। आदम की आँखें चमकती रहतीं; वह सोता रहता तब भी उसे उसकी चमकती हुई आँखें दिखाई दिया करतीं। दिन में वह आदम के आने की आहट पाते ही कोने में छिप जाती और पत्ते की तरह काँपती हुई खड़ी रहती, जब तक उसके नाम की चारों ओर से बुलाहट न होने लगती। गृहस्थी में भी उसका चित्त नहीं लगता था; नौकर काम चोर हो गये थे।

वह आदम की छाया से दूर रहने लगी। उसके बाहुपाश में थर-थर काँपने लगती थी। उसका भयभीत मन सोचता था कि अगर वह आदम से दूर रहेगी तो आदम उससे कोई माँग नहीं कर सकेगा। आदम के स्पर्श से उसका शरीर पत्थर हो जाता था, नसों में ख़ून की दौरान रुक जाती थी। आदम उससे बिनती करता, परन्तु बिलकुल नये ढंग से।

पहले उसने कभी आदम को इस प्रकार बिनती करते नहीं देखा था। आदम शब्दों द्वारा बिनती नहीं करता था, बल्कि भयभीत भाव से दिये गये उपहारों द्वारा। उसकी प्रार्थना में बहुधा एक प्रकार का मानसिक आलोड़न रहता था, जैसे वह कहीं छिप गई है और वह उसे खोज रहा है; जैसे वह उसे ढूँढ़ता है और वह मिलती नहीं। उसकी पीड़ा अकथ थी। लगभग साल भर तक यह क्रम चलता रहा। धीरे-धीरे उसकी स्त्री ने अनुभव किया कि आदम की दृष्टि में वह केवल एक पालतू पशु नहीं है, जिसे आज्ञानुसार कार्य करने पर तो चारा और चुमकारा मिलता है, अन्यथा डंडा। उसने अनुभव किया कि आदम उसका आदर और सम्मान करता है। वह फिर हृदय से आदम की ओर मुड़ पड़ी। एक महीने बाद वह गर्भवती हो गई।

जब गर्भवती होने में कोई संदेह नहीं रह गया तो उसमें भारी परिवर्त्तन हो गया। अब वह घर में नवयुवतियों की भाँति हवा में उड़ती हुई चलती थी, नौकरों से कसकर काम लेती थी, सब ओर दृष्टि रखती थी, दिन-भर चहकती रहती थी। उसकी मुख-कली फिर खिल गई। सबों को बड़ा आश्चर्य हुआ। आदम तक चकित रह गया। वह आदम को इस सुसमाचार की सूचना शीघ्र ही नहीं देना चाहती थी। वह चाहती थी कि किसी समारोह के अवसर पर यह बात प्रकट करे, जैसे वह उसे कोई बहुमूल्य उपहार भेंट कर रही थी। बृहस्पतिवार को, एक त्योहार के दिन, उसने अपने सबसे सुंदर कपड़े पहने। वह पति को ऊपर अपने कमरे में ले गई, जहाँ मेज़ पर बाप-दादों के ज़माने की चीज़ें चुनी रक्खी थीं। वह एक आरामकुर्सी पर दोनों हाथ बाँधकर बैठ गई और संक्षेप में उसने उसे सारी बातें बता दीं।

आदम के बलिष्ठ शरीर में एक कँपकँपी दौड़ गई। उन्नीस वर्ष बाद जब उसने इस घटना का और आदम के शरीर में कँपकँपी दौड़ने का बयान किया तो ऐसा मालूम पड़ता था कि पुरानी बातें याद कर उसका सारा शरीर एक बार फिर सिहर उठा था। आदम का मटमैला चेहरा

फूल के समान खिल उठा। पहले तो वह बड़े ज़ोर से हँसा। फिर उसकी आँखों से आनंदाश्रु झरने लगे। उसने उसे इतने ज़ोर से झकझोरा कि वह चौख पड़ी। आदम को दुःख हुआ कि स्त्री ने उसके झकझोरने का ग़लत अर्थ लगाया। उसने बड़े प्यार और आदर से उसकी पीठ थपथपाई।

उससे अपने शरीर के प्रति अति सावधान रहने के लिए कहा। गुप्त रूप से वह डाक्टर से भी पूछ-ताछ कर आया। घर के काम-काज के लिए एक नौकरानी और रख ली गई। वह हर घड़ी उसे आराम देने का प्रयत्न किया करता। बहुधा, जब बच्चे के कपड़ों की सिलाई होती रहती, वह बैठकर देखा करता और अपना सिर हिलाता। प्रसव की घड़ी आ गई। आदम बड़ी देर तक नवजात शिशु को अपनी गोद में लिये रहा। वह हर्ष और आशंका के साथ उस मांस-पिंड को देखता रहा।

किसान के अन्य लड़कों की भाँति साइमन भी पलने लगा। उसे किसी चीज़ के निकट न जाने दिया जाता। उस पर यह प्रकट नहीं किया गया कि कितने दिनों से और किस बेचैनी के साथ उसके आगमन की प्रतीक्षा की गई थी, माता-पिता के निकट उसका कितना मूल्य है! उसका स्वाभाविक बाल-हठ कठोर शासन की लौह दीवाल से टकराकर रह जाता। हर समय उसे परखा जाता कि तुम योग्य हो या अयोग्य। कोई भी तीक्ष्ण-दृष्टिवाला व्यक्ति यह देख सकता था कि आदम हर समय चौकस रहता था। वह बालक की एक-एक गति-विधि को बड़े ध्यान से देखा करता था। उसका यह स्वभाव हो गया था। ऊपर से देखने पर मालूम पड़ता था कि वह साइमन की गति-विधि पर ध्यान नहीं देता, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। किसी को यह पता तक नहीं था कि वह साइमन के प्रति कितना सतर्क रहता है। घटनावश, मुझ पर यह सत्य प्रकट हो गया और इस रूप में प्रकट हुआ कि मैं उसे कभी भुला नहीं सकता।

आदम के मन में पिता-पुत्र के आदर्श-सम्बन्ध के बारे में कुछ परंपरागत विचार जमे हुए थे। वह अपने को किसान मानता था, धरती का राजा। धरती उसकी थी, खेत के मज़दूर उसके थे। वह अपनी धरती का स्वामी था। उसकी दृष्टि का प्रसार उसके खेतों की मेड़ के भीतर सीमित हो गया था। ये खेत बाप-दादों के ज़माने से चले आते थे। उस खेत का एक-एक तिनका उसका था। संपत्ति उसकी दृष्टि में बड़ी पवित्र वस्तु थी। संपत्ति का अर्थ ही था कि उसका भोगनेवाला कोई स्वामी होता है, जो सदा उसके एक-एक कण की रक्षा करता है। पुत्र पिता से प्राप्त करता है, पिता अपने पुत्र को दे देता है। वह शाश्वत बनी रहती है। संसार का यही क्रम है। और किसी क्रम की वह कल्पना नहीं कर सकता था।

लेकिन मैं अपनी कहानी से अलग होता जा रहा हूँ।

अपने कर्त्तव्य के अनुसार मैंने आदम के बयान पर जिरह की, परन्तु उसमें कोई महत्त्व की बात नहीं प्रकट हुई। वह सदा एक ही उत्तर देता था। और बार-बार एक बात कहने से ऊबा और चकित मालूम पड़ता था। वह वकीलों की बात पर कान तक नहीं देता था और मेरी सलाहों के प्रति उदासीन था। जब मैंने उसे बताया कि अगर वह अपने अपराध का मन्तव्य प्रकट कर देगा तो उसका अपराध सरल हो जायगा तो उसने बस इतना ही कहा—'यह बात अप्रासङ्गिक है।' मैंने उससे व्यर्थ के लिए प्रश्न करने छोड़ दिये; क्योंकि गवाहों ने तथा अभियुक्त ने जो बातें बतलाई थीं उनसे, मैंने देखा, उसके अपराध का मन्तव्य भली भाँति प्रकट हो जाता है।

फिर भी दो बातें ऐसी थीं, जिन पर प्रकाश नहीं पड़ा था। सरकारी अफ़सर ने बयान दिया था कि मृत व्यक्ति के शरीर का कोई भी अंग ऐंठा नहीं था, न उसके कपड़ों पर कोई दाग़ ही था, जिससे प्रकट हो कि उसकी बलपूर्वक हत्या की गई है। अगर उस किसान ने अपना अपराध स्वयं स्वीकार न कर लिया होता तो उसे हत्यारा सिद्ध करना कठिन हो

जाता। दूसरी विवादास्पद बात यह थी कि छुरा निश्चित रूप से साइमन का था। आदम ने बताया था कि साइमन वह छुरा कमर में बाँधे था। मैंने निकाल लिया। यह बयान भी उसने बहुत दबाव डालने पर दिया। परन्तु यह इतना संदिग्ध मालूम पड़ता था कि दूसरे दिन उसने इस बयान को वापस ले लिया और कहा कि उसने छुरा मेज़ पर पड़ा हुआ पाया था। जब मैंने उसे संकेत किया कि मुझे आश्चर्य होता है कि वह इतने महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर भी संदिग्ध है तो उसने अपनी आँखें नीची कर लीं। मैंने केवल उसी समय देखा कि वह थोड़ा घबराया हुआ था।

मेरे मन में दिन-रात यह प्रेरणा घुमड़ने लगी कि किसी प्रकार उसकी ज़बान का ताला तोड़ सकूँ। मेरे मन के भीतर बार-बार एक आवाज़ कहती थी : यह आदमी हत्यारा नहीं है। यह उस तरह का आदमी ही नहीं है, जो उतनी ही आसानी से किसी आदमी का गला काट सकते हैं, जैसे मुर्ग़ी हलाल करते हों। यह वह आदमी ही नहीं है जो भयावना और क्रूर हो सकता है, अपने पुत्र की हत्या कर सकता है। परन्तु उसने अपने मुँह से अपना अपराध स्वीकार किया था। तो फिर सच बात क्या थी? अपने पुत्र के कमरे में वह कितनी देर तक रहा था, इस प्रश्न पर वह या तो मौन रहा था, या अधिक से अधिक उसने कंधे हिलाये थे। बहुत अंत में उसने स्वीकार किया कि वह कमरे में लगभग आध घंटे तक रहा था। आध घंटे तक उसने क्या किया? मेरे प्रश्न पर उसकी भँवों पर बल पड़ गये थे।

मैंने देखा कि अगर मैं जज के रूप में नहीं, वरन् एक साधारण आदमी के रूप में उससे कुछ पूछताछ करूँ तो रहस्य का पता पा सकता हूँ। मैंने देखा कि मैं कुछ हद तक उसका विश्वास-पात्र हो गया था। बहुधा मुक़दमे में मुझे उसकी बहुत सी अप्रिय बातों को सुलझाना पड़ता था और ऐसे समय वह कृतज्ञ-भाव से मेरी ओर निहारता था। कुछ समय तक मैं हिचकता रहा कि क्या उसकी संदिग्ध प्रकृति एक अजनबी के सामने

विद्रोह न करेगी, परन्तु पीछे यह हिचक दूर हो गई। आदम साधारण किसान नहीं था। वह एक मान-मर्यादा रखनेवाला अमीर किसान था। उसकी आकृति से प्रकट था कि वह बड़ा बुद्धिमान् है। इसलिए मुझे आशा हुई कि मेरा प्रयत्न विफल न होगा। दिसम्बर की एक शाम को मैं जेलख़ाने गया और सीधे आदम की कोठरी में गया।

मैंने प्रबंध कर दिया था कि जेल में आदम को यथासंभव आराम मिले। उसकी कोठरी साफ़-सुथरी थी, एक ओर बिस्तर बिछा था, दीवाल पर एक शीशा रक्खा था। वह लैम्प सामने रक्खे बाइबिल पढ़ रहा था। मैंने उसे नमस्कार किया, अपना कोट उतारकर खूँटी पर टाँग दिया और उसकी मेज़ के सामने कुर्सी पर बैठ गया।

जब-जब मैं उसे देखता था, उसकी आकृति मुझे नवीन मालूम पड़ती थी। उसका भारी-भरकम शरीर था। गोल खोपड़ी थी। मुँह चौड़ा था, ओठ पतले। नाक लम्बी थी। उसकी आँखें प्रायः आधी खुलती थीं, जब कभी वह उन्हें पूरी खोलकर निहारता था तो उनसे एक तेज निकलता था, जिसे मैं तक सहन नहीं कर सकता था। देखने से ही मालूम पड़ता था कि उसकी नसों में कुलीन रक्त दौड़ता है।

बात शुरू करने की दृष्टि से मैंने कहा कि तुमसे मिलने की मुझे बहुत दिनों से इच्छा हो रही थी। मैं अफ़सर की हैसियत से नहीं आया हूँ, बल्कि एक मित्र की हैसियत में। वह चुपचाप मेरी ओर देखता रहा। कुछ समय बाद उसने कहा—'आपने बड़ी कृपा की।'

मैंने अपना विरोध प्रकट किया। 'मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे साथ इस तरह व्यवहार करो।' मैंने कहा—'मुझे आशा है तुम मेरा अविश्वास करना छोड़ दोगे। एक जज का अविश्वास करना सर्वथा स्वाभाविक है। तुम अपने मन में सोचते होगे, यह अगर अफ़सर की हैसियत से नहीं आया है तो कौतूहल-वश दूसरों के घर का भेद जानने के लिए आया है। परन्तु इनमें से कोई भी बात सत्य नहीं है। काग़ज़ सब तैयार हो गये

हैं। केवल फ़ैसला बाक़ी है। मुझे कौतूहल भी नहीं है, क्योंकि मैं सारी बातें जान चुका हूँ। फिर भी मैं आया हूँ, कारण मैं स्वयं नहीं जानता। मुझे आने की इच्छा हुई। मुझे अपना यह कर्त्तव्य मालूम पड़ा।

आदम फिर कुछ समय तक मौन रहा। अंत में उसने कहा—'मैं आपका विश्वास करता हूँ।'

मुझे मार्ग मिला। 'अगर तुम मुझ पर विश्वास करते हो', मैंने कहा—'तो हम दोनों आदमी मित्रों की तरह बैठकर सारी घटना के संबन्ध में आपस में बातचीत कर सकते हैं।'

आदम विचार-मग्न हो गया। उसने कहा—'बातचीत से क्या फ़ायदा होगा? यह क्या कम दुःख की बात है कि ऐसी घटना हुई!'

'यही तो प्रश्न है,' मैंने कहा—'क्या यह घटना अवश रूप से घटी? अवश रूप से?'

उसने अपना सिर उठाया, पर आँखें नीची ही किये रहा। 'इसमें सन्देह करना मूर्खता होगी।' उसने कहा।

'लेकिन लोगों को सन्देह है,' मैंने कहा—'समाज तुम्हारे कार्य से घृणा करता है। अगर प्रत्येक मनुष्य अपने मन के अनुसार न्याय करने लगे तो क्रूरताओं का अन्त न हो और हम जङ्गली पशुओं के बीच में रहने लगें। मैं नहीं जानता कि तुम अपने कार्य को किस प्रकार न्यायपूर्ण समझते हो। समाज को अधिकार है कि तुमसे उत्तर माँगे।'

आदम ने सिर हिलाया। 'ऐसी बातों से क्या फ़ायदा हो सकता है?' उसने बुदबुदाकर कहा।

मैंने कहा—समाज और तुम्हारे बीच कोई भ्रम न रहना चाहिए। जब तक तुम चुप्पी साधे रहोगे, घृणा और भ्रम बना रहेगा।

'अगर किसी आदमी को बोलना न आता हो ?'

'क्या बोलना नहीं आता अथवा वह अभिमान और ज़िद के कारण बोलना नहीं चाहता,' मैंने तत्काल उत्तर दिया—'तुम स्वयं अपना हृदय टटोलकर देखो।'

उसने कहा—'मेरी ज़बान चल नहीं पाती। मुझे बोलने की आदत नहीं।' उसके माथे पर बल पड़ गये। मैंने देखा कि अब मैं उस पर अधिक दबाव नहीं डाल सकता था। मैं चुप रहा। अन्त में उसके मुख से आवाज़ निकली—'मैंने ही तो उसे बनाया था।' उसकी आँखें नीचे झुक गईं। 'तो क्या मैं उसे मिटा नहीं सकता था ?' उसके मुख पर एक विचित्र भाव आ गया। 'आप लोग चाहे जितना प्रतिवाद करिए; परन्तु आदमी कोई चीज़ बना सकता है तो उसे मिटा भी सकता है, अगर वह चीज़ केवल बुराई ही उत्पन्न करनेवाली है। मैंने उसके लिए कितना परिश्रम किया। अन्य स्त्रियाँ बालक को अपने पेट में नौ महीने रखती हैं। परन्तु उसकी माँ ने उसे तेरह साल तक रक्खा। मैंने हठ किया कि उसकी माँ उसे धारण करे, मैंने हठ किया कि ईश्वर उसे प्रदान करे। उसके जन्म होने से पहले ही मैं उसके बारे में सब कुछ निश्चित कर चुका था। वह ऐसा होगा, ऐसा होगा, मैंने सोचा था। (जैसे कोई ज़मीन से मिट्टी खोदकर उससे अपने इच्छानुसार वस्तु तैयार करना चाहे, सहसा वह देखता है कि मिट्टी ही बनी है। वह उस मिट्टी को फिर ज़मीन में फेंक देता है, जहाँ से उसने उसे निकाला था।')

उसके मुख पर वह विचित्र भाव और गहरा हो गया। वह अधखुली आँखों से मेरी मुखमुद्रा देखता रहा।

'शायद तुमने धीरे-धीरे अनुभव किया कि उससे केवल बुराई ही हो सकती है।'—मैंने कहा।

उसने मुझे बीच में ही टोककर तेज़ स्वर में कहा—'वह आरंभ से ही बुरा था। उसकी नस-नस में बुराई थी, मैं ख़ूब समझता था।

बहुत से बुरे कुल के बालक भी अच्छे निकल जाते हैं। आरंभ में टेढ़े होते हैं, परन्तु फिर सीधे हो जाते हैं। परन्तु वह दिन पर दिन टेढ़ा होता गया। बुराइयाँ इकट्ठी ही होती गईं, अन्त में वह बुराइयों का पहाड़ बन गया। मैंने अपने से प्रश्न किया—"इसका कभी अन्त होगा ?" अगर उसकी एक बुरी आदत छुड़ाई जाती थी तो वह उसकी जगह दो बुरी आदतें अपना लेता था। कोई अन्त नहीं था।'

'लेकिन थोड़ी सावधानी बरतने पर ख़राब बीजों को भी फलवान् बना लिया जाता है,' मैंने कहा—'क्या तुमने कभी उसकी आत्मा में प्रकाश भरने का यत्न किया ? क्या तुमने कभी गम्भीर भाव से उसे शिक्षा दी ?'

आदम ने पहली बार अपनी पलकें उठाईं। वह चकित मालूम पड़ता था। 'महाशय', उसने कहा—'आदमी किसी का स्वभाव नहीं बदल सकता। मैंने सोचा अगर वह स्वयं अन्धा है तो वह केवल कहने से आँखवाला नहीं हो सकता। अगर समझाने का प्रभाव नहीं पड़ता था तो डंडों का क्या पड़ सकता था ! जहाँ तक समझाने का सवाल है, मेरी स्त्री ने अपनी शक्ति भर कोशिश की। स्त्रियाँ इन बातों में चतुर होती हैं। अगर वह अपनी माँ की बात पर कान नहीं देता था तो मेरे कहने से क्या लाभ होता ? मैं बिना कहे हुए उससे जो कहता था वह अगर उस पर ध्यान नहीं देता था तो मैं समझता हूँ कि अगर स्वयं प्रभु मसीह उसे उपदेश देते तो वह उन पर भी कान न देता। मेरे मन में ऐसे ही विचार आते थे। जब मैं उसका पथप्रदर्शक था तो वह मेरा अनुगामी हो सकता था। जब मैं उसका अनुगामी था तो वह मेरी ओर मुड़कर देख सकता था। परन्तु वह मेरी छाया से दूर रहता था, मेरी बातों पर ध्यान देने की कौन कहे। यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है कि किसी को दोनों हाथों से पकड़कर कहूँ 'तू सुशील बन !' इससे क्या लाभ होता। सुशीलता उसके स्वभाव में ही नहीं थी। जब एक आदमी दूसरे आदमी के लिए प्रार्थना करता है और सरा घृणाद्

से मुँह फेर लेता है तो फिर उस आदमी का कभी उद्धार नहीं हो सकता ।'

'क्या तुम्हें इन सब बातों का निश्चय था ?' मैंने हिचकते हुए प्रश्न किया; क्योंकि उसकी वाणी से उसका आन्तरिक विश्वास प्रकट हो रहा था। 'क्या तुम्हें अपनी असमर्थता का पूरी तौर से विश्वास था ?'

उसने अपने दोनों हाथ फैला दिये। एक निःश्वास फेंकते हुए उसने कहा—'जब मेरे ही ख़ून और मांस ने मुझसे विद्रोह कर दिया तो क्या मैं उसे डाँटकर रास्ते पर ला सकता था ! जब मेरा ही बोया बीज ज़हरीला निकल जाय तो क्या मैं उसे डंडे से पीटकर सुधार सकता था ! ऐसा करना न तो शोभा देता, न कोई फल निकलता। जिसके लिए मैंने अपना सर्वस्व दाँव पर रख दिया, वही जब बुरा निकल गया तो मैं और क्या करता ? क्या मैं यह आशा करता कि अगर मैं उसकी हड्डियाँ तोड़ डालूँ तो उसमें से एक नये बालक का जन्म होगा ? क्या मैं उसके अंदर एक नई आत्मा रख सकता था ?'

उसका चेहरा तमतमाने लगा। इस मनुष्य ने अपने जीवन में कभी किसी पर विश्वास नहीं किया और अब अपनी आत्मा को मेरे सामने खोलकर रख रहा था। वह ऐसे शब्द, ऐसी उपमाएँ ढूँढ़ रहा था जिनसे वह मेरी ज़ुबान बन्द कर दे। लेकिन मेरा दृढ़ निश्चय था कि वह केवल दिखावे में मुझसे बातें कर रहा था, वास्तव में वह एक अदृश्य शक्ति को उत्तर दे रहा था, जो उसे भर्त्सना दे रही थी। मुझे मालूम पड़ा कि वह जो बातें मुझसे कह रहा था, वे बहुत दिनों से उसके अंदर घुमड़ रही थीं और अब उबलकर बाहर निकल रही थीं। अपने अन्दर घुमड़ती हुई आवाज़ को अब अधिक दबा नहीं सकने के कारण वह स्वयं अब उसे क्रोध और दुःख के साथ सुन रहा था।

सिर झुकाये वह बोलता रहा—"आप मुझसे पूछेंगे कि तुमने कब प्रथम बार अनुभव किया कि वह लाइलाज है ? कब तुम्हारी आशा

का अन्त हो गया ? किसी कोढ़ी से पूछिए, कब तुम्हारी खाल सड़ना आरम्भ हुई थी ? उसे अनुभव तो प्रथम दिन ही हो गया था, परन्तु विश्वास तब हुआ, जब उसने चारपाई पकड़ ली। रात भर मुझे नींद न आती, चिन्ता किया करता। अपने बारे में सोचता, उसके बारे में सोचता। इस उपाय पर विचार करता, उस उपाय पर विचार करता। मेरी आत्मा बड़ी दुखी थी। मेरी समझ में नहीं आता था कि किस प्रकार उसे कुमार्ग पर से लौटाऊँ ! अनुशासन से ? परन्तु जितना ही कठोर अनुशासन होता है, उतना ही कुपथ पर पैर आगे बढ़ता है। बेंत चलाने पर अधिक से अधिक मेरी मुट्ठियों में और उसकी पीठ में दर्द होने लगता ! क्या मैं उसे कुत्तों की तरह ज़ंजीर में बाँध देता ? परन्तु उसको बाँधना अपने को ही बाँधना था। मैं अगर वृक्ष था तो वह मेरी शाखा, अगर मैं दीपवर्तिका था तो वह मेरी लौ, अगर मैं पृथ्वी था तो वह मेरा वसंत !* दोनों में एक ही जीवन-रस प्रवाहित होता है। दीप-वर्तिका ही तो लौ को पोषित करती है। पृथ्वी से ही तो वसंत का उदय होता है। अगर यह सत्य था तो उसमें बुराई कहाँ से आई ? उसमें कितनी बुराई थी, दावाग्नि की तरह फैलती हुई ! पहले छोटी सी बात पर झूठ बोला, फिर बड़ी बात पर; पहले पैसों की चोरी की, फिर रुपयों की; पहले पशुओं पर क्रूरता दिखाई, फिर मनुष्यों पर; पहले दुष्ट था, फिर गुंडा हो गया। ज़रा भी आत्मसम्मान नहीं, ज़रा भी सचाई नहीं, ज़रा भी प्रेम नहीं। ये सब बुराइयाँ कहाँ से आईं ? मुझसे ? अवश्य ही ! तब मैंने अपने से प्रश्न किया। आदम, तुम्हारी आत्मा किस नरक में रहकर दूषित हो चुकी है कि तुम इतनी अधिक बुराई संसार में लाये ? क्या यह संभव है कि आदमी में सब बुराइयाँ ही बुराइयाँ हैं और वह अपने शरीर से इन बुराइयों को ही जन्म दिया करता है ?'

उसने मेरी ओर दुःखित नेत्रों से देखा। कुछ देर तक निःस्तब्धता छाई रही। उसने अपने कोट की बाँह से माथे का पसीना पोंछा। मुझे उसकी

---

* वृक्ष अपनी शाखा से कैसे झगड़ा कर सकता है ?

मानसिक वेदना से सहानुभूति थी, परन्तु मेरे भीतर एक आवाज़ उस पर अपराध लगा रही थी कि वह बुराइयों को बढ़ा-चढ़ाकर देखता है। 'मेरा विचार है कि तुमने अपने ऊपर आवश्यकता से अधिक उत्तरदायित्व ओढ़ लिये हैं,' मैंने कहा। 'तुमने अपने कर्त्तव्यों की सीमा बहुत बढ़ा ली है, इसलिए अपने अधिकार भी विस्तृत मानते हो। तुम एक मनुष्य और पिता के रूप में केवल अपने पर ही विचार करते रहे। परन्तु उसके माँ भी थी, जिसका लड़के पर तुम्हारे ही जितना या तुमसे भी अधिक अधिकार था। वह कभी तुम्हारे तर्कों से या उग्र कृत्य से सहमत नहीं हो सकती।'

'हम इस पर बहस नहीं करेंगे,' आदम ने रूखे ढंग से कहा। 'हम लोग तर्क के क्षेत्र से बाहर चले गये हैं। वह मेरे तर्कों का समर्थन करती है या नहीं, मुझे मालूम नहीं। उसका भी कुछ खो गया है और मेरा भी। उसकी व्यथा तीव्र है, परन्तु मेरी उससे अधिक। उसके जीवन में कुछ भी अवशेष नहीं रहा, परन्तु मेरा जीवन वर्षों से विषाक्त बना दिया गया था। मेरी अपेक्षा वह दया की अधिक पात्री है। वह उसकी कोख से जन्मा था। उसने मेरे अभिमान और मेरी मूर्खता का प्रतिशोध लिया। पुरुषों को चाहिए तो यह कि वे केवल प्रकृति को समझने की चेष्टा करें, परन्तु इसके बजाय वे करते क्या हैं? वे उसकी अवहेलना करते हैं, उसमें सुधार करने का यत्न करते हैं। यह यत्न दीवाल पर सिर पटकने के समान होता है। किसी स्त्री के कभी एक पुत्र न होना चाहिए। मेरी माँ के नौ थे। उनमें से सात मर गये। मेरी दादी के सोलह थे, जिनमें से आठ मृत्यु ने छीन लिये। परन्तु ऐसी अवस्था में मृत्यु होने पर जीवन में कटुता नहीं आती।* एक पुत्र कभी न होना चाहिए, तब खतरा बढ़ जाता है। माँ को बड़ा दुःख होता है जब उसकी एकमात्र प्रार्थना ईश्वर और मनुष्य द्वारा अस्वीकृत हो जाती है। पुत्र उसकी गर्दन पर फावड़ा लेकर ही सवार क्यों न हो जाय, वह

* खेत में बोये गये सभी बीज नहीं पनपते।

उसे अपना समझती है। पुत्र अच्छा हो या बुरा, उसके लिए रक्त का आकर्षण प्रबल होता है।

'परन्तु मैं 'पिता' था। 'पिता' का क्या अर्थ होता है। मैंने उसके अन्तराल को स्पर्श करने की चेष्टा की है। अगर मैंने किसी नौकरानी के साथ विवाह कर लिया होता और उससे पुत्र उत्पन्न करता तो वह भी मुझे पिता कहता। परन्तु उसकी समाज में क्या वह स्थिति होती? नहीं। वह चाहे सुशील और मेरे इच्छानुकूल पुत्र ही क्यों न होता। तब मैं उस सुशील पुत्र ही को क्यों न जन्म देता? दुष्ट को जन्म देने को क्यों बाध्य होऊँ? परन्तु क़ानून में यह वर्जित है और क़ानून पवित्र है। क्या वह नौकरानी मेरी पत्नी कहला सकती थी? मुझे कहने की अनुमति दीजिए: पुरुष की महत्त्वाकांक्षा स्त्री की अपेक्षा अधिक ऊँची और गंभीर होती है। और यह भी कहने दीजिए कि पिता में माँ की अपेक्षा अपराध की भावना अधिक तीव्र होती है। पिता के कंधों पर भारी उत्तर-दायित्व होता है; क्योंकि वह अपने पुरखों और अपने उत्तराधिकारियों के बीच का जोड़ होता है। उसके पुत्र के द्वारा ही उसके कुल का—उसके पुरखों का और आनेवाली पीढ़ियों का नाम चलता है। पुत्र उसके पास एक थाती के रूप में रहता है, जिसे वह परिपक्व होने पर संसार को प्रदान करता है। वह पिता बड़ा नीच है जो अपने दोनों ख़ाली हाथ फैलाकर कहता है—"मैंने अपने उत्तरदायित्व का पालन नहीं किया।"

वह एकटक दृष्टि से शून्य में देखता हुआ अपनी कुर्सी से उठा और बोला—"मैंने अपने उत्तरदायित्व का पालन नहीं किया।' वह फिर कुर्सी पर बैठ गया।

मुझे उसकी आत्म-तल्लीनता में बाधा डालने का साहस नहीं हुआ। मैं अपने मन में सोच रहा था कि अब किस तरह बात आगे बढ़ाऊँ। मुझे अपने सारे अनुमान सत्य उतरते देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

सामने बैठे हुए मनुष्य के प्रबल व्यक्तित्व ने भी मेरे मन के संदेहों को दूर कर मेरी धारणाओं को स्पष्ट करने में बहुत सहायता दी थी। जज होते हुए भी मेरा विश्वास रहा है कि मनुष्य मन के बेतार के तार द्वारा अपनी मानसिक स्थिति दूसरे को प्रदान कर सकता है।

इस मनुष्य की आकृति में एक पवित्रता थी। उसके हृदय के अन्दर छिपे हुए रहस्य को प्रकट करवाना मुझे अनुचित मालूम पड़ा। मैं काँप उठा। मुझे कोई मार्ग नहीं मिल रहा था। अन्त में निःस्तब्धता भंग करते हुए मेज़ पर झुककर मैंने कहा—'क्या तुम उसके कमरे में सब बातों का अन्त कर देने के लिए गये थे?'

उसने उत्तर नहीं दिया। उसके ओठों ने बोलने से इन्कार कर दिया। परन्तु मेरी एकटक दृष्टि के सामने उसका हृदय किसी पुस्तक के समान खुल पड़ा।

'तुम उसके कमरे में दो बार गये थे', मैंने सहसा कहा। यह विचार मेरे मन में उसी समय एकाएक उदय हुआ था। 'तुम उसके कमरे में दो बार गये!' मैंने कहा। 'जब तुम पहली बार उसके कमरे से निकले तो वह जीवित था। जब तुम दूसरी बार गये तो वह मरा पड़ा था।'

मेरा मन कभी कल्पना भी नहीं कर सका था कि इस किसान का मटमैला चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ सकता है। उसका सारा शरीर काँप उठा। वह अपनी पूरी आँखें खोलकर मुझे ताकने लगा, उसके ओठ काँप रहे थे; उसने दोनों हाथों से अपना गला दबा लिया। मेरी हिचक दूर हो गई। मैं शान्त स्वर में कहता रहा—'तुम उसे रुपये देने के लिए उसके कमरे में गये। उस दिन तुम्हारे पास रुपया नहीं था, इसलिए तुम भोजन करने के पश्चात् अपने पड़ोसी बुकनर से डेढ़ हज़ार रुपये उधार ले आये। ठीक कहता हूँ न? तुम इस रुपये से सदा के लिए साइमन से अपना पीछा छुड़ा लेना चाहते थे। तुम उसे उसी दिन अमरीका भेज देना चाहते थे। तुमने उसे रुपया दिया;

उसे अपनी योजना बताई। तुम यह आशा कर रहे थे कि साइमन बिना किसी हिचक के तुम्हारी आज्ञा का पालन करेगा। लेकिन उसने इन्कार कर दिया, तुम्हारा दिया रुपया भी लेने से इन्कार कर दिया। तुमने उससे जवाब माँगा और वह बोलने लगा। पहले तो ऊटपटाँग बोलता रहा, क्योंकि वह शराब के नशे में चूर था। परन्तु धीरे-धीरे तुम्हारे सामने उसकी बात स्पष्ट हो गई, एकदम स्पष्ट। तुम उसके सामने चुपचाप खड़े रहे, तुमने उससे एक शब्द भी नहीं कहा। वह बिस्तर पर पड़ा हुआ हवा से बातें करता रहा, परन्तु तुम इससे क्रुद्ध नहीं हुए; क्योंकि तुम जानते थे कि अगर वह तुम्हारे मुख की ओर देखेगा तो उसे बोलने का साहस नहीं होगा। तुम उसकी बात सुनते रहे, सुनते रहे और इस सुनते रहने के कारण ही बाद की सारी घटना घटी। मैं ठीक कहता हूँ न?'

आदम ने अपनी भयभीत दृष्टि मेरे मुख पर से हटाई नहीं। 'क्या आप भूत बनकर घर में मौजूद थे?' उसने आश्चर्य से भरकर हकलाते हुए कहा।

'नहीं,' मैंने कहा—'मैंने गवाहियों में प्रकट हुई बातों के आधार पर अपने अनुमान लगाये हैं। बहुधा छोटी-छोटी बातें भी अपने में बहुत कुछ प्रकट कर जाती हैं। इसमें कोई भूत-प्रेत की बात नहीं है। प्रकृति का नियम है कि मनुष्य जो कुछ करता है, उसकी शृङ्खला बनती जाती है। तालाब में ढेला फेंकने पर भँवरें बनने लगती हैं। वे भँवरें बड़ी होकर विलीन हो जाती हैं, परन्तु उनका कम्पन उनकी आँखों से अदृश्य हो जाने पर भी वर्त्तमान रहता है। इसलिए परिस्थितियों के जाल से आदमी का बचाव नहीं हो सकता। वह जाल प्रत्येक पग पर, प्रत्येक साँस पर उस मनुष्य के निकट फिरता जाता है। मुझे आरम्भ में एक संकेत मिला था, परन्तु मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरे निकट उसका महत्त्व प्रकट होता गया। तुम्हारे गाँव के पास ही एक रङ्गसाज़ रहता है, किसलिंग। वह

साइमन का चौबीसों घण्टे का साथी था। वह इस दुनिया में किसी काम का नहीं है, परन्तु उसमें अक्खड़पन के साथ सचाई है। उसने मुझे बहुत-सी बातें बताई थीं। उदाहरण के लिए : तुम्हें याद होगा कि पिछले जाड़े में तुम्हारा एक चीनी का लोटा ग़ायब हो गया था। तुमने और तुम्हारी पत्नी ने साइमन पर सन्देह किया था। तुम्हारी पत्नी ने तो यहाँ तक कहा था कि यह काम किसलिंग ने ही करवाया होगा, उसी ने बेचा होगा। सच ही, साइमन ने वह लोटा चुराया था। यह भी सच है कि उसमें किसलिंग का भी हाथ था, और वह उसके बेचने पर अपना हिस्सा ले लेता, गो कि अब इससे इन्कार करता है। परन्तु उस लोटे के बेचने की नौबत ही नहीं आई। साइमन ने अपने मित्र के सामने ही वह लोटा ज़मीन पर पटक दिया। वे लोग एक दुकान में बैठे थे। साइमन लोटा चुराकर लाया था। किसलिंग उसे हाथ में लिये सिर हिला रहा था। सहसा साइमन ने चीनी का लोटा उसके हाथ से छीनकर ज़मीन पर पटक दिया, वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। किसलिंग इस पर क्रुद्ध भी हो गया, परन्तु साइमन ने कुछ क्षण तक विचार करने के बाद सहसा चिल्लाकर कहा—'मैं ऐसा काम करना चाहता हूँ कि उसे ऐसा दुःख मिले जो उसे जन्म भर याद रहे।' किसलिंग समझ नहीं सका कि उसके मित्र का क्रोध किसके ऊपर है। उस समय साइमन से उसका नया ही नया परिचय हुआ था। बाद में उसकी समझ में आया। उसने कहा कि मैंने अपने जीवन में ऐसा लड़का नहीं देखा, जो अपने पिता से इतनी अधिक घृणा करता है। साइमन प्रायः इस प्रकार से क्रोधित हो जाता था। उस समय साइमन की इच्छा सब कुछ नष्ट कर देने की होती थी। क्रोध उतरने के बाद ही एक भयानक उदासी उसे आ घेरती थी। बहुधा वह अनुभव करता था कि उसके मन में घृणा नहीं, भय है; भय नहीं, उससे भी कोई गहरी चीज़ है। वह कितने ही आदमियों से कितनी बार कह चुका था : "मेरी इच्छा होती है कि मैं उसके मुँह पर उससे सब बातें बता

दूँ, बस एक बार; तब मेरा जी हलका हो जायगा।" इसका क्या अर्थ हो सकता था? किसलिंग ही नहीं, और बहुत से लोगों का भी कहना है कि वह वास्तव में दुष्ट नहीं था। उनका कहना है कि उसकी इच्छा-शक्ति बड़ी कमज़ोर थी; ज़रा सी उत्तेजना में बहक जाता था, अस्थिर-चित्त का था,* किसी बेधे हुए हिरन की भाँति हर चीज़ से भागता रहता था, अपने हृदय की दुर्बलता के कारण दुष्ट था, परन्तु वास्तव में बुरा नहीं था। मेरा भी अब यही मत है। परन्तु वह किससे इतना भय-भीत था? किससे विद्रोह कर रहा था? अपने भीतर की किस वस्तु को जड़ बना डालने का यत्न कर रहा था! मेरा खयाल है, आदम, केवल हम और तुम इन प्रश्नों का जवाब दे सकते हैं। केवल हम और तुम ही सत्य को जानते हैं। लेकिन तुम भी उसी समय यह सत्य जान पाये जब तुमने उस शाम को उसके कमरे में पैर रक्खा। उसी समय तुम यह सत्य जान पाये!'

आदम ने एक गहरी साँस ली। उसके मुख पर बल पड़ने लगे, जैसे वह अपने भीतर की मार पर सिकुड़ रहा था। वह बोलने का यत्न करता था, परन्तु मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। उसकी मुख-मुद्रा बतला रही थी कि अपने हृदय के रहस्य को प्रकट करने में उसे जो भारी भय और संकोच हो रहा था, वह अब दूर हो गया था। उसे अब अपने हृदय के रहस्य को छिपाये रखने की आवश्यकता न रह गई थी। उसके हृदय से एक भारी बोझ हट गया था। उसने संतोष की एक साँस ली।

मैंने अनुभव किया कि मेरा कर्त्तव्य है कि उसकी अंतिम कठिनाइयों को भी दूर कर दूँ। मैं कहता रहा: 'तुम स्वयं देख सकते हो कि इन

---

* अपने भीतर की किसी वस्तु को जड़ बना डालने के लिए शराब पीता था।

मामलों में मनुष्य पशुओं से भी बुरी हालत में है। पशु एक-दूसरे को समझ लेते हैं। मनुष्य एक दूसरे के समझने में सदा ग़लती करते हैं, और यह सब के लिए सत्य है—भाई के लिए, मित्र के लिए, पिता के लिए, पुत्र के लिए—सब के लिए। प्रत्येक मनुष्य अंधकार में रहता है, पर वह समझता है कि उसके चारों ओर बड़ा प्रकाश है। मनुष्य का यह भारी भ्रम है कि ईश्वर ने उसे पृथ्वी पर अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा है। वह वास्तव में शैतान का खिलौना है। तेरह वर्ष तक तुम्हारी एकमात्र इच्छा यही रही कि तुम्हारे पुत्र हो और जब वह प्राप्त हो गया तो तुम्हें अट्ठारह वर्ष यह जानने में लगे कि मेरा पुत्र किस प्रकार का है, परन्तु तब बहुत देरी हो गई थी। मानव-बुद्धि बड़ी क्षुद्र है! आदम, तुम ऐसा पाप अपने सिर पर क्यों लेते हो, जो तुमने नहीं किया? तुम अपने को उसका हत्यारा क्यों कहते हो, जब कि यह सत्य नहीं है? तुम क्यों न्याय को धोखा देते हो? क्यों, आदम? क्यों?'

'मैं आपको सब बताऊँगा,' आदम ने कहा—'क्योंकि अब सारा खेल समाप्त हो गया है। परन्तु ज़रा सब्र करिए, मेरे लिए यह बड़ा कठिन है।' ऐसा मालूम पड़ रहा था कि वह अपने भीतर कुछ खोज रहा था, उसकी उँगलियाँ भी हिल रही थीं, जैसे वे भी मन के साथ, भावनाओं को व्यक्त करने के हेतु उपयुक्त शब्द ढूँढ़ रही थीं। अंत में उसने रुक-रुककर कहा—'यह सच है कि मैं उसे रुपये देने के लिए गया था। मैंने अमरीका भेजने की बात नहीं सोची थी। मैं चाहता था कि वह किसी प्रकार मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाय और मेरे घर में पुलिस आने का दिन न आये। मैं उसके कमरे में गया। कमरे में जब मैं गया तो अँधेरा था, मैंने एक मोमबत्ती जलाकर प्रकाश किया। वह बिस्तरे पर पड़ा हुआ मेरी ओर घूर रहा था। यह सच है कि उसने मेरे दिये रुपये लिये नहीं, उसने अपना मुँह दीवाल की ओर फेर लिया और दाँत किटकिटाते हुए कहा कि अब रुपयों से मेरी रक्षा नहीं हो सकती। मैंने उसके बिस्तरे के

निकट खड़े होकर कहा—"अपने पिता के सामने कम से कम खड़े तो हो जाओ!" उसने उत्तर दिया—"मैं तुम्हारे सामने क्यों खड़ा होऊँ, जब तुमने ही मुझे नीचे ढकेला है?" मेरी मुट्ठियाँ बँध गईं। मैंने कहा—"क्या कहा? मैंने तुझे ढकेला है, बदमाश!" उसके मुँह से केवल एक शब्द निकला—"तुमने—!" बस और कोई शब्द नहीं। "तुमने—!" उसने कहा। मैंने उसकी ओर देखा। उसने मुझे घूरकर देखा। एक क्षण भर बाद उसने फिर दुहराया "तुमने—!" उसके इस एक शब्द में ही इतनी घृणा, इतनी ज्वाला, इतनी धमकी और इतना विष था कि मेरा रक्त क्रोध से खौल उठा। "**तुम** से तुम्हारा क्या मतलब है?" मैंने चीख़कर कहा—"**तुम** से तुम्हारा क्या मतलब है?" "ओह...... तुम—!" उसने दाँत किचाकिचाकर कहा—"जब से मैं पैदा हुआ हूँ, तुम्हारा बोझ ही मेरी छाती पीस रहा है।" मैं मौन रहा। "तुम खड़े हुए मुझे घूरते रहे।" उसने कहा। "क्या तुम्हारे इस प्रकार घूरने का कभी अन्त नहीं होगा? जब से मेरा जन्म हुआ, तुम्हारी आँखें मुझे इसी प्रकार से घूरती रही हैं, घूरती रही हैं, मुँह से एक शब्द नहीं निकला है। तुम्हारे इस घूरने ने ही मुझे इस पथ पर इतनी दूर तक भेज दिया है। क्या तुम कभी मेरा नाम लेकर नहीं पुकार सकते थे? तुमने कभी मुझसे एक शब्द क्यों नहीं कहा? ठीक ही था कि मैंने बरबादी का रास्ता पकड़ा! ठीक ही था कि मैं शराबी हो गया और आवारा दोस्तों के चक्कर में पड़ गया! वे लोग कम से कम मुझसे हँसते-बोलते तो थे। उनकी हा-हा-ही-ही से इतना तो प्रकट हो जाता था कि उनसे मेरा क्या सम्बन्ध है। परन्तु तुम! क्या मुझ पर कभी प्रकट हुआ है कि मेरे-तुम्हारे क्या सम्बन्ध हैं? मैं अपने मन में सोचा करता था। देखो, वह फिर मेरी ओर ही आँखें गड़ाये है। जब मैं बालक था और तुम दरवाज़े में आकर खड़े हो जाते थे तो जो कुछ मैं खाता होता था, वह मेरे गले में अटक जाता था। कितनी ही बार मेरी इच्छा हुई थी कि तुम्हारे निकट जाऊँ, लेकिन मुझे तुम्हारी ओर

पैर उठाने में भय लगता था। मुझे आश्चर्य होता था कि मैंने कौन-सा बुरा काम किया। और जब मैं बुरा काम करता था तो मुझे प्रसन्नता होती थी; क्योंकि मैं जानता तो था कि वह काम बुरा था। इस तरह हर घड़ी मेरी गर्दन पर तलवार लटकती रहती थी और मैं कोई बुरा काम कर बैठता था, जिससे सब लोग क्रुद्ध हो जाते थे। हाँ, मैं बुरा हूँ; जन्म से बुरा हूँ! हाँ, मैं गुंडा हूँ, पर तुम मेरे सिर पर हर घड़ी सवार क्यों रहते थे? मैं तुम्हारे कुल का नाम उज्ज्वल कर सकता था, जैसा शास्त्रों में वर्णित है। मैं भेड़ की तरह सीधा हो सकता था! मैं सब कुछ हो सकता था; मुझमें शक्ति थी, परन्तु तुमने नष्ट कर दी। मैं गुंडा बन गया हूँ। मैं ऐसे जीवन से ऊब गया हूँ, मैं मनुष्यों से ऊब गया हूँ। अब मेरे लिए संसार में कुछ भी सुख शेष नहीं रहा।" वह इसी प्रकार बकता रहा, मुझे सब बातें भूल गई हैं। इसके बाद वह बिस्तरे पर औंधा होकर दाँत किटकिटाने लगा, कभी हँसने, कभी रोने लगा। फिर दीवाल की ओर मुँह करके लेट गया और मौन हो गया। मैंने अपने मन से कहा—आदम, यह आत्मा पतित तो है ही, तुम्हारी आत्मा भी कम निन्दनीय नहीं है। मेरे मुँह से एक शब्द नहीं निकल सका। मैं बाहर चला गया। मैं खेत की मेड़ तक चला गया। चारों तरफ़ शान्ति थी और वसन्त का नवजीवन लहलहा रहा था। मैंने आसमान की ओर देखा। मैं निस्सहाय था। मैंने गोशाला का दरवाज़ा खोला, भीतर की गर्म हवा मेरे मुँह से टकराई। एक बैल मेरी ओर सिर उठाकर देखने लगा। सहसा एक भय मेरे मन में आ समाया। मैंने अपने से कहा—तुम्हें उसके कमरे में जाना चाहिए। अगर तुम्हारे मुँह से शब्द नहीं निकलता, तब भी तुम्हें कुछ करना चाहिए। मैं लौट पड़ा। जब मैंने उसके कमरे में पैर रक्खा वह ख़ून में डूबा हुआ पड़ा था। मैं फिर भी बड़ी देर तक खड़ा रहा। मैंने अपने से कहा—उसके मन ने अगर यही निश्चय किया, तो मैं ही उसका हत्यारा हूँ। अगर

वह तुम पर यही अपराध लगा गया है तो तुम्हें उसका दंड भोगना चाहिए......मैंने अब आपको सारी बात बतला दी।'

उसने बाइबिल पर दोनों हाथ रखकर, धीमे स्वर में, तथा एक विचित्र दृष्टि से मुझे देखते हुए कहा—"मैं आपको अपने स्वप्न के बारे में भी बताऊँगा। जिस रोज़ सारी घटना घटी, उससे एक रोज़ पहले रात में मैंने यह स्वप्न देखा था। एक खेतिहर ने आकर कहा—"मालिक, घोड़ा जुत गया। चलिए, हम लोग चलें।" गाड़ी बर्फ़ में धँसी खड़ी थी, मैंने जाकर घोड़े की रास हाथ में ले ली। हम लोग चलने लगे, घोड़े बर्फ़ चीरते हुए भाग रहे थे। सहसा मैंने पीछे घूमकर देखा, मेरे खेत में आग लगी थी, उसकी लाल छाया बर्फ़ से ढके मैदान पर पड़ रही थी। घोड़े तेज़ी से भागने लगे, मेरी साँस फूलने लगी। हम लोग एक पुल के निकट पहुँचे। नीचे एक लंबी चौड़ी बर्फ़ से ढकी नदी थी। घोड़े और तेज़ी से भागने लगे थे। आग का लाल प्रकाश सारे आकाश में भर गया था। घोड़े नदी में कूद पड़े, परन्तु बर्फ़ जमी रही, गाड़ी डूबी नहीं। नदी के दूसरे तट पर साइमन था। मैंने चिल्लाकर कहा—"साइमन, मेरी सहायता करो।" उसने उत्तर दिया। "मुझे घर जाना है; घर में आग लगी है; सब जल रहा है।" घोड़े तेज़ी से बर्फ़ पर भागते जा रहे थे। मैंने कहा—"साइमन, मेरी सहायता करो। घोड़ों को आकर सँभालो।" उसने उत्तर दिया—"तुम स्वयं उन्हें सँभाल लो। मेरे चढ़ने से बर्फ़ चिटक जायगी और गाड़ी नदी में डूब जायगी।" मैंने फिर चिल्लाकर कहा—"मैं तुम्हें सब कुछ दे दूँगा। घोड़ा, गाड़ी, सब कुछ, ईश्वर के लिए मेरी सहायता करो।" वह मेरी ओर घूम पड़ा। उसके घूमते ही घोड़े रुक गये। परन्तु साइमन के डग बढ़ाते ही बर्फ़ चिटक गई और उसके घोड़े की रास थामते ही घोड़ा, गाड़ी और साइमन के साथ ही मैं भी नदी में डूब गया। मैं नदी में डूब रहा था, जब मेरी आँखें खुल गईं।'

आदम चुप हो गया। मैं भी मौन रहा*। मैंने आश्चर्य के साथ देखा कि कुछ मिनटों में ही वह बहुत अधिक बूढ़ा हो गया है। उसकी आँखों की ज्योति धीमी पड़ गई है, गर्दन पतली हो गई है, गाल लटक आये हैं, वह बिलकुल बूढ़ा आदमी मालूम पड़ता था। कुछ देर पहले मेरे सामने बलिष्ठ शरीरवाला आदमी बैठा था, वह सहसा बूढ़ा हो गया। जब मैंने उससे बिदा ली तो उसने आँख तक न उठाई। शायद उसे मेरे जाने की आहट भी नहीं मिली। जिस अभेद्य, मृत्यु समान नीरवता ने उसके सारे जीवन को घेर रक्खा था वह फिर उस पर व्याप्त हो गई थी। दूसरे दिन सुबह जब जेलर अदालत ले जाने के लिए उसकी कोठरी में गया तो वह खिड़की से लटका हुआ पाया गया।

---

* कुछ टीका-टिप्पणी करने की इच्छा न हुई।

रहस्यपूर्ण कोठी

(ओनरे द बालजक, फ्रांस)

[(१७६६-१८५०) आपका जन्म टुअर्स में हुआ था। जीवन के विविध क्षेत्रों में अपना भाग्य आज़माने के बाद अंत में आप पेरिस चले गये और वहाँ पुस्तकों का व्यवसाय करने लगे। आपके उपन्यासों और लम्बी कहानियों की संख्या बहुत अधिक है। इन रचनाओं ने आपको संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखकों में स्थान दिलाया है। आपकी प्रस्तुत कहानी आधुनिक समय की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है।]

वेन्डोम नगर से लगभग आधे फ़र्लांग पर, लोयर नदी के तट पर एक बड़ी भारी पुरानी नीली कोठी है, जो चारों तरफ़ ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से घिरी है। कोठी के सामने नदी की ओर एक बड़ा बाग़ है। किसी समय उस बाग़ की सुंदर चहारदीवारी थी, पर अब वह नदी तट के जंगल में छिप गई है। पिछले दस वर्षों से इस बाग़ की देखभाल नहीं हुई है, जिससे पेड़ों में अब फल नहीं लगते। पहले बाग़ में चारों तरफ़ छोटी सुंदर सड़कें दौड़ती थीं, पर अब उन पर बड़ी-बड़ी घास उग आई है। बाग़ देखने से मालूम पड़ता है कि पहले यहाँ किसी बड़े रईस की कोठी थी, जिसे बाग़बानी का शौक़ था। उसके समय में बाग़ रंगबिरंगे फूलों और फलों के वृक्षों से सुशोभित रहा होगा, पर अब जंगल हो गया है। मकान की छतें भो एकदम गिराऊ हो गई हैं, ज़ीनों में लम्बी-लम्बी घास उग आई है और सदर दरवाज़े पर पड़े हुए ताले में ज़ंग लग गई है। सरदी, गरमी, धूप और बरसात सहते-सहते कोठी का सारा रंग धुल गया है, दीवालें दरक गई हैं। एक भयानक निःस्तब्धता इस कोठी पर छाई रहती है, वह केवल चिड़ियों की चहचहाहट और बिल्ली-चूहों की झपट से ही भंग होती है। कोठी

की खिड़कियाँ सदा बंद ही दिखाई पड़ती हैं और उस पर रहस्य का एक परदा सा छाया रहता है।

अगर आप कभी सड़क पर कौतूहलवश रुककर कोठी की ओर ताकें तो आपको दिखाई देगा कि कोठी के सदर फाटक में लड़कों ने खेल-खेल में कितने ही सूराख़ कर दिये हैं। मैंने बाद में सुना कि यह फाटक दस वर्ष से बंद है। फाटक में लड़कों द्वारा किये गये छेदों में अगर आप आँख लगाकर देखें तो आप देखेंगे कि कोटी और बाग़ का नक़्शा बड़ा सुंदर है। अब चारों तरफ़ उजाड़ दिखाई पड़ता है। फ़व्वारे के पत्थर चटक गये हैं और उनके जोड़ों में बड़ी-बड़ी घास उग आई है। इस कोठी पर आसमान से कौन-सी बिजली गिर पड़ी? इस पर ईश्वर का कैसा शाप हुआ कि वीरान नज़र आती है? ऐसे ही प्रश्न कोठी को देखने पर मन में उठते हैं. पर उनका कोई उत्तर नहीं मिलता। यह ख़ाली और वीरान कोठी एक अनबूझ पहेली सी खड़ी दिखाई पड़ती थी। बहुत प्राचीन समय में इस कोठी में किसी बड़े ज़मींदार का निवास था।

एक बार मेरी मकान-मालकिन ने मुझे एक भेद की बात बताई, जिसे मैं समझता हूँ कि मुझसे पहले भी वे बहुत से लोगों को सुना चुकी थीं, पर मैं बड़े ध्यान से उनका एक-एक शब्द सुनता रहा।

'महाशय,' मकान-मालकिन ने कहा—'जिस समय सम्राट् ने स्पेन के युद्ध में बंदी किये गये कुछ स्पेनिश बंदियों को इस नगर में भेजा था तो सरकार ने एक नवयुवक स्पेनिश बन्दी को मेरे यहाँ भी ठहरा दिया था। वह प्रति दिन थाने जाकर अपनी रिपोर्ट कर आता था। वह कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं, एक स्पेनिश सरदार था। उसका नाम ठीक तौर से याद नहीं आ रहा है, डायरी में लिखा है, अगर आप चाहेंगे तो देखकर बता दूँगी। वह बहुत लंबा न था, फिर भी उसके शरीर की गठन बड़ी सुन्दर थी। उसके हाथ बड़े कोमल और छोटे थे।

उन्हें साफ़ करने के लिए उसने स्त्रियों की भाँति कितने ही बुरुश रख छोड़े थे। उसके काले बाल थे, चमकती हुई आँखें और सोने के रंग का शरीर। अगर आप उसे देखते तो मुग्ध हो जाते। मेरे यहाँ देश के बड़े से बड़े रईस ठहर चुके हैं, यहाँ तक कि स्पेन के राजा भी मेरे यहाँ ठहरे हैं, पर मैंने उसके शरीर पर जैसे मुलायम रेशमी वस्त्र देखे, वैसे किसी के शरीर पर नहीं। वह बहुत अल्प भोजन करता था; उसका व्यवहार इतना मधुर था कि उससे कोई नाराज़ हो ही नहीं सकता। मैं उस पर मुग्ध हो गई थी, यद्यपि वह कम बोलता था और उससे बात करना तो असंभव था; क्योंकि उससे तुम चाहे जितनी बातें करो, वह किसी बात का उत्तर ही न देता था। वह नियमित रूप से गिरजाघर जाता था। और वह वहाँ बैठता कहाँ था? मैडम मेरेट के एकदम पीछे! पहले ही दिन वह उस जगह पर बैठा था और इसके बाद किसी को कुछ सन्देह तक न हुआ। और कैसे हो, वह बेचारा प्रार्थना-पुस्तक से अपनी आँख तक न उठाता था। शाम को वह पहाड़ों पर विध्वस्त क़िलों की सैर करने के लिए चला जाता। बस उसका यही मनोरंजन था। उसे पहाड़ बहुत प्यारा था। कहते हैं, स्पेन में बस पहाड़ ही पहाड़ हैं। वह रात में बड़ी देर से लौटता। मुझे पहले कुछ दिनों तक तो यह जानकर कि वह आधी रात से पहले घर नहीं लौटता, चिंता हुई; पर धीरे-धीरे हम उसकी इस विचित्र रुचि के अभ्यस्त हो गये। वह दरवाज़े की कुंजी अपने साथ ले जाता था अतः हम लोगों ने प्रतीक्षा करनी छोड़ दी। एक दिन हमारे सईस ने, जो शाम को घोड़ों को पानी पिलाने के लिए नदी-तट पर गया था, हमें बताया कि उसने स्पेनिश सरदार को नदी में मछली की भाँति तैरते हुए देखा। हमने दूसरे दिन उसे चेता दिया कि नदी में भँवरें बहुत हैं। उसे यह अच्छा नहीं लगा कि उसे नदी में तैरते हुए किसी ने देख लिया। अन्त में एक दिन प्रातःकाल हमने देखा कि वह अपने कमरे में नहीं है; वह लौटा नहीं था। बहुत खोज-बीन के बाद हमने उसके कमरे की एक मेज़ पर एक लिखी

हुई चिट पाई। मेज़ पर एक छोटा-सा बक्स भी रक्खा था, जिसमें कई हज़ार रुपये के जवाहरात थे। चिट पर लिखा था कि कि अगर वह किसी दिन वापस न लौटे तो उन रुपयों से हम लोग गिरजाघर में उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करवावें कि वह बच जाय और उसे मुक्ति मिले। उन दिनों मेरे पति भी कोठी ही पर थे, उन्होंने बड़ी खोज-बीन की।

'एक बड़े अचम्भे की बात प्रकट हुई। मेरे पति उस स्पेनिश सरदार के कपड़े ढूँढ़कर लाये। उन्होंने वे कपड़े नदी-तट पर मैडम मेरट के मकान के ठीक सामने, एक पत्थर के नीचे दबे हुए पाये थे। मेरे पति प्रातःकाल सूर्य निकलने से पहले ही घर से निकल पड़े थे, इसलिए किसी ने उन्हें देखा नहीं। उस स्पेनिश सरदार की चिट पढ़ने के बाद मेरे पति ने उसके कपड़े जला दिये और उसकी इच्छा के अनुसार यह घोषणा कर दी कि स्पेनिश सरदार फ़रार हो गया है। पुलिस ने चारों ओर सिपाही भेजे, पर वह पकड़ा नहीं जा सका। मेरे पति का ख़याल था कि स्पेनिश सरदार डूब मरा। पर मेरा कुछ और ही ख़याल है। मैडम मेरट की नौकरानी रोज़ी ने मुझसे जो कुछ कहा उसके आधार पर मैं इस घटना का संबंध उनसे जोड़ती हूँ। रोज़ी ने मुझे बताया कि उसकी स्वामिनी के पास एक चाँदी का क्रास* था, जिसे वे सदा अपने हृदय से लगाये रखती थीं। और जब मरने लगीं तब भी यही कहा कि यह क्रास मेरे शरीर पर ही रहने दिया जाय। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि स्पेनिश सरदार जब मेरे यहाँ आया था, उसके गले में भी वही क्रास था। बाद में मैंने फिर उसके गले पर वह क्रास नहीं देखा।'

'आपने रोज़ी से कुछ और पूछताछ नहीं की?' मैंने कहा।

---

* ईसा के सूली पर चढ़ाये जाने का चिह्न। इसे धार्मिक प्रवृत्ति के ईसाई लोग अपने गले में पहना करते हैं।

'पूछा क्यों नहीं, पर कोई फल नहीं निकला। वह बिलकुल पत्थर है। वह कुछ जानती अवश्य है पर किसी को बताती नहीं।'

मकान-मालकिन से कुछ और शिष्टाचार की बातें करने के बाद मैं वहाँ से उठकर चला आया। मेरे मन में कितने ही अस्पष्ट विचार थे, धुँधली कल्पनाएँ थीं, एक दुर्दमनीय कौतूहल था और था एक अज्ञात भय, वैसा ही भय जैसा अँधेरी रात में गिरजाघर में वेदी के निकट धुँधले प्रकाश में कुछ छायाएँ चलते देखकर उत्पन्न होता है।

मैडम मेरेट की वह कोठी, जिसके चारों ओर लम्बी-लम्बी घास उग आई थी, एक भयानक स्वप्न की भाँति मेरी आँखों के सामने हर घड़ी नाचने लगी। मैंने उस कोठी के रहस्यपूर्ण वातावरण को भेद कहानी का छूटा हुआ सूत्र पकड़ने की यथाशक्ति चेष्टा की। मेरी आँखों में सारे वेन्डोम नगर में रोज़ी का यह महत्त्व सबसे अधिक बढ़ गया। मैंने उसका अध्ययन किया। उसकी आँखों में सदैव एक चोरी का भाव छिपा रहता था, वैसा ही भाव जैसा किसी कुमारी माता की आँखों में रहता है, जो अपने नवजात शिशु की हत्या कर डालती है पर उसकी दारुण चीख़ उसके कानों में हर घड़ी गूँजा करती है! ऊपर से देखने पर उसका व्यवहार फूहड़ मालूम पड़ता था। उसकी हँसी भी किसी मँजे हुए अपराधी जैसी न थी, बल्कि उसके चेहरे पर तो शिशुओं जैसी निर्दोषिता का भाव विराजता था। मैंने मैडम मेरेट की रहस्यपूर्ण घटना से परिचित होने के हेतु उससे मित्रता तक कर लेने का निश्चय कर लिया।

'रोज़ी!' मैंने एक दिन शाम को कहा।

'कहिए।'

'तुम्हारी अभी शादी नहीं हुई?'

वह ज़रा चौंक पड़ी।

'ओह, मुझे जब अपना जीवन कष्टपूर्ण बनाने की इच्छा होगी तो पतियों की कमी न पड़ेगी।' उसने मुसकराते हुए कहा।

वह कुछ भावावेश में आई थी, पर जल्दी ही सँभल गई। प्रत्येक स्त्री इस प्रकार उपयुक्त अवसर पर अपनी भावनाओं को दबा जाने में चतुर होती है।

'रोज़ी, तुम सुंदरी हो। तुम्हें बहुत से प्रेमी मिल सकते हैं। तुम आराम से ज़िंदगी बिताने के बजाय इस होटल में नौकरी क्यों करती हो? क्या तुम्हारी मालकिन तुम्हें कुछ दे नहीं गई?'

'दे क्यों नहीं गई! पर मुझे यह नगर बहुत पसंद है।'

कोई भी वकील या जज समझ जायगा कि वह मेरे प्रश्नों का सीधा उत्तर देने से बच रही थी। रोज़ी मुझे ऐसी स्त्री मालूम पड़ी जो सत्य को जानती है, जो स्वयं कथा के सूत्र से बँधी है। मैंने समझ लिया कि मुझे अगर कथा का सूत्र पकड़ना है तो पहले इस गढ़ पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और यह साधारण कार्य न था। उस दिन से मैं रोज़ी के अति निकट पहुँचने का यत्न करने लगा।

एक दिन सुबह मैंने रोज़ी से कहा—'अच्छा रोज़ी, तुम मुझे मैडम मेरेट की सारी कथा बताओ।'

उसने भयभीत हो कहा—'नहीं, उनके बारे में मत पूछो।'

उसका सुंदर चेहरा कुम्हला गया, उसकी आँखों की निर्दोषिता विलीन हो गई।

'अब आप ज़िद करते हैं तो सुन लीजिए,' उसने कहा—'पर इसे गुप्त रखिएगा।'

रोज़ी की सारी बातें लिपिबद्ध करने में तो एक बड़ा पोथा तैयार हो जायगा, इसलिए मैं संक्षेप में लिखूँगा।

मैडम मेरेट नीचे के ही एक कमरे में रहती थीं। उनके कमरे में एक चार फ़ीट गहरी अलमारी थी, जिसमें वे अपने कपड़े रखती थीं।

जिस संध्याकाल की घटना मैं अभी बयान करूँगा, उससे तीन महीने पहले की बात है। मैडम इतनी अधिक बीमार थीं कि उनके पति ने उचित समझा कि उन्हें एकांत में रहने दिया जाय। उन्होंने नीचे ही एक दूसरे कमरे में अपनी बैठक जमा ली। होनहार की बात, एक दिन काउंट क्लब से दो घण्टे पहले ही लौट आये (वह क्लब में अपने मित्रों से राजनीतिक चर्चा किया करते थे)। मैडम का ख़याल था कि पति अपने कमरे में गहरी नींद सो रहे होंगे। लेकिन उस दिन काउंट बहुत उत्साहित थे। क्लब में उन्होंने फ्रांस के आक्रमण के सम्बन्ध में जोशीली बहस की थी, बिलियर्ड में वे तीस रुपया हार गये थे, जो एक अभूतपूर्व घटना थी। कुछ देर तक काउंट रोज़ी से यह जानकर कि मैडम सो रही हैं, सब्र किये रहे और अपने कमरे में जाकर टहलते रहे। मकान में प्रवेश करते समय उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वह अपने अभाग्य की कथा पत्नी से कहकर उसकी सांत्वना प्राप्त करेंगे। उस दिन रात्रि को भोजन के समय उन्होंने पत्नी को बड़े भड़कीले वस्त्र पहने देखा था। क्लब जाते समय उनके मन में आया था कि पत्नी अब पूर्ण स्वस्थ हो गई हैं और विश्राम मिलने के कारण उनका सौंदर्य पहले से अधिक प्रखर हो उठा है। सभी पतियों की भाँति काउंट भी धीरे-धीरे देर में बात समझते थे। उन्हें इतनी अधिक उतावली हो गई कि उन्होंने रोज़ी को भी नहीं पुकारा। वह रसोइया और कोचमैन का ताश देखने में व्यस्त थी। काउंट स्वयं हाथ में लालटेन लेकर पत्नी के कमरे की ओर चल पड़े। कमरे के निकट पहुँच, लालटेन उन्होंने ज़ीने पर रख दी। उनकी पगध्वनि उस निःस्तब्धता में गूँज उठी। जिस समय काउंट ने पत्नी के कमरे का दरवाज़ा खोला, उन्हें ऐसा भ्रम हुआ कि उन्होंने भीतर कमरे में अलमारी का दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ सुनी। पर जब काउंट कमरे के भीतर गये तो उन्होंने पत्नी को अँगीठी के निकट अकेली बैठी पाया। न मालूम क्यों पति के मन में विचार जम गया कि रोज़ी अलमारी के भीतर छिप गई है। वह कुछ सतर्क हो गये। उन्होंने

अपनी पत्नी की आँखों में देखा। उ न आँखों में एक चोट खाये हुए हिंसक पशु का भाव था।

'आपको बड़ी देर हुई,' पत्नी ने पूछा। काउंट को लगा आज सदा की भाँति पत्नी का स्वर मधुर नहीं है।

काउंट कोई उत्तर न दे सके; क्योंकि उसी समय रोज़ी ने कमरे में प्रवेश किया और काउंट एकदम चौंक पड़े। वह मशीन की भाँति हाथ बाँधे हुए कमरे में खिड़की के निकट इधर से उधर टहलते रहे।

'क्या तबियत ख़राब है या कोई बुरी ख़बर है!' पत्नी ने पूछा। रोज़ी मैडम को रात के कपड़े पहनाने लगी। काउंट चुप रहे।

'तुम जाओ,' मैडम ने नौकरानी से कहा—'मैं अपने बाल अपने हाथों सँवार लूँगी।'

पति की मुद्रा देखकर मैडम ताड़ गई थीं कि कुछ दाल में काला है और वे एकांत चाहती थीं। रोज़ी गई नहीं, पर बाहर कुछ मिनट तक दालान में खड़ी रही। काउंट ने पत्नी के सामने खड़े होकर कठोर स्वर में पूछा :

'मैडम, आपकी अलमारी में कोई है!' पत्नी ने शांतिपूर्वक काउंट के चेहरे की ओर देखा और सरलता से उत्तर दिया :

'नहीं तो, आपका भ्रम है!'

लेकिन इस उत्तर से काउंट के हृदय को विश्वास नहीं हुआ। फिर भी इस समय पत्नी के चेहरे पर संतों जैसी पवित्रता थी। काउंट अलमारी का दरवाज़ा खोलने के लिए आगे बढ़े, पत्नी ने हाथ पकड़कर उनकी ओर विह्वल नेत्रों से निहारते हुए भावावेश में कहा—

'अगर अलमारी में कोई न हुआ तो फिर याद रखिए हमारा-आपका संबंध सदा के लिए टूट जायगा।' पत्नी की इस असाधारण शालीनता ने काउंट के हृदय में उसके प्रति आदर उत्पन्न कर दिया।

'नहीं प्रिये, मैं उसे खोलकर नहीं देखूँगा,' काउंट ने कहा—'फिर भी अब हम लोगों के बीच सदा के लिए एक खाई बन गई है। मैं जानता हूँ तुम्हारा हृदय पवित्र है, तुमसे कभी कोई पाप नहीं हो सकता।'

मैडम ने काउंट की ओर तेज़ दृष्टि से देखा।

'अच्छा, क्रास हाथ में लेकर ईश्वर के सम्मुख क़सम खाओ कि अलमारी में कोई नहीं है,' काउंट ने कहा—'और मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगा। फिर कभी अलमारी का दरवाज़ा न खोलूँगा।'

मैडम ने क्रास हाथ में लेकर कहा :—'मैं क़सम खाती हूँ।'

'ज़रा स्पष्ट स्वर में,' काउंट ने कहा—'यह कहो कि मैं ईश्वर के सामने क़सम खाती हूँ कि अलमारी में कोई नहीं है।'

पत्नी ने एक-एक शब्द धैर्य-पूर्वक दुहरा दिया।

'बस, अब कोई बात नहीं है!' काउंट ने निर्ममता से कहा। कुछ क्षण तक कमरे में निःस्तब्धता रही।

काउंट ने चाँदी के सुंदर क्रास को हाथ में लेते हुए कहा—'मैंने ऐसा सुंदर क्रास नहीं देखा।'

'मैंने इसे एक जौहरी से लिया है। पिछले साल जब स्पेनिश राजबंदी इधर से भेजे गये थे तो उसने इसे एक स्पेनिश पादरी से ख़रीदा था।'

काउंट ने घंटी बजाकर रोज़ी को बुलाया और उसे खिड़की के निकट ले जाकर धीमे स्वर में कहा—'सुनो! मुझे मालूम है कि तुम फारेस्टर से शादी करना चाहती हो। उसके ग़रीब होने की वजह से ही हिचकती हो। तुमने उससे कहा भी था कि वह अगर यहाँ ठेकेदार नियुक्त हो जाय तो तुम उसकी पत्नी बन जाओगी। देखो, उसे जाकर बुला लाओ। कहो कि अपनी छेनी-बसूली लेकर आये। मकान में और कोई न जानने पाये। वह

मालामाल हो जायगा। ज़रा भी शोर न हो, नहीं तो—' काउंट की भँवों पर बल पड़ गये। रोज़ी जाने लगी। काउंट ने उसे वापस बुला लिया।

'देखो, मेरी ताली लेती जाओ,' काउंट ने कहा। फिर तेज़ स्वर में कोचमैन और रसोइये को पुकारकर आज्ञा दी—'तुम लोग अब जाकर सोओ।' इसके बाद फुसफुसाकर कहा, 'देखो, जब सब लोग सो जायँ तभी तुम उसे लेकर आना।' नौकरों को आज्ञाएँ देते समय भी काउंट ने एक मिनट के लिए पत्नी के चेहरे से अपनी नज़र नहीं हटाई थी, आज्ञाएँ देने के बाद काउंट चुपचाप अँगीठी के निकट आकर अपनी पत्नी से बिलियर्ड और क्लब के बारे में बातचीत करने लगे। रोज़ी जब राजगीर को लेकर वापस लौटी तो काउंट अपनी पत्नी से बहुत मृदु स्वर में बातें कर रहे थे।

काउंट अपने कमरों की फिर से मरम्मत और रङ्गामेज़ी करवा रहे थे। उन्होंने नगर से बहुत सी सीमेंट और सामान मँगवाकर एक कमरे में ढेर करवा दिया था। उन्हें विश्वास था कि अगर इतना सामान ख़र्च नहीं होगा तो इसके दूसरे ख़रीदार मिल जायँगे। इस समय उन्हें एक नई बात सूझी।

मैडम राजगीर को देखकर पीली पड़ गईं।

काउंट ने उसे आज्ञा दी—'देखो, अस्तबल की तरफ़ चले जाओ, ईंटें ले आओ। मैं इस अलमारी को बन्द करवाकर दीवार खड़ी करवा देना चाहता हूँ।' इसके बाद काउंट ने रोज़ी और राजगीर को एक किनारे बुलाकर धीमे स्वर में कहा।

'देखो, आज रात यह काम कर डालो। सुबह मैं तुम्हें पासपोर्ट दिला दूँगा, तुम विदेश जाकर किसी नगर में आराम से रह सकोगे। मैं तुम्हें सारा ख़र्च दूँगा। मैं पेरिस चलकर तुम्हारे नाम एक जायदाद रजिस्ट्री करा दूँगा, जो दस साल बाद विदेश से लौटने पर तुम्हारी

हो जायगी। और रोज़ी, तुम्हें मैं शादी के दिन दस हज़ार रुपया दूंगा, इस शर्त पर कि तुम इससे शादी करो। अगर तुम और किसी से शादी करना चाहो तो तुम्हें ज़िंदगी भर अपनी ज़बान बन्द रखनी होगी, नहीं तो रुपया न मिलेगा।'

'रोज़ी, ज़रा मेरे बाल सँवार दे' मैडम ने पुकारा।

काउंट कमरे में शांतिपूर्वक टहलते रहे। वे कभी दरवाज़े की ओर देखते, कभी राजगीर की ओर और कभी पत्नी की ओर। मैडम ने थोड़े समय बाद राजगीर को ईंटें लेने के लिए बाहर जाते और पति को टहलते हुए कमरे के दूसरे छोर की ओर जाते हुए देखकर अवसर पाया। उन्होंने रोज़ी से कहा—'रोज़ी, मैं तुम्हें एक हज़ार रुपया सालाना दूँगी, अगर तुम राजगीर से इतना कह दो कि दीवार में नीचे की ओर कुछ साँस छोड़ दे।' इसके बाद ऊँचे स्वर में कहा—'जाओ, राजगीर की मदद करो।'

कुछ देर कमरे में निःस्तब्धता छाई रही, राजगीर ईंटें ढोता रहा। काउंट इसलिए चुप थे कि वे नहीं चाहते थे कि बातचीत के सिलसिले में पत्नी को नौकरानी की ओर संकेत करने का कोई अवसर दें। मैडम शायद अभिमानवश चुप थीं। जब दीवार आधी चुन गई तो राजगीर ने काउंट को क्षण भर के लिए पीठ फेरे देखकर, अपनी बसुली अलमारी के शीशे के पल्ले पर मार दी। इससे मैडम को सूचना मिल गई कि रोज़ी ने उनकी आज्ञा मान ली है।

तीनों व्यक्तियों ने एक मनुष्य की सूरत देखी। उसके मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही थीं, उसके काले घुँघराले बाल थे और चमकती हुई आँखें। पति के उस ओर दृष्टिपात करने से पहले ही मैडम ने उस अजनबी को संकेत कर दिया कि बचने की आशा है।

सुबह चार बजे दीवार पूरी हो गई। काउंट पत्नी को लेकर सोने के कमरे में चले गये।

दूसरे दिन सोकर उठने पर काउंट ने लापरवाही से कहा—'पासपोर्ट के लिए मुझे नगर तक जाना पड़ेगा।' काउंट ने हैट उठाई और दरवाज़े की ओर बढ़े, पर दूसरे ही क्षण लौट पड़े। उन्होंने क्रास उठाकर अपनी जेब में रख लिया।

मैडम ख़ुशी से नाच उठीं। 'काउंट जौहरी के पास जा रहे हैं!' मैडम ने सोचा। काउंट के जाते ही उन्होंने रोज़ी को बुलाकर काँपते स्वर में कहा—'झटपट बसूली लाओ, बसूली। जल्दी करो। मैंने राजगीर को प्लास्टर लगाते देखा है। हम लोग जल्दी से दीवाल खोदकर उसे फिर ठीक कर देंगे।

रोज़ी पलक मारते सब सामान ले आई। दोनों ने बड़ी तेज़ी से दीवार खोदनी शुरू की। मैडम कुछ ईंटें निकाल चुकी थी और पूरी ताक़त से दूसरी ईंट निकालने जा रही थीं कि उन्होंने अपने पीछे काउंट को खड़े हुए देखा। वे बेहोश हो गिर पड़ीं।

'मैडम को पलंग पर लिटा दो!' काउंट ने कठोर स्वर में आज्ञा दी। काउंट पहले से ही भाँप गये थे और इसलिए उन्होंने पत्नी के लिए जाल रचा; चिट्ठी लिखकर जौहरी को बुला भेजा, ख़ुद बाहर नहीं गये। कमरे की दीवार फिर ठीक कर दी गई। नौकर ने जौहरी के आने की सूचना दी।

काउंट ने उसे अन्दर बुलाकर पूछा—'क्या तुमने स्पेनिश लोगों से कुछ क्रास ख़रीदे थे?'

'नहीं हुज़ूर!'

'बस यही पूछना था', काउंट ने शेर की तरह भूखी आँखों से पत्नी की ओर निहारते हुए कहा। इसके बाद नौकरानी से कहा—'देखो, जब तक तुम्हारी स्वामिनी बीमार हैं, मैं यहीं रहूँगा। मेरा खाना भी यहीं लाया जाय।'

वह क्रूर काउंट बीस दिन तक अपनी पत्नी के कमरे से टस से मस न हुआ। पहले कुछ दिनों तक अलमारी के अन्दर कुछ शब्द भी हुआ। पत्नी ने बहुत-बहुत अनुनय-विनय की कि एक मरते हुए अजनबी पर दया करो। पर काउंट प्रत्येक बार यह कहकर पत्नी का मुँह बन्द कर देता था :

'तुमने ही तो क्रास हाथ में लेकर क़सम खाई है कि अलमारी में कोई नहीं है।'

——

बूढ़ा तरकारीवाला

(अनातोले फ्रांस, फ्रांस)

[(१८४४-१९२४) आपका वास्तविक नाम जेक्वेस अनातोले थिबाल्ट था। आपके जीवन का अधिकांश भाग पेरिस में बीता और वहीं लगभग ४० वर्ष तक आपने साहित्य-सेवा की। आपने प्राचीन और मध्य युग के जीवन पर कई उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं। आपकी शैली बड़ी ही सरल और व्यंग्य से ओत-प्रोत होती है। आपकी रचनाओं की यह विशेषता है कि उनमें सदैव दार्शनिकता का एक पुट होता है।]

न्यायाधीश की कुर्सी से बोला जानेवाला एक एक शब्द सारे न्यायालय में आतंक छा देता है। बूढ़ा तरकारीवाला जब एक पुलिसमैन का अपमान करने के अपराध में न्यायालय के सम्मुख लाया गया तो उसे भी स्पष्ट रूप से इस आतंक का आभास मिला। कठघरे में खड़ा हुआ, वह उस विषादपूर्ण वातावरण के बीच न्यायाधीशों, क्लर्कों, वकीलों, सशस्त्र पुलिसमैनों तथा रेलिंग के पीछे खड़ी हुई मौन दर्शकों की भीड़ की ओर निहार रहा था। उसका कठघरा कुछ ऊँचाई पर था, मानो न्यायाधीश के सम्मुख लाये जाने के उपलक्ष्य में उसे सम्मान मिला था। सामने दो असेसरों के बीच न्यायाधीश विराजमान थे। बेचारा तरकारी-वाला गुम-सुम खड़ा था। उसके सामने जिस प्रकार से सारी कार्यवाही हुई थी, जिस प्रकार से उसे क़ैद की सज़ा सुनाई गई थी, उससे उसके मन पर न्याय का आतंक और अधिक छा गया था। वह इतना अधिक भयभीत हो गया था कि वह अपने अपराध पर न्यायाधीश के मत तक को सच मानने के लिए तैयार हो गया था। अपने मन में

उसे अपनी निर्दोषिता का पूरी तौर से विश्वास था, परन्तु वह अनुभव कर रहा था कि न्याय की प्रभुता के सामने एक मामूली तरकारीवाले का आन्तरिक विश्वास अमहत्त्वपूर्ण है। उसके वकील ने भी उससे लगभग यह स्वीकार करा लिया था कि वह निर्दोष नहीं है।

सारी घटना के संक्षिप्त वर्णन से अब यह स्पष्ट हो गया था कि उसे किस अपराध के कारण दंड दिया गया है।

अपनी छोटी-सी चार पहियों की गाड़ी ढकेलता हुआ वह बूढ़ा तरकारीवाला सड़कों पर चिल्लाता हुआ फिरा करता था—'आलू! गोभी! शलजम!' बीस अक्टूबर को भी वह इसी प्रकार सड़क पर घूम रहा था, जब एक मोची की दुकान से एक औरत ने निकलकर दो-तीन गोभियाँ हाथ में उठाते हुए कहा—'अच्छी नहीं हैं। क्या भाव दीं?'

'ले लो माई, बड़ी सस्ती हैं। बाज़ार में इससे अच्छी नहीं मिलेंगी। साढ़े सात आने की।'

'तीन गोभियों के साढ़े सात आने?'

उसने मुँह बिचकाकर गोभियाँ गाड़ी में फेंक दीं।

इसी समय कान्सटेबिल नम्बर ६४ ने आकर उस बूढ़े तरकारीवाले से कहा—'आगे बढ़ो।'

वह बेचारा पचास वर्षों से इसी प्रकार सड़क पर चला करता था, कहीं रुकता नहीं था। इसलिए आगे बढ़ने का आदेश उसके स्वभाव के अनुकूल था। वह उसे मानने को तैयार था। उसने अपने ग्राहक से पूछा--'तो फिर क्या कहती हैं?'

'ज़रा देखो, बताती हूँ', मोची की बीबी ने तेज़ स्वर में कहा।

उसने फिर से गोभियाँ टटोलकर देखीं। इसके बाद उसने गाड़ी में से अपनी समझ में सबसे अच्छी तीन गोभियाँ चुन लीं और उन्हें बड़े यत्न से छाती से दबाकर ले चली, जैसे कोई अमूल्य निधि हो।

'मैं तुम्हें सात आने दूँगी। बस इससे ज़्यादा की नहीं हैं। पैसे मेरी जेब में नहीं हैं, मैं दुकान से लाकर देती हूँ।'

गोभियाँ छाती से दबाये हुए वह दुकान के अन्दर चली गई। एक ग्राहक उससे कुछ ही पहले उसकी दुकान के अन्दर गया था।

इसी समय कान्सटेबिल नम्बर ६४ ने उस बूढ़े तरकारीवाले से दुबारा कहा—'आगे बढ़ो!'

'बस, पैसा ले लूँ!' उसने उत्तर दिया।

'मैं तुमसे कहता हूँ, आगे बढ़ो!' कान्सटेबिल ने डाँटकर कहा।

मोची की बीबी अपने ग्राहक को बच्चों के पैर के जूते दिखा रही थी। गोभियाँ सामने संदूकची पर पड़ी थीं।

पचास वर्ष के अनुभव के आधार पर, उस बूढ़े तरकारीवाले के मन में अधिकारियों के प्रति बड़ा आदर-भाव जम गया था। पर इस समय उसकी विचित्र परिस्थिति थी। वह बड़े असमंजस में था कि अपने बाक़ी पैसे लेने के लिए ठहरा रहे या आदेश का पालन करे? वह क़ानून नहीं जानता था। इसलिए वह यह नहीं अनुभव कर सका कि व्यक्तिगत अधिकार प्राप्त होने का यह अर्थ नहीं है कि वह अपने सामाजिक कर्त्तव्य का उल्लंघन करे। उसके मन में गाड़ी ढकेलकर आगे बढ़ने के कार्य की अपेक्षा अपने सात आने पैसे वसूल करना अधिक महत्त्वपूर्ण था। गाड़ी तो वह ज़िंदगी भर से ढकेल रहा था। वह खड़ा रहा।

कान्सटेबिल नम्बर ६४ ने उसे तीसरी बार आज्ञा दी—'आगे बढ़ो।'

कान्सटेबिल नम्बर ६४ का स्वभाव अन्य पुलिसमैनों की भाँति नहीं था जो गरजते अधिक हैं, पर बरसते कम। वह बड़े शांत स्वभाव का था, पर अपने सरकारी कर्त्तव्यों का पालन करने में भी ज़रा भी आलस नहीं करता था।

'क्या तुम सुनते नहीं कि मैं तुमसे कहता हूँ, आगे बढ़ो?'

बूढ़े तरकारीवाले के मन में खड़े रहने का कारण इतना अधिक शक्तिशाली था कि उसे यह आज्ञा फीकी जँची। उसने सरलता से उत्तर दिया—'मैंने बता तो दिया कि अपने पैसे लेने के लिए रुका हूँ।'

कान्सटेबिल नम्बर ६४ ने केवल यही कहा—'तो क्या तुम्हारी इच्छा है कि मैं चालान कर दूँ? अगर यही इच्छा हो तो बतला दो!'

इस पर उस बूढ़े तरकारीवाले ने अपने कंधे हिलाये, और दुखी नेत्रों से पहले कान्सटेबिल की ओर निहारा, फिर आसमान की ओर, जैसे वह कह रहा हो—'परमात्मा जानता है मैंने क़ानून का उल्लंघन नहीं किया। इन नियमों, उपनियमों के बनाने में मेरा हाथ भी नहीं है! सुबह पाँच बजे ही मैं बाज़ार गया था। सात बजे से मैं यह गाड़ी ढकेलता हुआ चल ही रहा हूँ। मेरे हाथ दुखने लगे हैं, पर मैं कहीं रुका नहीं हूँ। मैं अब साठ वर्ष का हो गया हूँ। हाथ-पैर अधिक चलते नहीं। और तुम मुझसे कह रहे हो कि मैंने विद्रोह का झंडा उठाया है। तुम्हारी यह हँसी बड़ी निर्दय है!'

परन्तु कान्सटेबिल ने या तो तरकारीवाले की मुख-मुद्रा नहीं देखी या फिर उसने यह सोचा कि मेरी आज्ञा न मानने का उसका कारण बहुत छोटा है। उसने कर्कश स्वर में कहा—'सुना कि नहीं?'

उस समय सड़क पर बड़ी भीड़ हो रही थी। बग्घियों, मोटरों, लारियों और बोझगाड़ियों का ताँता बँधा था। बूढ़े तरकारीवाले के सड़क पर गाड़ी खड़ी कर देने के कारण सारा आवागमन रुक गया था और मोटरों के ड्राईवर तथा बग्घियों के सईस तरकारीवाले को गालियाँ दे रहे थे।

फ़ुटपाथ पर कांसटेबिल और तरकारीवाले में झगड़ा होते देखकर जनता इकठ्ठी हो गई थी। कांसटेबिल ने जब देखा कि सबकी आँखें उसी पर हैं तो उसने अपने अधिकार का उपयोग करने का निश्चय किया।

अपनी जेब से एक छोटी सी पेंसिल और एक तेल लगी हुई नोटबुक निकालते हुए उसने कहा—'अच्छा!'

तरकारीवाला भी अपनी बात पर अड़ा रहा। इसके अलावा अब उसके लिए अपनी गाड़ी आगे बढ़ा सकना या पीछे हटा सकना भी असंभव हो गया था। एक दूधवाले की गाड़ी के साथ उसकी गाड़ी के पहिये अटक गये थे।

टोपी उठाकर उसने अपने बाल नोचते हुए कहा—'यह अच्छी रही! मैं कह रहा हूँ कि पैसे लेने के लिए रुका हूँ। हाय रे दुर्भाग्य! तुम्हें अपने एक भाई पर दया करनी चाहिए।'

तरकारीवाले के इन शब्दों में विद्रोह की नहीं, दीनता की ही भावना अधिक थी; परंतु कान्सटेबिल नम्बर ६४ ने समझा उसका अपमान किया गया है! और चूँकि क़ानून के अनुसार अपमान कुछ नपे-तुले शब्दो में ही प्रकट किया जाता है, इसलिए कांसटेबिल के मन ने समझ लिया कि उससे कहा गया है—पुलिसमैनों का नाश हो!

'अच्छा, तुमने यह कहा—पुलिसमैनों का नाश हो! बहुत अच्छा। चलो तो मेरे साथ थाने पर!'

बूढ़े तरकारीवाले ने चकित होकर अपनी गड्ढे में धँसी हुई आँखों से कांस्टेबिल को निहारा। दोनों हाथ हवा में हिलाते हुए, अवरुद्ध कंठ से उसने कहा—'क्या? मैंने कहा—पुलिसमैनों का नाश हो! मैंने कहा?......मैंने?'

पास-पड़ोस के दुकानदार और आवारा लड़के तरकारीवाले की गिरफ़्तारी पर हँसने लगे। भीड़ के सब लोगों को यह झगड़ा देखकर बड़ा मज़ा आया। परंतु उस भीड़ में एक बूढ़ा सहृदय मनुष्य था। उसके शरीर पर काला सूट था, किसी सम्भ्रान्त कुल का मालूम पड़ता था। उसने भीड़ चीरते हुए आगे आकर कांस्टेबिल से कहा—'तुम्हारा भ्रम है। इसने तुम्हारा अपमान नहीं किया।'

उसकी रोबीली सूरत देखकर पुलिसमैन ने धीमे स्वर में कहा—'आप अपना काम देखिए !' पर जब वह मनुष्य अपनी बात पर हठ करने लगा तो पुलिसमैन ने कहा—'अच्छा, तो आप भी थाने पर चलकर अपना बयान लिखवा दीजिए।'

बूढ़ा तरकारीवाला पुलिसमैन को समझाने का यत्न कर रहा था—'क्या मैंने यह कहा—पुलिसमैनों का नाश हो ! ओह...'

वह पुलिसमैन से अपना आश्चर्य प्रकट कर रहा था कि मोची की बीबी हाथ में सात आने पैसे लिये हुए दुकान से बाहर आई। लेकिन जब उसने कांस्टेबिल नम्बर ६४ को उस तरकारीवाले की गर्दन पकड़े हुए देखा तो उसने विचारा कि मुझ पर किसी ऐसे आदमी का पैसा नहीं बाक़ी हो सकता जो थाने ले जाया जा रहा है। वह अपने पैसे जेब में रखकर दुकान के भीतर वापस लौट गई।

अपनी गाड़ी को ज़ब्त किये जाते देखकर तरकारीवाले की आँखों के सामने अँधेरा छा गया और उसके मुँह से केवल इतने ही शब्द निकले—'हे ईश्वर !'

थाने पर एक सज्जन मनुष्य ने कहा कि सड़क पर ट्रैफ़िक रुक जाने की वजह से मुझे भी अपनी गाड़ी से उतरना पड़ा और मैंने अपनी आँखों से सारी घटना देखी। पुलिसमैन का अपमान नहीं हुआ है, उसे भ्रम हुआ है। उसने अपना नाम डाक्टर मैथ्यू बताया। और कोई समय होता तो डाक्टर का इतना कहना यथेष्ट समझा जाता, पर उन दिनों फ़्रांस में डाक्टरों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था।

तरकारीवाले को रात भर हवालात में रहना पड़ा। सुबह वह पुलिस की लारी में बिठाकर जेल ले जाया गया।

उसे जेल बहुत बुरी जगह नहीं लगी, बल्कि अच्छी जगह लगी। जेल में उसे सबसे अधिक इस बात ने प्रभावित किया कि वहाँ बहुत सफ़ाई थी।

'ओहो, यहाँ की ज़मीन तो बड़ी चमकती हुई है। मुँह तक दिखाई पड़ता है।'

स्टूल पर बैठकर वह, आश्चर्य-सागर में डूबा हुआ, अपने पैर के अँगूठे की ओर निहार रहा था। जेल का सूनापन उसे खा सा रहा था। समय बीतता ही न था। वह अपनी गाड़ी के बारे में सोचने लगा, जिसमें ढेर भर तरकारी थी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उस गाड़ी का ये लोग क्या करेंगे।

तीसरे दिन उसका वकील जेल में उससे भेंट करने आया।

बूढ़े तरकारीवाले ने वकील को अपनी सारी कथा सुनानी चाही, पर वह इस प्रकार की बातें सुनने का आदी न था। वकील ने उसकी बातों पर सिर हिलाते हुए कहा—'इन बातों का मुक़दमे से कोई संबंध नहीं है।'

इसके बाद उसने कुछ ऊबते हुए अपनी मूँछों की नोकें बटते हुए कहा—'तुम्हारा लाभ इसी में है कि तुम अपना अपराध स्वीकार कर लो। अपराध एकदम अस्वीकार करना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होगा।'

तरकारीवाला प्रसन्नतापूर्वक अपना अपराध स्वीकार करने को तैयार था, पर उसे यह तक मालूम नहीं था कि उसने कौन सा अपराध किया है।

न्यायाधीश ने उस बूढ़े तरकारीवाले से जिरह करने में पूरे छः मिनट व्यय किये। अगर वह पूछे गये प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दे देता तो यह जिरह अधिक सहायक होती। परन्तु तरकारीवाले को इस तरह के वाद-विवाद का अभ्यास नहीं था। इतने बड़े-बड़े आदमियों के सामने भय के कारण उसकी ज़ुबान में ताला लग गया था। वह चुपचाप खड़ा था। न्यायाधीश अपने किये गये प्रश्नों का उसकी ओर से स्वयं उत्तर दे रहे थे। बूढ़ा तरकारीवाला हकलाकर रह जाता था। उसके मुँह से कोई बात

निकलती नहीं थी। न्यायाधीश ने कहा—'तो तुम यह स्वीकार करते हो कि तुमने कहा—पुलिसमैनों का नाश हो!'

'मैंने पुलिसमैनों का नाश हो तब कहा जब पुलिसमैन ने मुझसे कहा कि पुलिसमैनों का नाश हो और मैंने भी फिर कहा पुलिसमैनों का नाश हो।'

बूढ़े तरकारीवाले के इस कथन का यह आशय था कि जब उस पर यह अप्रत्याशित अपराध लगाया गया तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ और उसने भी केवल चकित मुद्रा में उन शब्दों को दुहरा दिया, जो उसने कभी नहीं कहे थे।

लेकिन न्यायाधीश ने दूसरा ही अर्थ लिया। 'तो क्या तुम कहना चाहते हो कि पुलिसमैन ने ही पहले ये शब्द कहे?' न्यायाधीश ने प्रश्न किया।

बूढ़ा तरकारीवाला हार गया। उसे अपनी बात समझा सकना बड़ा कठिन मालूम हुआ।

'तो तुम अपनी बात पर स्थिर नहीं हो। ठीक है।' न्यायाधीश ने गवाहों को ले आने की आज्ञा दी।

कांसटेबिल नम्बर ६४ ने, जिसका नाम मैटरा था, यह शपथ खाई कि मैं केवल सत्य बोलूँगा, सत्य के अलावा और कुछ नहीं कहूँगा। इसके बाद उसने निम्न गवाही दी—

'२० अक्टूबर को मैं दुपहर में अपनी ड्यूटी पर था। इसी समय अपनी गाड़ी से रास्ता रोकता हुआ यह तरकारीवाला प्रकट हुआ। मैंने इसे रास्ता छोड़ देने की चेतावनी तीन बार दी, पर इसने मेरी आज्ञा नहीं मानी। जब मैंने इसे चेतावनी दी कि मैं तुम्हारा चालान करने जा रहा हूँ तो इसने उत्तर में चिल्लाकर कहा—पुलिसमैनों का नाश हो! इस तरह इसने मेरा अपमान किया।'

पुलिसमैन ने नम्र पर दृढ़ स्वर में अपनी गवाही दी थी, जिससे प्रभावित होकर न्यायाधीश ने विश्वास के भाव से सिर हिलाया। बूढ़े तरकारीवाले की तरफ़ से दो गवाह थे, एक तो मोची की बीबी, दूसरे डाक्टर मैथ्यू। मोची की बीबी ने कहा कि मैंने कुछ नहीं देखा, न कुछ सुना ही। डा० मैथ्यू भीड़ में थे, जब पुलिसमैन तरकारीवाले को आज्ञा दे रहा था कि अपनी गाड़ी आगे बढ़ाओ। उनकी गवाही से मुक़दमे ने पलटा खाया।

डाक्टर ने कहा—'मैंने सारी घटना अपनी आँखों से देखी। मैंने देखा पुलिसमैन को भ्रम हुआ, उसका अपमान नहीं किया गया था। मैंने उससे यह बात कही। लेकिन वह तरकारीवाले को गिरफ़ार करने के लिए तुला हुआ था। उसने मुझसे कहा कि अपना बयान थाने में लिखाओ। मैं थाने में गया। वहाँ भी मैंने यही बयान दिया।'

न्यायाधीश ने डाक्टर मैथ्यू से कहा कि आप बैठ जाइए और आज्ञा दी कि पुलिसमैन को दुबारा हाज़िर किया जाय।

'क्यों मैटरा, जब तुम अभियुक्त को गिरफ़ार करने जा रहे थे तो डा० मैथ्यू ने क्या तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम भ्रम में हो?' न्यायाधीश ने प्रश्न किया।

'आपका आशय है कि इस भ्रम में कि उसने मेरा अपमान किया।'

'उन्होंने क्या कहा?'

उन्होंने कहा—'पुलिसमैनों का नाश हो।'

दर्शकों की भीड़ ने ठहाका मारा।

'तुम जा सकते हो', न्यायाधीश ने शीघ्रता से आज्ञा दी।

न्यायाधीश ने जनता को चेतावनी दी कि अगर वह फिर ऐसा अनुचित व्यवहार करेगी तो उसे न्यायालय से बाहर कर दिया जायगा। इस बीच सफ़ाई-पक्ष के वकील अपने कोट की बाँहें चढ़ाते हुए पैतरे

बदलते रहे। उस समय यह आशा होने लगी थी कि बूढ़ा तरकारीवाला रिहा हो जायगा।

शान्ति हो जाने पर बूढ़े तरकारीवाले के वकील उठ खड़े हुए। अपने वक्तव्य के प्रारंभ में उन्होंने पुलिसमैनों की तारीफ़ की—'ये लोग समाज के मूक सेवक हैं। छोटे से वेतन के बदले में वीरतापूर्वक हर घड़ी ख़तरे का सामना करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन किया करते हैं। ये लोग सच्चे सैनिक हैं और रहेंगे। 'सच्चे सैनिक' इस शब्द से मेरा सारा आशय व्यक्त हो जाता है......।'

इसके बाद उन्होंने सैनिकों के गुणों का बखान किया। 'मैं उन आदमियों में से हूँ', उन्होंने कहा—'जो सेना की ओर किसी का उँगली तक उठाना गवारा नहीं कर सकते। मुझे गर्व है कि मैं भी इसी राष्ट्रीय सेना का सदस्य हूँ।'

यहाँ पर न्यायाधीश तक ने आदर से उन्हें सिर झुकाया। वकील साहब रिज़र्व-सेना में एक लेफ्टिनेंट थे। वे पार्लिमेंट की सदस्यता के उम्मीदवार भी थे। उन्होंने कहा—'मैं इनकी सेवाओं का मूल्य रत्ती-भर भी कम करके नहीं आँकता। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि किस प्रकार दिन भर ये शान्ति के दूत सारे नगर की जनता की सेवा किया करते हैं। अगर मुझे ज़रा भी विश्वास होता कि मेरे मुवक्किल ने नगर के एक ऐसे सच्चे सेवक का अपमान किया है तो मैं कभी उसकी ओर से सफ़ाई देने के लिए खड़ा न होता। मेरे मुवक्किल पर यह अभियोग है कि उसने कहा : पुलिसमैनों का नाश हो! इसका अर्थ स्पष्ट है।* पर प्रश्न यह है, क्या मेरे मुवक्किल ने ये शब्द कहे भी? मुझे संदेह है।'

---

* यहाँ पर उन्होंने इस वाक्य के एक-एक शब्द के अर्थ की व्याख्या कहा।

'आप यह न समझें कि मुझे कांस्टेबिल की सचाई में संदेह है। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि उसका कर्त्तव्य बड़ा कठोर है। बहुधा अपने कर्त्तव्य का पालन करते-करते वह परेशान हो जाता है, थक जाता है। ऐसी अवस्था में यह संभव है, उसे भ्रम हुआ हो। यहाँ न्यायालय में भी जब उससे प्रश्न किया गया कि डाक्टर मैथ्यू ने तुमसे क्या कहा तो उसके मुँह से निकल पड़ा कि उन्होंने कहा—'पुलिसमैनों का नाश हो!' इससे हम यह विश्वास करने के लिए विवश हो जाते हैं कि कांस्टेबिल को भ्रम हुआ है।

'और अगर बूढ़े तरकारीवाले ने कहा भी हो: पुलिसमैनों का नाश हो! तो यह साबित किया जाना शेष रह जाता है कि अभियुक्त के मुख से निकले हुए शब्द अपराध-स्वरूप हैं। अभियुक्त एक कुँजड़ा है और शराब पीने की लत के कारण उसके दिमाग़ की नसें ढीली पड़ गई हैं। आप ख़ुद देख सकते हैं कि उसके चेहरे पर साठ साल की ग़रीबी की मार की छाप है। ऐसी दशा में, सज्जनो, आपको मानना पड़ेगा कि वह एक ऐसा आदमी है, जिसके होश-हवास दुरुस्त नहीं रहते।'

वकील साहब अपना वक्तव्य समाप्त करके बैठ गये। न्यायाधीश ने एक वाक्य में अपना निर्णय सुना दिया। बूढ़े तरकारीवाले को पचास रुपये जुर्माना और पंद्रह रोज़ क़ैद की सज़ा दी गई थी। यह सज़ा कांस्टेबिल की गवाही के आधार पर दी गई थी।

जब बूढ़ा तरकारीवाला जेलख़ाने ले जाया जा रहा था, उसके मन में बड़ी सहानुभूति उमड़ रही थी। अपने साथ के सिपाही को उसने तीन बार पुकारकर कहा—ज़रा सुनना।

कोई उत्तर न मिलने पर उसने एक साँस भरकर कहा—'अगर कोई मुझे पंद्रह रोज़ पहले ही बता देता कि यह घटना घटेगी।'

इसके बाद उसने सोचते हुए कहा—'ये लोग कितनी जल्दी-जल्दी बोलते हैं। बोलते तो अच्छा हैं, पर बड़ी जल्दी-जल्दी बोलते हैं। अपनी बात तो उन्हें समझाई ही नहीं जा सकती...क्यों

भाई, क्या तुम्हारा भी यह ख़याल नहीं है कि ये लोग बड़ी जल्दी-जल्दी बोलते हैं ?

सिपाही उसकी ओर देखे बग़ैर अपने रास्ते चलता रहा।

तरकारीवाले ने पूछा—'तुम मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते ?'

सिपाही फिर भी मौन रहा। इस पर तरकारीवाले ने कर्कश स्वर में कहा—'तुम लोग कुत्तों से बोल सकते हो, मुझसे नहीं ! क्यों ? क्या तुम्हारे मुँह में दही जमा है ?'

सज़ा की आज्ञा सुनाई जाने के बाद कुछ दर्शक और दो-तीन वकील उठकर न्यायालय से बाहर चले गये। क्लर्क ने दूसरा मुक़दमा पेश कर दिया था। जो लोग बाहर चले आये थे, उन्हें तरकारीवाले का मामला मनोरंजक न मालूम हुआ था, इसलिए उसका ध्यान तक उनके मन से उतर गया था, परन्तु दर्शकों में एक शिल्पकार भी था। उसने मुक़दमे की सारी कार्यवाही पर गंभीरतापूर्वक विचार किया। अपने एक मित्र के कंधे पर हाथ रखते हुए उसने कहा—

'न्यायाधीश को इस बात पर तो बधाई देनी चाहिए कि उन्होंने अपने मन में व्यर्थ का वह कौतूहल अथवा पांडित्य नहीं जागने दिया, जो सारी चीज़ों की खोज-बीन करके सच्ची बात जानने के लिए प्रेरित करता है। अगर उन्होंने कांसटेबिल और डाक्टर की परस्पर-विरोधी गवाहियों पर विचार किया होता तो वे बस संदेह ही में पड़े रह जाते। अगर न्यायाधीश लोग सच्ची बातों की खोज-बीन में दत्तचित्त हो जायँ तो न्याय करने का कार्य कठिन हो जाय। ऐसी अवस्था में न्यायाधीशों को सारा निर्णय अपनी ही बुद्धिमत्ता के अनुसार करना पड़े; परन्तु संसार में बुद्धिमत्ता कम है, अबुद्धिमत्ता अधिक। तो फिर किस आधार पर न्याय किया जाय ? प्रचलित प्रणाली से चलने पर न्यायाधीश का निर्णय कभी भी निस्संदिग्ध नहीं हो सकता। यहाँ सर वाल्टर रैले की कहानी याद आती है।

'लंदन के जेलखाने में अपनी कोठरी में बैठे हुए एक दिन सर वाल्टर रैले अपने संसार के इतिहास का दूसरा भाग लिख रहे थे। उन्होंने खिड़की से नीचे सड़क पर झगड़ा होते देखा। वे खड़े होकर झगड़ा करनेवालों को देखते रहे। इसके बाद जब वे दुबारा अपनी मेज़ पर आकर बैठे तो उन्हें विश्वास था कि उन्होंने सब बातें ध्यान-पूर्वक देखी हैं। दूसरे दिन उन्होंने अपने एक मित्र से झगड़े की घटना का बयान किया। उसने झगड़े को केवल दूर से देखा ही न था, उसमें शामिल भी था। उसने झगड़े का जो बयान दिया, वह उनके बयान के बिलकुल विपरीत था। इस पर उन्होंने यह विचारा कि मेरी आँखों के सामने जो घटना घटी उसे बयान करने में तो मुझसे ग़लती हो गई। अतीत काल के इतिहास की घटनाओं की सत्यता की जाँच करना तो और भी कठिन है। और उन्होंने अपना सारा मैन्सक्रुप्ट (इतिहास की पाण्डुलिपि) आग में फेंक दिया।

'अब अगर न्यायाधीश लोग भी सर वाल्टर रैले की भाँति सोच-विचार में पड़े रहें तो उन्हें भी अपने सारे काग़ज़ आग में जला देने पड़ेंगे। पर ऐसा करने का उन्हें अधिकार नहीं है। ऐसा करने से तो वे न्याय का काम रोक लेंगे, अपराधी ठहराये जायँगे। हम लोग चाहे यह अच्छी तरह समझ लें कि सच्ची बात जानना अति कठिन है, पर न्याय का कार्य तो नहीं रोका जा सकता। जो लोग यह कहते हैं कि न्यायालयों में सच्ची बातों की छान-बीन करने के बाद निर्णय दिये जाने चाहिएँ, वे बड़े ख़तरनाक हैं और नागरिक तथा सैनिक, दोनों ही प्रकार के न्याय के शत्रु हैं। हमारे न्यायाधीश क़ानून के ज्ञाता हैं, इसलिए उन्होंने अपने निर्णय को सचाई पर आधारित करने का प्रयत्न नहीं किया; क्योंकि सचाई सदा संदिग्ध रहती है। उन्होंने अपना निर्णय परम्पराओं के अनुसार दिया, जो निश्चित है। कुछ चुनी हुई धाराएँ हैं, जिनके अन्दर वे अपना निर्णय देते हैं। तुम ख़ुद देख लो; उन्होंने किस प्रकार से गवाहियों का वर्गीकरण किया। सचाई आदि के अनुसार नहीं; क्योंकि

वह संदिग्ध हो सकती है, बल्कि क़ानून की धाराओं के अनुसार! क्या इससे सरल मार्ग और कोई हो सकता है? उनके लिए तो पुलिसमैन की गवाही पत्थर की लकीर थी; क्योंकि उनकी दृष्टि में वह साधारण व्यक्ति नहीं था, जिससे ग़लतियाँ हो सकती हैं, बल्कि कांसटेबिल नम्बर ६४ था, आदर्श पुलिस-दल का एक सदस्य। उनका यह विचार नहीं था कि मैटरा से ग़लती हो नहीं सकती। पर उन्होंने जिस व्यक्ति की गवाही पर विचार किया वह मैटरा नहीं था, पर कांसटेबिल नम्बर ६४ था। उनके विचारानुसार एक मनुष्य से ग़लती हो सकती है, परन्तु एक आदर्श वस्तु से नहीं। मैटरा ग़लती कर सकता है, पर कांसटेबिल नम्बर ६४ नहीं; क्योंकि वह व्यक्ति नहीं है, एक आदर्श वस्तु का अंग है। आदर्श वस्तु और मनुष्य में कोई समानता नहीं होती। आदर्श वस्तु वह ग़लतियाँ नहीं कर सकती, जो मनुष्य से संभव है। आदर्श वस्तु सदा पवित्र और अपरिवर्त्तनशील रहती है। इसी लिए न्यायाधीश ने डाक्टर मैथ्यू की गवाही अस्वीकार कर दी; क्योंकि वे एक व्यक्ति थे, पर कांसटेबिल नम्बर ६४ की गवाही स्वीकार कर ली; क्योंकि वह एक आदर्श वस्तु का भाग था।

'इस तरह के तर्क द्वारा हमारे न्यायाधीश ग़लतियों से परे हो गये हैं। जब एक सिपाही गवाही देता है तो उनकी दृष्टि आदमी पर नहीं रहती, पर उसकी कमर में लटकती हुई तलवार पर रहती है। आदमी ग़लती कर सकता है, पर तलवार कभी ग़लती नहीं करती। हमारे न्यायाधीश क़ानून की आत्मा को अच्छी तरह पहचानते हैं। समाज की नींव पशु-बल पर है। इसलिए हमें पशुबल का आदर करना चाहिए। न्याय भी पशुबल का एक अंग है। हमारे न्यायाधीश अच्छी तरह जानते थे कि कांसटेबिल नम्बर ६४ सरकार का एक अंग है। सरकार अपने अफ़सरों में ही निवास करती है। कांसटेबिल नम्बर ६४ के अधिकार को क्षीण करने के मानी थे सरकार को क्षीण करना।

'राज्य की सभी तलवारों का मुख एक ही ओर फिरा रहता है। उनमें से एक का भी विरोध करना समूचे प्रजातंत्र को नष्ट करने का षड्यंत्र करना है। इस कारण बूढ़े तरकारीवाले को अगर कांसटेबिल नम्बर ६४ की गवाही पर ५०) रुपये जुर्माना और पन्द्रह रोज़ क़ैद की सज़ा दी गई तो उचित ही किया गया। मुझे मालूम पड़ता है जैसे न्यायाधीश स्वयं मुझसे बता रहे हैं कि उन्होंने किन कारणों से तरकारीवाले को दंड दिया। वे कह रहे हैं—

' "मैंने इस व्यक्ति के अपराध का निर्णय कांसटेबिल नम्बर ६४ की गवाही पर किया; क्योंकि कांसटेबिल नम्बर ६४ राज्यशक्ति का ही एक अंग है। अगर तुम मेरे निर्णय की बुद्धिमत्ता जानना चाहते हो तो कल्पना करो कि अगर मैंने इसके विपरीत निर्णय किया होता तो उसका क्या परिणाम होता। तुम देखोगे कि बड़ी विचित्र परिस्थिति होती। अगर मेरा निर्णय इसके विपरीत जाता तो उसे पूरा कौन करता? तुम देखो कि न्यायधीशों की आज्ञा का पालन तभी होता है, जब राज्य-शक्ति भी उनके पक्ष में होती है। बिना पुलिसमैन के न्यायाधीश पंगु है। अगर मैं यह स्वीकार कर लेता कि पुलिसमैन ने ग़लती की है तो मैं अपनी ही हानि करता। इसके अलावा, क़ानून की आत्मा भी इसके विरुद्ध है। बलवानों को निर्बल बनाकर निर्बलों को बलवान् बनाने के अर्थ हैं वर्त्तमान सामाजिक संगठन में उलट-फेर करना। परन्तु मेरा तो कर्त्तव्य है कि मैं वर्त्तमान सामाजिक संगठन को बनाये रक्खूँ। स्थापित अन्याय की स्वीकृति ही न्याय है। क्या न्याय ने कभी विजेताओं और विद्रोहियों का विरोध किया है? जब किसी अन्यायपूर्ण शक्ति का उदय होता है तो वह न्याय अपने शासन में करके न्यायपूर्ण बन जाता है। अब यह तरकारीवाले पर था कि वह बलवान् होता। अगर 'पुलिसमैनों का नाश हो!' की आवाज़ लगाने के बाद वह अपने को सम्राट्, डिक्टेटर, प्रजातंत्र का प्रेसीडेंट या नगर की म्युनिसपलटी का सदस्य ही घोषित कर देता तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उसे पचास रुपया जुर्माना और

पन्द्रह रोज़ क़ैद की सज़ा न देता। मैं उसे रिहा कर देता। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ।"

'मुझे विश्वास है, न्यायाधीश के मुख से ऐसे ही कुछ शब्द निकलते; क्योंकि वे क़ानून के ज्ञाता हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि समाज एक न्यायाधीश से क्या आशा करता है। न्यायाधीश सामाजिक सिद्धान्तों की रक्षा नियमपूर्वक करता है। न्याय भी एक सामाजिक कर्म है। जिनका दिमाग़ फिर गया है, वे ही यह कहने का साहस कर सकते हैं कि न्याय का मूलाधार मानवता और औचित्य होना चाहिए। न्याय सुनिश्चित सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है, भावनाओं अथवा विवेक-शीलता के आधार पर नहीं। यह तो कभी आशा करनी ही नहीं चाहिए कि न्याय उचित भी हो। उसे उचित होने की आवश्यकता भी नहीं, क्योंकि वह न्याय है। मैं तो यह कहूँगा कि उचित न्याय की भावना अराजकता-वादियों के मस्तिष्क की उपज है। सच यह है कि हमारे न्यायाधीश सदा उचित दंड देते हैं। अगर वे अपनी आज्ञा बिलकुल बदल दें तो भी वह न्यायपूर्ण ही रहती है।

'चतुर न्यायाधीश गवाहियों का मूल्यांकन सभ्यता के बटखरे से नहीं करते, बल्कि शस्त्रबल के बटखरे से। जो अधिक बलवान् होते हैं उन्हीं की गवाहियाँ सत्य मानते हैं। बूढ़े तरकारीवाले के मुक़दमे में भी वही हुआ जो सब मुक़दमों में होता है।'

शिल्पकार यह कहकर विचारमग्न मुद्रा में टहलने लगा।

उसके मित्र ने अपनी नाक खुजलाते हुए कहा—'अगर तुम मेरा मत जानना चाहते हो तो मैं कहूँगा कि न्यायाधीश ने अपने मन में इस प्रकार का दार्शनिक विवेचन नहीं किया था। मेरे विचार में तो वे क़ानून की धाराओं तथा परंपराओं के अनुसार कांसटेबिल नम्बर ६४ की गवाही को सत्य मानने के लिए बाध्य थे। आदमी स्वयं भी वही करता है, जो दूसरे करते हैं। सम्मानित व्यक्ति वही है जो परंपराओं का पालन करता है।'

बूढ़ा तरकारीवाला जेलखाने की अपनी कोठरी में वापस लौटकर उसी स्टूल पर दुबारा बैठ गया। उसके मन में आश्चर्य और आतंक छाया था। वह स्वयं निश्चय-पूर्वक नहीं कह सकता कि न्यायाधीश ने ग़लती की थी! न्यायालय की कमज़ोरियाँ उसके आतंकपूर्ण वातावरण के पीछे छिप गई थीं। उसे विश्वास नहीं होता था कि न्यायाधीश के बजाय उसकी अंतरात्मा की आवाज़ सत्य है, उसके लिए यह विचार सकना असंभव था कि न्यायालय की परंपरा-बद्ध कार्यवाही में कोई ग़लती हो सकती है। वह कभी गिरजाघर भी नहीं गया था, इसलिए उसने अपने जीवन भर में न्यायालय के समान कोई प्रभुत्वपूर्ण दृश्य नहीं देखा था। उसे यह अच्छी तरह पता था कि उसने कभी यह नहीं कहा था कि 'पुलिसमैनों का नाश हो!' और केवल इतना कहने के लिए उसे पंद्रह रोज़ की क़ैद हो सकती है, यह उसके लिए महान् रहस्य था। फिर भी जब दंड के अनुसार उसने यह कहा था कि 'पुलिसमैनों का नाश हो', तो उसने अवश्य ही किसी रहस्यपूर्ण ढंग से कहा होगा, 'पुलिसमैनों का नाश हो!' उसने स्वयं न सुना होगा। वह जैसे एक अलौकिक संसार में पहुँचा दिया गया था।

अपने दंड के संबंध में तो वह और भी अंधकार में था। उसे अपना यह दंड एक धार्मिक कृत्य की भाँति रहस्य-पूर्ण मालूम पड़ रहा था। अगर इस समय उसकी आँखों के सामने स्वयं न्यायाधीश भी सफेद पंख लगाये और अपने सिर के पीछे एक प्रकाश-पुंज साथ लिये हुए कोठरी की छत से उतर आते तो उसे न्यायाधीश की महत्ता की इस नवीन अभिव्यक्ति पर कोई आश्चर्य न होता। उसके मुँह से केवल यही निकलता, 'मेरे अपराध पर विचार किया जा रहा है।'

दूसरे दिन उसका वकील उसे देखने आया।

'दुखी होने की कोई बात नहीं', वकील ने उससे कहा—'पंद्रह रोज़ तो बड़ी जल्दी बीतेंगे। सस्ते ही छूटे।'

'न्यायालय के सभी लोगों ने बड़ी नम्रता दिखाई, एक कटु शब्द तक नहीं कहा। मैंने कल्पना भी नहीं की थी।'

'अपना अपराध स्वीकार कर तुमने अच्छा ही किया!'

'शायद!'

'मैं एक ख़ुशख़बरी लाया हूँ। एक उदार सज्जन से मैंने तुम्हारी ओर से प्रार्थना की थी। उन्होंने पचास रुपये दिये हैं। अब तुम्हारा जुर्माना अदा हो जायगा।'

'रुपया कब मिलेगा?'

'कल अदालत में जमा हो जायगा। तुम अब चिंता मत करो।'

'मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ।' इसके बाद उसने धीमे से बुदबुदाकर कहा—'यह मेरे साथ एक असाधारण बात हुई है।'

'नहीं जी, ऐसा हुआ ही करता है।'

'अच्छा! आपने यह नहीं बताया कि मेरी गाड़ी कहाँ रक्खी गई है।'

जेलख़ाने से छूटने के बाद बूढ़ा तरकारीवाला अपनी गाड़ी सड़क पर ढकेलता हुआ फिर चिल्लाने लगा—'आलू! गोभी! गाजर!' उसे अपने जेल जाने की न तो लज्जा ही थी, न गर्व। जेल की स्मृति भी दुःखद नहीं थी। वह इस स्मृति को भी उसी श्रेणी में रखता था, जिस श्रेणी में सुखद स्वप्नों और भावनाओं की स्मृति। उसे सबसे बड़ी प्रसन्नता यह थी कि वह फिर सड़कों पर घूम रहा था और उसके सिर पर नगर का प्रिय आकाश था। जब-तब गाड़ी रोककर वह पानी से अपना गला तर कर लेता था, इसके बाद दूने उत्साह से गाड़ी ढकेलता हुआ आगे बढ़ता था। एक बूढ़ी मज़दूरनी ने, जो उससे अच्छी तरह परिचित थी, उसे देखकर पूछा—'कहाँ रहे, तुम? तीन हफ़्ते से नहीं दिखाई पड़े। क्या बीमार थे? तुम्हारा चेहरा कुछ पीला पड़ गया है।'

'मुझे जेल हो गई थी।'

उसके जीवन में इसके सिवा और कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ कि अब वह शाम को कलवरिया के यहाँ जा बैठता था और वहाँ ग़प-शप लगाता था। रात को वह जब अपनी कोठरी में आता तो बड़ा प्रसन्न रहता था। चटाई पर बोरे बिछाकर वह लेट जाता था। ये बोरे उसने एक मेवेवाले से ख़रीदे थे और उसके लिए लिहाफ़ का काम देते थे। वह उन बोरों के अन्दर घुसकर लेटा हुआ सोचा करता—'जेल का जीवन बहुत बुरा नहीं था। वहाँ सभी आवश्यक चीज़ें मिल जाती थीं। फिर भी घर अच्छा है।'

लेकिन उसका यह संतोषपूर्ण जीवन अधिक दिन तक नहीं चला। शीघ्र ही उसने देखा कि उसके ग्राहकों का रुख़ बदल गया है।

'बड़ा अच्छा गाजर है, मालकिन!'

'नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।'

'तो फिर आजकल क्या आप हवा खाती हैं?'

मज़दूरनी बिना कुछ कहे हुए भठियारे की दूकान की ओर चली गई, जहाँ वह नौकर थी। वही दूकानदार, जो पहले उसे देखते ही उसकी गाड़ी पर टूट पड़ते थे, अब उसे देखकर मुँह फेर लेते थे। मोची की दूकान पर पहुँचकर, जहाँ उसका पुलिसमैन से झगड़ा हुआ था, उसने भीतर झाँककर पुकारा—'मालकिन, मेरे पिछले सात आने पैसे बाक़ी हैं।'

मोची की बीबी ने उसकी ओर निहारा तक नहीं।

सारे बाज़ार को मालूम हो गया था कि वह बूढ़ा तरकारीवाला जेल हो आया है और अब सब लोग उससे मुँह फेरते थे। उसके सज़ायाफ़्ता होने की ख़बर बाज़ार तक ही नहीं, दूर-दूर के मुहल्लों तक फैल चुकी थी। एक दिन दोपहर को उसने एक मज़दूरनी को, जो सदा उससे ही तरकारी लिया करती थी, एक दूसरे तरकारीवाले की गाड़ी पर झुकी हुई देखा। वह गोभियों का मोल-भाव कर रही थी। उसके बाल धूप में सुनहले होकर चमक रहे थे। वह छोकरा तरकारीवाला क़समें खा

रहा था कि इससे अच्छी गोभियाँ बाज़ार भर में नहीं मिलेंगी। इस दृश्य पर उसके दिल को बड़ी चोट लगी। वह अपनी गाड़ी भी उस छोकड़े के बग़ल में ले जाकर मज़दूरनी से बोला—'यह तो तुम्हें शोभा नहीं देता।'

मज़दूरनी ने जवाब दिया कि वह लाचार है। वह समाज से बाहर थोड़े ही है, जेल काट आये व्यक्ति के साथ जैसा व्यवहार और लोग करते हैं, वैसा ही वह भी करती है। आदमी चाहे तो सदा चार आदमियों में मुँह दिखाने लायक़ जीवन व्यतीत कर सकता है। सबों को अपनी नाक प्यारी होती है। कोई भी यह पसन्द नहीं करता कि वह एक जेल से लौटे हुए व्यक्ति से व्यवहार रक्खे। मज़दूरनी ने उस पर एक घृणा की दृष्टि डाली। वह इस अपमान से आहत हो उठा।

'जा, भाग जा! बड़ी आई वहाँ से डाइन!' उसने चिल्ला-कर कहा।

मज़दूरनी के हाथ से गोभियाँ गिर पड़ीं। उसने भी उसी प्रकार चीख़कर कहा—वाह रे बुड्ढे! एक तो जेल काटकर आया, ऊपर से दूसरों को आँखें दिखाता है!'

अगर वह बूढ़ा तरकारीवाला उस समय अपने वश में होता तो उस मज़दूरनी पर बिगड़ता नहीं। वह अच्छी तरह जानता था कि मनुष्य अपने भाग्य का विधाता नहीं होता। दुनिया में भले आदमी भी होते हैं। वह किसी से घृणा नहीं करता था। पर इस समय वह आपे से बाहर था। उसने उस मज़दूरनी को डाइन, रंडी इत्यादि कहा। तमाशबीनों की एक भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठा हो गई। गाली-गलौज और बढ़ गई। ऐसा मालूम पड़ता था, दोनों पक्ष शब्दकोष के सारे शब्दों को समाप्त कर देंगे। इसी समय भीड़ में एक पुलिसमैन प्रकट हुआ और वे दोनों चुप हो गये। भीड़ भी छँट गई। वे दोनों अपने-अपने रास्ते चले गये। उस दिन से वह बूढ़ा तरकारीवाला लोगों की दृष्टि में और अधिक गिर गया।

बूढ़ा तरकारीवाला बड़बड़ाता हुआ चला जा रहा था—'वह पूरी लङ्का है, बिलकुल लङ्का है !'

लेकिन उसके अन्तस्तल में उस मज़दूरनी के प्रति कोई क्रोध नहीं था। उसके इस चंडिका-रूप पर उसके मन में घृणा नहीं थी। इसके विपरीत एक प्रकार का आदर-भाव था; क्योंकि वह जानता था कि उसका जीवन बड़े कष्ट से बीता है। एक बार दोनों ने एक दूसरे से घुल-मिलकर बातें की थीं। वह अपने घर का हाल उससे बताया करती थी। एक गाँव की रहनेवाली थी। दोनों ने निश्चय किया था कि एक छोटे-से बाग़ में मुर्ग़-मुर्ग़ी पालकर अंडे बेचने का व्यवसाय करेंगे। वह बड़ी सीधी औरत थी। आज उस छोकड़े से उसे तरकारी ख़रीदते हुए देखकर उसके बदन में आग लग गई। और उसने जब उससे घृणा करने की बात कही तब तो उसका ख़ून उबल पड़ा......!

लेकिन एक वही उससे घृणा न करती थी। भठियारे की नौकरानी से लेकर मोची की बीबी तक उससे घृणा करती थीं। सारा समाज उससे कोई संबंध रखने को तैयार नहीं था।

अगर उसने पंद्रह रोज़ जेलख़ाने में काटे हैं तो क्या अब वह तरकारी बेचने योग्य भी नहीं रह गया ? क्या यह उचित है कि एक ज़रा-सी बात के लिए ऐसे अच्छे आदमी को भूखों मरने दिया जाय ? अगर उसे तरकारी न बेचने दिया गया तो फिर वह कहीं का न रहा। एक बार उस मज़दूरनी से गाली-गलौज होने के बाद अब उसकी हर एक से कहा-सुनी हो जाती थी। वह ज़रा-सी बात पर अपने ग्राहकों से बिगड़ जाता था और पूछ बैठता था, तुम मुझे क्या समझते हो ? अगर वे कहते कि उसकी तरकारी अच्छी नहीं है तो वह उनके मुँह पर उन्हें भला-बुरा कहने लगता था। कलवरिया के यहाँ भी वह अपने साथियों पर ग़ुर्रा बैठता था। उसका दोस्त मेवेवाला अब उसे पहचानता नहीं था। उसका कहना था, अब बूढ़ा तरकारीवाला जंगली जानवर बन गया है। यह बिलकुल सत्य था। वह दिनोंदिन उग्र, चिड़चिड़े मिज़ाज का और बद-

ज़ुबान होता जाता था। वास्तविक बात यह थी कि वह धीरे-धीरे समाज की बुराइयों को देखने लगा था, पर वह नीतिशास्त्र का कोई पंडित नहीं था कि समाज की बुराइयों तथा सुधार की आवश्यकताओं के संबंध में अपने विचार संयत भाषा में प्रकट कर सकता। उसके विचार बिना किसी क्रम के और असंयत भाषा में प्रकट होते थे।

अपने दुर्भाग्य से पीड़ित होकर वह दिनोंदिन उच्छृंखल होता जाता था। वह अपना बदला अब उन लोगों से लेता था जो उसके शुभेच्छु थे या उससे निर्बल थे। एक दिन उसने कलवरिया के लड़के को ज़ोरों से तमाचा मार दिया; क्योंकि उसने उससे पूछा था कि जेल जाते हुए कैसा लगता था। तरकारीवाले ने उसके झापड़ रसीद करते हुए कहा—'सुअर! जेल तो तेरे बाप को जाना चाहिए, जो ज़हर बेच-बेचकर अमीर हो गया है।'

यह काम उसने अच्छा नहीं किया था। मेवेवाले का यह कहना ठीक ही था कि उसे बालक को मारना न चाहिए था, न उसके बाप को गाली ही देनी चाहिए थी; क्योंकि अपने बाप का चुनाव करने में उसका कोई वश नहीं था।

वह अब शराब बहुत अधिक पीने लगा। आमदनी कम होती जाती थी, शराब बढ़ती जाती थी। पहले वह बड़ा संयमी था। उसे स्वयं अपने परिवर्त्तन पर आश्चर्य होता था।

'पहले मैं इस तरह पैसा नहीं बहाता था',—उसने सोचा—'क्या बूढ़ा होने से आदमी सठिया जाता है!'

कभी-कभी अपने दुर्व्यवहार के लिए वह अपनी तीव्र भर्त्सना करता—'तुम दुनिया में किसी काम के नहीं हो। बस शराब के नशे में डूबे रहते हो!'

कभी-कभी वह अपने को धोखा देकर यह सोचता कि उसे शराब की आवश्यकता है।

'शराब मुझे चाहिए ही। ताक़त लाने के लिए मुझे एक गिलास चाहिए ही। ऐसा मालूम पड़ता है, मेरे अंदर एक आग जला करती है और उसे बुझाने के लिए शराब से बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है।'

बहुधा ऐसा होता कि वह सुबह नीलाम के वक्त नहीं पहुँच पाता और उसे उधार पैसों पर सड़ी-गली तरकारियों से ही संतोष करना पड़ता। एक दिन उसे बहुत अधिक थकान और निराशा मालूम पड़ी। वह अपनी गाड़ी मंडी में ही सायबान के नीचे छोड़कर दिन भर गोश्तवाले और शराबवाले की दुकान के चारों ओर भटकता रहा। शाम को वह एक डलिया पर बैठकर विचार करने लगा कि उसका कितना पतन हो गया है। उसे अपने पुराने दिनों की याद आई। वह कितना बलवान् था! हँसते, काम करते दिन बीत जाता था; कुछ पता ही न चलता था। सुबह अँधेरे से ही उठकर मंडी पहुँच जाता था; और नीलाम होने की प्रतीक्षा किया करता था। किस उत्साह से अपनी गाड़ी में तरकारियाँ सजा-सजाकर रखता था; नुक्कड़ की दुकान पर गरम-गरम काफ़ी का एक प्याला एक घूँट में ही पी जाता था; इसके बाद पक्षियों की भाँति उसकी तेज़ आवाज़ से सुबह का पवन आन्दोलित हो उठता था। घोड़ों की भाँति उसका श्रमपूर्ण और सरल जीवन व्यतीत होता था। पचास साल से वह घर-घर लोगों को ताज़ी तरकारियाँ पहुँचाता रहा है। उसने सिर हिलाते हुए एक साँस भरी।

'आह! अब मैं वह नहीं हूँ, जो पहले था। अब मैं फूटा घड़ा हूँ। जेल की घटना के बाद से तो और भी बदल गया हूँ! मैं अब वह नहीं हूँ जो पहले था।'

उसका भारी पतन हो गया था। आदमी की जब ऐसी अवस्था होती है तो वह सड़क पर ही लेट जाता है, उसकी उठने की तबियत ही नहीं चाहती; और आते-जाते लोग उसे ठोकरें लगाते हुए चलते हैं।

× × × ×

उसे भयानक ग़रीबी ने आ घेरा। पहले जब वह घर लौटता था तो उसकी जेब भरी रहती थी, अब जेब में एक पैसा नहीं रहता था। जाड़ों के दिन आ गये। अपनी कोठरी से निकाल दिये जाने के कारण वह अब किसी सायबान में गाड़ियों के नीचे सोता था। कई रोज़ से लगातार पानी बरस रहा था, नालियाँ भर गई थीं और उस सायबान के नीचे भी पानी ही पानी था।

वह अपनी गाड़ी पर मकड़ों और भूखी बिल्लियों के साथ पानी में भींगता हुआ गठरी बनकर लेटा हुआ था। उसने दिन भर से खाया न था। उसके पास अब वह बोरा भी नहीं था, जिसे ओढ़कर सोया करता था। उसे अपने जेल की कोठरी में बीतनेवाले दो सप्ताहों की याद आई, जब उसे सरकार खाना-कपड़ा देती थी। उसे क़ैदियों के भाग्य पर ईर्ष्या हुई। उन्हें भूखे रहकर सर्दी में ठिठुरना नहीं पड़ता। उसके मन में एक विचार उदय हुआ।

'जब मुझे यह युक्ति सूझी है तो मैं इसका उपयोग क्यों न करूँ?'

वह उठकर सड़क की ओर चला। थोड़ी ही देर पहले ग्यारह का घंटा बोला था। रात अँधेरी और बर्फ़ जैसी ठंडी थी। चारों ओर कोहरा छाया हुआ था, जो बरसते हुए पानी से भी अधिक शीत उत्पन्न करनेवाला था। सड़क पर बहुत थोड़े लोग मकानों के बरामदे के नीचे छिपते हुए आ-जा रहे थे।

बूढ़ा तरकारीवाला बाज़ार पहुँचा। वहाँ सन्नाटा छाया था। गिरजाघर के निकट एक शांति का दूत पहरा दे रहा था। उसके सिर पर गैस का हंडा जल रहा था, जिससे उस पर गिरती हुई पानी की धार लाल दिखाई पड़ती थी। वह काँप रहा था, पर या तो रोशनी की वजह से या घूमते-घूमते थक जाने की वजह से वह अपनी जगह से हिल नहीं रहा था। शायद उस निर्जनता में वह प्रकाश-पुंज उसे एक साथी की भाँति मालूम पड़ रहा था। वह इस प्रकार अचल खड़ा था कि दूर से मनुष्य मालूम ही नहीं पड़ता था। उसके लम्बे बूटों की छाया फ़ुटपाथ

पर पड़ रही थी, परन्तु वहाँ पानी भरा था, इससे मालूम पड़ता था जैसे उसके शरीर का एक भाग पानी में डूबा हुआ है। दूर से वह किसी जल-जंतु की भाँति मालूम पड़ता था, जिसका आधा शरीर पानी के बाहर था, आधा पानी के भीतर। निकट से देखने पर उसका चेहरा भिक्षुओं अथवा सैनिकों जैसा मालूम पड़ता था। उसके रूखे-सूखे चेहरे पर दुःख की मलिनता छाई थी। उसकी भूरी घनी छोटी मूँछें थीं। वह चालीस-बयालीस वर्ष का मालूम पड़ता था। बूढ़े तरकारीवाले ने उसके निकट जाकर कमज़ोर आवाज़ में कहा—'पुलिसमैनों का नाश हो!'

इसके बाद वह कुछ क्षण तक प्रतीक्षा करता रहा कि उसके इन पवित्र शब्दों का क्या परिणाम निकलता है! लेकिन कांसटेबिल अपने दोनों हाथ बाँधे हुए, चुपचाप पहले ही की भाँति अचल खड़ा रहा। उसकी आँखें अँधेरे में चमक रही थीं। बूढ़े तरकारीवाले ने, देखा उन आँखों में बड़ी उदासीनता है।

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर भी उसने दुबारा उसके कानों में कहा—'मैं तुमसे कहता हूँ, पुलिसमैनों का नाश हो!'

फिर भी वह ठंडी अँधेरी रात निःस्तब्ध रही, केवल पानी पड़ने का शब्द सुनाई पड़ता रहा। अंत में कांसटेबिल ने कहा—'ऐसी बात नहीं कही जाती...ऐसी बातें नहीं कही जानी चाहिएँ। तुम बूढ़े हो गये, तुम्हें समझ होनी चाहिए। जाओ, अपने रास्ते जाओ।'

'तुम मुझे गिरफ़ार क्यों नहीं करते?' बूढ़े तरकारीवाले ने पूछा।

कांसटेबिल ने पानी से तर टोप के नीचे अपना सिर हिलाया।

'अगर हम इस तरह के औंधी खोपड़ीवालों को उनकी ऐसी बातों के लिए गिरफ़ार करते रहें, जो उन्हें नहीं कहनी चाहिएँ, तो हम इसी भर के हो जायँ।...और इससे फ़ायदा क्या होगा!'

बूढ़ा तरकारीवाला नाली में पैर डाले हुए खड़ा था। कांसटेबिल की इस भारी घृणा के सम्मुख वह क्षण भर के लिए अपनी जगह पर गड़ा सा रह गया। इसके बाद उसने धीमे से समझाने का प्रयत्न किया—

'मैं आपसे नहीं कहना चाहता था : पुलिसमैनों का नाश हो ! मैं किसी दूसरे से कहना चाहता था। मन में एक विचार उठा था।'

कांसटेबिल ने नम्र पर दृढ़ स्वर में कहा—'कुछ भी हो, ऐसी बात कहनी नहीं चाहिए। जब एक आदमी इतने कष्ट सहता हुआ अपने कर्त्तव्य का पालन करता है तो उसे इस प्रकार के शब्द कहकर उसका अपमान करना अनुचित है।...मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि तुम अपने रास्ते जाओ !'

बूढ़ा तरकारीवाला सिर झुकाये, दोनों हाथ किसी निर्जीव वस्तु की भाँति लटकाये हुए, बरसते हुए पानी और अंधकार में घुस पड़ा।

सत्य का साक्षी भगवान्

(लियो टाल्सटाय, रूस)

[(१८२८—१९१०), आप रूस के एक बहुत धनी ज़मींदार के पुत्र थे। परन्तु बाद में अपने सिद्धान्तों के कारण सारी सम्पत्ति त्याग दी। आप अपने सिद्धान्तों के अनुसार ही रहने का प्रयत्न करते थे। गान्धी जी के अहिंसा के सिद्धान्तों पर आपका बहुत प्रभाव पड़ा है। आपकी गणना रूस के सबसे महान् लेखकों में होती है। आपके 'युद्ध और शान्ति' तथा 'अन्ना केरेमिना' नामक उपन्यास संसार-प्रसिद्ध हैं।]

एक समय व्लाडिमीर नामक नगर में अकसिनोफ़ नामक एक नवयुवक व्यापारी रहता था। उसके दो दुकानें और एक मकान था।

अकसिनोफ़ बड़ा सुन्दर था। उसके घुँघराले बाल थे। वह बड़ा ही विनोदी मनुष्य था और बहुत अच्छा गाता था। युवावस्था में वह बहुत अधिक पीता था और नशा चढ़ आने पर बड़ा ऊधमी हो जाता था। लेकिन विवाह के बाद उसने इतनी अधिक शराब पीनी छोड़ दी, केवल कभी-कभी पीता था।

गर्मी के दिन थे। वह दूर एक मेले में जाने की तैयारी कर रहा था। जब वह अपने परिवार से बिदा लेने लगा तो उसकी पत्नी ने उससे कहा—आज न जाओ। मैंने रात सपना देखा कि तुम पर कोई विपत्ति पड़ी है।

अकसिनोफ़ उस पर हँसने लगागा। उसने कहा—'क्या तुम अब भी डरती हो कि मैं मेले में शराब पीकर गुलछर्रे उड़ाऊँगा?'

उसकी पत्नी ने कहा—'मैं स्वयं नहीं जानती कि मैं किस बात से डर रही हूँ। पर रात मैंने बड़ा बुरा सपना देखा। मैंने तुम्हें नगर से

लौटते हुए देखा। तुमने अपना हैट उतार लिया और मैं तुम्हें देखती रही। तुम्हारा चेहरा काला पड़ गया था।'

अकसिनोफ़ हँस पड़ा।

'यह मेरे सौभाग्य की सूचना थी। देखो, मैं जा रहा हूँ। तुम्हारे लिए कोई बहुमूल्य उपहार लाऊँगा।'

वह अपने परिवार से बिदा लेकर चल पड़ा।

वह अपना आधा रास्ता तय कर चुका था, जब उसका साथ एक व्यापारी से हो गया। वह उसका परिचित था। रात को दोनों एक ही सराय में ठहरे।

अकसिनोफ़ को नींद अच्छी तरह नहीं आई। आधी रात को ही उसकी आँखें खुल गईं। यह सोचकर कि ठंडे ही ठंडे में यात्रा समाप्त कर लूँ, उसने अपने सईस को जगाया और उससे गाड़ी जोतने के लिए कहा। सरायवाले की धुएँ से भरी हुई झोपड़ी में जाकर उसने अपना हिसाब चुकता किया और चल पड़ा।

लगभग छब्बीस मील की यात्रा कर चुकने के बाद वह कुछ जलपान करने के लिए फिर रुक पड़ा। उसने एक सराय की दालान में आराम किया। दोपहर होने पर उसने चाय तैयार करने की आज्ञा दी। इसके बाद वह अपना सितार निकालकर बजाने लगा।

सहसा तीन घोड़ों की गाड़ी, जिसमें एक घंटी भी बँधी हुई थी, सराय के द्वार पर आकर रुकी। गाड़ी में से एक पुलिस-अफ़सर दो सिपाहियों के साथ कूद पड़ा। उसने सीधे अकसिनोफ़ के पास आकर उससे पूछा—'तुम कौन हो? तुम कहाँ से आ रहे हो?'

अकसिनोफ़ ने अफ़सर के प्रश्नों का सत्कार-पूर्वक उत्तर देते हुए उसके सामने चाय की प्याली पेश की।

लेकिन पुलिस-अफ़सर ने उससे प्रश्नों की झड़ी लगा दी—'तुमने कल रात कहाँ विश्राम किया? क्या तुम अकेले थे या कोई व्यापारी तुम्हारे

साथ था ? क्या तुमने आज प्रातःकाल उस व्यापारी को देखा था ? तुम इतनी रात को ही उस सराय से क्यों चल पड़े ?'

अकसिनोफ़ को आश्चर्य हुआ कि उससे ये सब प्रश्न क्यों पूछे जा रहे हैं, लेकिन उसनें सीधे तौर से सबों का उत्तर दे दिया और पूछा—'आप मुझसे ये सब प्रश्न क्यों पूछ रहे हैं ? क्या मैं कोई चोर या डाकू हूँ ? मैं अपने व्यापार के संबंध में जा रहा हूँ। मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ।'

तब पुलिस-अफ़सर ने अपने सिपाहियों को बुलाया और कहा—'मैं पुलिस-इंसपेक्टर हूँ। मैंने तुमसे ये सब प्रश्न इसलिए किये हैं कि कल रात को तुम जिस व्यापारी के साथ रहे थे, उसका ख़ून हो गया है। तुम अपनी सारी चीज़ें मुझे दिखाओ। मैं तुम्हारी तलाशी लूँगा।'

दोनों सिपाही सराय के अन्दर जाकर उसका ट्रंक और बेग उठा लाये और उसे खोलकर तलाशी लेने लगे। सहसा पुलिस-इंसपेक्टर ने बैग में से एक छुरा ढूँढ़ निकाला। उसने तेज़ स्वर में कहा—'यह किसका छुरा है ?'

अकसिनोफ़ ने देखा कि ख़ून से तर एक छुरा उसके बैग से निकाला गया है। वह डर गया।

'छुरे पर यह ख़ून कैसा लगा है ?'

अकसिनोफ़ ने उत्तर देने का प्रयत्न किया, परन्तु उसके गले से शब्द न निकले—'मैं...मैं...नहीं...जानता...मैं ..वह छुरा...मेरा.. नहीं है...'

इस पर पुलिस-इंसपेक्टर ने कहा—'आज सुबह उस व्यापारी की छाती में किसी ने छुरा भोंक दिया। यह काम तुम्हारे सिवा और कोई नहीं कर सकता था। सराय का दरवाज़ा भीतर से बंद था और वहाँ तुम्हारे सिवा और कोई नहीं था। तुम्हारे बैग में यह ख़ून से तर छुरा भी मिला है। तुम्हारे अपराध की गवाही तुम्हारी सूरत दे रही है। तुम

मुझे सच-सच बता दो कि तुमने उसकी किस प्रकार हत्या की और उसका कितना रुपया चुराया।'

अकसिनोफ़ ने शपथ खाई कि मैंने यह कार्य नहीं किया है। उस व्यापारी के साथ चाय पीने के बाद मैंने उसे देखा भी नहीं था। मेरे पास केवल अपना रुपया आठ हज़ार है। और यह छुरा मेरा नहीं है।

लेकिन उसकी आवाज़ काँप रही थी, चेहरा पीला पड़ गया था और सारा शरीर किसी अपराधी मनुष्य की भाँति भय से थरथर काँप रहा था।

पुलिस-इंसपेक्टर ने सिपाहियों को अकसिनोफ़ को बाँधकर गाड़ी पर ले चलने की आज्ञा दी।

उसके दोनों हाथ-पैर बाँधकर जब उसे गाड़ी में बैठा दिया तो अकसिनोफ़ घुटनों में सिर छिपाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

पुलिस ने उसकी सारी चीज़ें और रुपया छीन लिया। उसे पास के ही नगर में ले जाया गया और वहाँ वह जेलखाने में बन्द कर दिया गया।

पुलिस ने अकसिनोफ़ के नगर में उसके चरित्र के बारे में पूछ-ताछ करवाई। नगर के सभी अमीर व्यापारियों और नागरिकों ने कहा कि युवावस्था में अकसिनोफ़ शराब पीकर उन्मत्त हो जाया करता था, परन्तु अब तो वह बड़ा नेक था। इसके बाद अकसिनोफ़ न्यायालय के सम्मुख ले जाया गया।

व्यापारी की हत्या करने तथा उसके बीस हज़ार रुपयों की चोरी करने के लिए उसे भारी दंड दिया गया।

अकसिनोफ़ की बीबी इस आकस्मिक घटना से स्तंभित सी रह गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। उसके सब बच्चे अभी छोटे-छोटे थे, एक तो अभी दूध पीता था। वह सब बच्चों को लेकर उस नगर में गई, जहाँ उसका पति क़ैद था।

पहले तो उसे अपने पति से मिलने की अनुमति तक नहीं मिली, परन्तु बाद में मिल गई और वह अपने पति के पास ले जाई गई।

जब उसने अपने पति को क़ैदियों के कपड़े तथा हाथ-पैर में बेड़ियाँ पहने और अन्य ख़ूनियों के साथ क़ैद देखा तो वह मूर्च्छित हो गई। बड़ी देर बाद उसकी मूर्च्छा भंग हुई। तब वह अपने बच्चों को अपने पास बिठाकर उन ख़ूनियों के बीच बैठ गई और पति को घर की सारी बातें बताने लगी। इसके बाद उसने पति से सारी घटना पूछी। उसने कहा—'अब क्या किया जाय?'

उसने उत्तर दिया—'हम ज़ार के पास प्रार्थना-पत्र भेजेंगे। यह असंभव है कि एक निर्दोष मनुष्य को दंड मिले।' पत्नी ने बताया कि वह ज़ार के पास पहले ही प्रार्थना-पत्र भेज चुकी है, परन्तु वह स्वीकार नहीं हुआ। इस पर अकसिनोफ़ ने कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु वह बहुत ही उदास हो गया।

तब उसकी पत्नी ने कहा—'मैंने तुमसे पहले ही अपने सपने की बात कही थी। मैंने सपने में तुम्हारा काला चेहरा देखा था। तभी मेरा माथा ठनका था। इस दुःख से, देखो, तुम्हारा चेहरा अभी से काला पड़ने लगा है। उस समय तुम्हें यात्रा नहीं करनी चाहिए थी।'

वह अपने बाल नोचने लगी। उसने कहा—'प्यारे, तुम अपनी पत्नी को सच-सच बात बता दो। क्या तुमने हत्या की है?'

अकसिनोफ़ ने कहा—'तो तुम्हें भी मेरे ऊपर विश्वास नहीं है!'

और वह अपना मुँह ढाँपकर रोने लगा।

इसी समय एक सिपाही ने आकर कहा कि समय हो गया है, इसलिए अब उसकी स्त्री को बच्चों को लेकर चला जाना चाहिए। अकसिनोफ़ ने सदा के लिए अपने परिवार से बिदा ली।

पत्नी के चले जाने के बाद अकसिनोफ़ उन सारी बातों पर विचार करने लगा, जो पत्नी से हुई थीं। जब उसे याद आया कि पत्नी ने भी

उस पर अविश्वास किया और उससे पूछा कि क्या तुमने व्यापारी की हत्या की है, तब उसके मन में विचार उठा—'मैं जान गया, ईश्वर के अलावा और कोई नहीं है जो सत्य बात जानता हो। केवल उससे ही दया करने की प्रार्थना करनी चाहिए। वही है, जिससे हम दया की आशा कर सकते हैं।'

और उस समय के बाद से अकसिनोफ़ ने ज़ार के पास प्रार्थना-पत्र भेजने बंद कर दिये और सारी आशा त्याग दी। वह केवल ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। अकसिनोफ़ को पहले बेत मारने की आज्ञा दी गई थी, फिर कालेपानी भेज देने की।

ऐसा ही किया गया। पहले उसे कोड़े मारने की सज़ा दी गई। इसके बाद जब कोड़े के घाव अच्छे हो गये तो वह अन्य क़ैदियों के साथ साइबेरिया भेज दिया गया।

अकसिनोफ़ छब्बीस वर्ष तक वहाँ रहा। उसके सिर के बाल एकदम सफ़ेद हो गये, दाढ़ी कमर तक बढ़ आई। मुख पर खेलनेवाली प्रसन्नता विलीन हो गई। कमर झुक गई। वह अब बहुत थोड़ा बोलता था। हँसी तो उसके मुख पर कभी देखी ही नहीं गई। वह अपना अधिकांश समय प्रार्थना में बिताता था।

अकसिनोफ़ ने जेल में जूते बनाना सीख लिया था। उन जूतों से उसे जो रुपये मिले थे, उनसे उसने 'शहीदों की गाथा' ख़रीद ली। जब तक जेलख़ाने में प्रकाश रहता था, वह उस पुस्तक को पढ़ा करता था। छुट्टियों के दिन वह जेलख़ाने के अन्दर ही बने हुए गिरजाघर में जाता था और वहाँ धर्म-ग्रन्थ पढ़ता था और भजन गाता था। उसकी आवाज़ अब भी तेज़ और मधुर थी।

जेल के क़ैदी अकसिनोफ़ को उसकी आज्ञाकारिता के लिए बहुत चाहते थे। उसके साथी क़ैदी भी उसका आदर करते थे और उसे 'बाबा' कहा करते थे। जब कभी उन्हें प्रार्थना-पत्र भेजना होता था तो

वे अकसिनोफ़ को ही अधिकारियों के पास भेजते थे। जब कभी उनमें आपस में झगड़ा होता था तो वे अकसिनोफ़ को ही अपना जज बनाते थे।

अकसिनोफ़ को अपने घर से कोई पत्र नहीं मिला था, इसलिए उसे पता नहीं था कि उसकी पत्नी और उसके बच्चे जीवित भी हैं या नहीं।

एक बार कुछ नये क़ैदी जेल में आये। शाम को सब पुराने क़ैदी नये क़ैदियों के चारों ओर इकट्ठा हुए। वे सब उनसे प्रश्न करने लगे कि उनमें से कौन किस गाँव या नगर से आया है और किस अपराध में।

अकसिनोफ़ भी वहाँ पर सब लोगों के साथ बैठा हुआ था और सिर झुकाये हुए सब लोगों की बात-चीत सुन रहा था।

नये क़ैदियों में एक बहुत ही लंबा और तगड़ा बुड्ढा था। उसके घनी काली दाढ़ी थी। वह अपनी गिरफ़्तारी के संबंध में बता रहा था। वह कह रहा था—'सो भाइयो, मैं यहाँ बिना किसी वजह भेजा गया हूँ। मैंने एक गाड़ी का घोड़ा खोल लिया और अधिकारियों ने मुझे उस घोड़े के साथ पकड़ लिया। वे सब कहने लगे कि मैंने घोड़ा चुराया है। मैंने कहा—मुझे ज़रा जल्दी थी, इसलिए घोड़ा ले लिया। फिर गाड़ीवान मेरा दोस्त है। अधिकारियों ने कहा—नहीं, तुम घोड़ा चुराये लिये जा रहे हो। लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि मैंने यह घोड़ा कहाँ से चुराया। मैं इससे पहले ऐसे काम कर चुका हूँ कि बहुत पहले यहाँ आ जाता, परन्तु तब पकड़ा नहीं गया। अब पुलिस ने बिना किसी वजह मुझे यहाँ भेज दिया है। लेकिन क्रोध करने से क्या फ़ायदा? मैं पहले भी साइबेरिया रह चुका हूँ। वे मुझे अधिक दिनों तक यहाँ नहीं रख सके, गोकि……'

'तुम कहाँ से आते हो?' एक क़ैदी ने उससे पूछा।

'व्लाडिमीर से। हम लोग वहीं के रहनेवाले हैं। मेरा नाम मकर है। मेरे पिता का नाम सेमयन था।'

अकसिनोफ़ ने अपना सिर ऊँचा उठाकर पूछा—'मकर, एक बात मुझे बताओ। क्या तुमने कभी व्लाडिमीर के एक व्यापारी अकसिनोफ़-परिवार का नाम सुना है? क्या वह अब भी जीवित है?'

'हाँ, हाँ, मैंने सुना है। अकसिनोफ़ बड़ा अमीर व्यापारी है, यद्यपि उनका पिता साइबेरिया में है। मालूम पड़ता है, उनका पिता भी हम लोगों की भाँति पुराना पापी है। अच्छा, बाबा, अब तुम बताओ, तुम क्यों यहाँ भेजे गये हो?'

अकसिनोफ़ अपने दुर्भाग्य की बात नहीं बताना चाहता था। उसने एक लंबी साँस भरकर कहा—'छब्बीस वर्ष पहले मुझे अपने पापों के लिए कालेपानी की सज़ा हुई थी।'

मकर ने पूछा—'तुमने कौन सा अपराध किया था?'

अकसिनोफ़ ने कहा—'पाप किया था, वही अब भोग रहा हूँ।'

लेकिन इसके अलावा उसने और कोई बात नहीं बताई। अन्य क़ैदियों ने अलबत्ता अकसिनोफ़ के साइबेरिया भेजे जाने का कारण बता दिया। उन्होंने बताया कि रास्ते में किसी ने एक व्यापारी की हत्या कर डाली और अपना छुरा उसके बैग में रख दिया। उसे अन्याय से यह दंड मिला है।

जब मकर ने यह बात सुनी तो उसने आँख उठाकर अकसिनोफ़ को देखा। इसके बाद अपनी जाँघ पर हथेली मारकर उसने कहा—'ओह, यह तो बड़ी विचित्र बात है! सचमुच बड़ी ही विचित्र है। बाबा, तुम तो अब बहुत बूढ़े हो गये हो!'

क़ैदियों ने पूछा कि इसमें उसे क्या विचित्रता लगी और उसने अकसिनोफ़ को क्या इससे पहले भी देखा है? लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल इतना ही कहा—'दोस्तो, बड़ी विचित्र बात है! यह भी कैसा आश्चर्य है कि हम लोग फिर यहाँ मिल गये।'

मकर ने जब ये शब्द कहे तो अकसिनोफ़ के मन में विचार उठा कि संभवतः यह आदमी जानता है कि उस व्यापारी की हत्या किसने की थी।

उसने पूछा—'क्यों मकर, क्या तुमने उस घटना की ख़बर सुनी थी या मुझे इससे पहले कहीं देखा था ?'

'मैंने ख़बर सुनी थी ! सारे नगर में चर्चा थी। लेकिन यह बहुत पुरानी बात है। मुझे सब याद नहीं रहा।' मकर ने कहा।

'क्या तुमने यह भी सुना था कि व्यापारी की हत्या किसने की ?'

मकर हँस पड़ा। उसने कहा—'क्यों, इसमें भी कुछ संदेह है ? हत्या उसी ने की थी, जिसके बैग में छुरा पाया गया था। यह असंभव है कि कोई दूसरा तुम्हारे बैग में अपना छुरा रख दे और पकड़ा न जाय। तुम्हारे बैग में और किस तरह छुरा आ सकता था ? बैग तुम्हारे सिरहाने रक्खा था। और कोई छुरा रखता, तो क्या तुम्हें खटका न होता ?'

इन शब्दों को सुनते ही अकसिनोफ़ को पक्का विश्वास हो गया कि इसी मनुष्य ने उस व्यापारी की हत्या की है। वह उठ खड़ा हुआ और दूसरी ओर चला गया। उस रात को वह सो नहीं सका। उसे बड़ा दुःख हो रहा था और अपने अतीत की याद आ रही थी।

उसे अपनी पत्नी की उस समय की मुद्रा याद आई, जब वह उसके साथ अंतिम बार मेले गया था। उसे मालूम पड़ा कि उसकी पत्नी उसके सामने खड़ी है। उसने उसका चेहरा, उसकी आँखें देखीं। उसे मालूम पड़ा कि उसे उसकी आवाज़, उसकी हँसी तक सुनाई पड़ रही है।

इसके बाद उसे अपने बच्चों का चेहरा याद आया। एक लड़का रोएँदार कोट पहने खड़ा था, दूसरा अपनी माँ का दूध पी रहा था।

उसे अपने उन दिनों की याद आई, जब वह युवा था और सदा प्रसन्न रहा करता था। उसे याद आया कि वह किस प्रकार सराय में बैठा हुआ था, जब पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। वह किस प्रकार अपने सितार में डूबा हुआ था और उस समय उसकी आत्मा कितनी सुखी थी।

उसे जेल क । वह कमरा याद आया, जहाँ उसके कोड़े लगाये गये थे। जेलर खड़ा उसे देख रहा था और वहाँ और भी कितने क़ैदी बेड़ियाँ पहने हुए इकट्ठा थे। उसे अपने जेल-जीवन के छब्बीस वर्षों की याद आई। उसे याद आया कि अब वह बूढ़ा हो गया है।

अकसिनोफ़ इतना अधिक उदास हो गया कि उसने आत्महत्या कर लेने का विचार किया।

'यह सब दुःख मैंने उस पापी के कारण भोगा है।' अकसिनोफ़ ने अपने मन में कहा।

उसे मकर पर इतना अधिक क्रोध आया कि वह उससे अपने सारे दुखों का बदला लेने के लिए पागल हो उठा। वह सारी रात प्रार्थना करता रहा, परन्तु उसका चित्त स्थिर नहीं हुआ। प्रातःकाल होने पर, जब वह मकर के साथ चलने लगा तो उसकी ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं।

इस प्रकार दो सप्ताह बीत गये। रात को अकसिनोफ़ को नींद नहीं आती थी। इतनी अधिक उदासी ने उसे आ घेरा था कि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

एक रात को वह जब जेलख़ाने की तरफ़ से जा रहा था, उसने एक तख़्त के नीचे कुरेदी हुई मिट्टी देखी। वह उस ज़मीन को ग़ौर से देखने के लिए ठिठक गया। सहसा तख़्त के नीचे से मकर रेंगकर निकला। वह चौंककर अकसिनोफ़ को देखने लगा।

अकसिनोफ़ उसकी ओर बिना देखे हुए ही चला जा रहा था, परन्तु मकर ने उसकी बाँह पकड़ ली। उसने उसे बताया कि किस प्रकार वह कई दिनों से दीवाल से नीचे ज़मीन खोद रहा है और किस प्रकार वह जूतों में मिट्टी भर लेता है और सुबह काम पर जाते समय सड़क के किनारे फेंक देता है। उसने अन्त में कहा—बाबा, अगर तुम किसी से न कहोगे तो मैं तुम्हें भी बाहर निकाल ले चलूँगा। लेकिन अगर तुमने

चुग़ली कर दी तो मेरे कोड़े पड़ेंगे। लेकिन बाद में मैं भी तुमसे अच्छी तरह समझ लूँगा। मैं तुम्हें मार डालूँगा।

अकसिनोफ़ ने जब उस आदमी को देखा, जिसके कारण उसे इतना सब दुःख उठाना पड़ा तो उसका शरीर क्रोध से काँपने लगा। उसने अपनी बाँह झिटक दी और कहा—'मैं क्यों भागने का यत्न करूँ? मुझे मार डालने से किसी का नुक़सान नहीं होगा। तुम मेरी जान बहुत पहले ले चुके हो। और जो तुमने चुग़ली खाने की बात कही तो ईश्वर मुझसे जो करवायेगा, करूँगा।'

दूसरे दिन जब सब क़ैदी काम पर ले जाये जा रहे थे तो सिपाहियों की नज़र उस जगह पर पड़ गई, जिसे मकर खोद रहा था। उन्होंने ढूँढ़कर मकर का बनाया हुआ गड्ढा भी तलाश कर लिया। जेलर ने आकर सबों से एक-एक कर पूछा—'यह सुरंग किसने खोदी है?'

सबों ने नाहीं की। जिन्हें पता था, उन्होंने भी मकर का नाम नहीं लिया; क्योंकि वे जानते थे कि इस प्रयत्न के लिए कोड़े मारकर उनकी चमड़ी उधेड़ दी जायगी।

जेलर अकसिनोफ़ के सम्मुख आया। वह जानता था कि अकसिनोफ़ सदा सच बोलता है। उसने पूछा—'बाबा, तुम सदा सच बोलते हो। ईश्वर की शपथ खाकर तुम मुझे बताओ यह काम किसका है।'

अकसिनोफ़ के ओंठ फड़कने और हाथ काँपने लगे। कुछ देर तक उसके मुँह से शब्द न निकल सका। उसने अपने मन में कहा—'अगर मैं उसकी रक्षा कर लूँ...पर मैं उसे क्यों क्षमा करूँ, जब उसी ने मेरा सत्यानाश किया है। उसे अपने किये की सज़ा भोगने दूँ। लेकिन मैं क्या उसका नाम बतला दूँ? अवश्य ही, उसके कोड़े लगाये जायेंगे। लेकिन इससे क्या होगा? क्या मुझे कोई सुख मिल जायगा?'

जेलर ने एक बार फिर पूछा—'बाबा, सच्ची बात बतलाओ। यह गड्ढा किसने खोदा?'

अकसिनोफ़ ने एक बार मकर की ओर देखा, फिर कहा—'हुजूर, मैं बता नहीं सकता। ईश्वर की आज्ञा नहीं है। मैं बताऊँगा नहीं। आप मेरे साथ चाहे जो व्यवहार करें, मैं आपके वश में हूँ।'

जेलर ने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु अकसिनोफ़ ने इसके अलावा और कुछ नहीं कहा। अंत में जेल के अधिकारियों को पता नहीं लग सका कि गड्ढा किसने खोदा था।

दूसरे रोज़ रात को अकसिनोफ़ अपने तख्त पर लेटा हुआ था। वह लगभग सो गया था। इसी समय उसे अपने पैरों के पास आकर किसी के बैठने की आहट मिली।

उसने अँधेरे में आँख खोलकर देखा। मकर था। अकसिनोफ़ ने पूछा—'तुम मुझसे क्या चाहते हो? यहाँ किस लिए आये हो?'

मकर चुप रहा। अकसिनोफ़ उठ बैठा। उसने फिर कहा—'तुम मुझसे क्या चाहते हो? चले जाओ, नहीं तो मैं पहरेदार को पुकार दूँगा।'

मकर ने अकसिनोफ़ के कान के पास झुककर फुसफुसाकर कहा—'बाबा, मुझे क्षमा कर दो।'

अकसिनोफ़ ने कहा—'किस बात के लिए क्षमा कर दूँ?'

'मैंने ही उस व्यापारी की हत्या की थी और छुरा तुम्हारे बैग में रख दिया था। मैं तुम्हारी भी हत्या करने जा रहा था, परन्तु बाहर दालान में आवाज़ हुई। मैंने छुरा तुम्हारे बैग में रख दिया और खिड़की से कूदकर भाग गया।'

अकसिनोफ़ ने कुछ नहीं कहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। मकर तख्त पर से उठकर ज़मीन पर घुटने टेककर बैठ गया। उसने कहा—'बाबा, मुझे क्षमा करो। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा कर दो। मैं अधिकारियों के सामने स्वीकार कर लूँगा कि मैंने व्यापारी की हत्या की थी, वे तुम्हें क्षमा कर देंगे। तुम अपने घर जा सकोगे।'

अकसिनोफ़ ने कहा—'तुम्हारे लिए यह कहना सरल है, पर मैं यह सब कैसे सहन कर सकूँगा ? मैं अब कहाँ जाऊँगा ? मेरी पत्नी मर गई ! मेरे बच्चे मुझे भूल गये होंगे...मेरे लिए अब कोई जगह नहीं है...... ।'

मकर उठा नहीं। धरती पर सिर पटककर उसने कहा—'बाबा, मुझे क्षमा कर दो। जब उन्होंने मेरे कोड़े मारे थे, तब मुझे वह सब सहन हो गया था, पर यह नहीं। .....इतनी सारी बातों के बाद भी तुमने मुझ पर दया की...तुमने मेरा नाम खोला नहीं...मैं बड़ा पापी हूँ, फिर भी ईश्वर के लिए मुझे क्षमा कर दो।'

वह फूट-फूटकर रोने लगा।

मकर को सिसकियाँ भरते हुए देखकर अकसिनोफ़ की आँखों के आँसू भी न रुके। उसने कहा—'ईश्वर तुम्हें क्षमा करेगा। मैं शायद तुम से बड़ा पापी होऊँ, कौन जानता है !'

सहसा उसकी आत्मा को एक अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। उसने अपने घर के लिए शोक करना छोड़ दिया। जेल से रिहा होने की इच्छा भी उसने त्याग दी। वह अब अपने अंतिम समय का ही ध्यान किया करता था।

मकर ने अकसिनोफ़ की बात नहीं मानी और अपना अपराध अधिकारियों के सम्मुख स्वीकार कर लिया।

जब अकसिनोफ़ की मुक्ति का हुक्म आया तो उसके प्राण-पखेरू देह से मुक्त हो चुके थे।

अभिनेत्री

(एन्टन चेखव, रूस)

[(१८६०-१६०४) आप एक व्यापारी के पुत्र थे। मास्को युनिवर्सिटी से डाक्टरी की डिगरी प्राप्त की, परन्तु जब आपकी कहानियाँ लोकप्रियता प्राप्त करने लगीं तो आप साहित्य-सेवा में ही अपना जीवन बिताने लगे। मन की सूक्ष्म वृत्तियों को प्रकट करने में आपकी लेखनी अपना सानी नहीं रखती। आपकी रचनाओं में हास्य का सुंदर समावेश होता था। आप संसार के सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों में से माने जाते हैं।]

बात बहुत पहले की है। तब उसकी नई उम्र थी, देखने में बहुत सुन्दर लगती थी। निकोलाई, उसका प्रेमी, उसके निकट बैठा हुआ था। बड़ी विकट गर्मी पड़ रही थी। निकोलाई ने देशी ठर्रे की पूरी बोतल चढ़ा ली थी। उसकी तबियत बहुत ख़राब हो रही थी। दोनों ही बैठे-बैठे ऊब रहे थे और घूमने जाने के लिए शीतल संध्या की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सहसा किसी ने दरवाज़े पर घंटी बजाई। निकोलाई केवल कमीज़ पहने बैठा था। वह उछल पड़ा और प्रश्न-सूचक नेत्रों से पाशा की ओर देखने लगा।

'कोई नहीं है। या तो डाकिया होगा या मेरी पड़ोसिन।' अभिनेत्री ने कहा।

निकोलाई को डाकिया या उसकी पड़ोसिन का ज़रा भी भय नहीं था। फिर भी इतमीनान के लिए वह कोट उठाकर दूसरे कमरे में चला गया। पाशा दरवाज़ा खोलने के लिए बढ़ी।

पाशा को बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि नवागन्तुका न तो डाकिया है, न उसकी पड़ोसिन। उसके सामने एक सुन्दरी नवयुवती

खड़ी थी। उसके कपड़े संभ्रान्त महिलाओं जैसे थे। वह किसी ऊँचे घराने की मालूम पड़ती थी।

नवागन्तुका का चेहरा पीला पड़ रहा था। वह कठिनता से साँस ले पाती थी।

'क्या काम है आपको?' पाशा ने पूछा।

महिला ने तत्काल उत्तर न दिया। वह कमरे में जाकर चकित-नेत्रों से सब सामान देखने लगी। उसके मुख पर पीड़ा की छाप थी। कुछ समय बीतने पर वह प्रकृतिस्थ हुई। उसने एक कुर्सी ले ली।

'क्या मेरे पति यहाँ हैं?' अन्त में उसने सिर उठाकर पूछा। रोने के कारण उसकी आँखें सूज गई थीं।

'आप किसको पूछती हैं?' पाशा ने प्रश्न किया। सहसा एक भय ने उसे आ घेरा। उसके हाथ-पैर ठंडे पड़ गये। 'आप किसको पूछती हैं?' भावावेश में काँपते हुए उसने दुहराया।

'मेरे पति, निकोलाई पेट्रोविच!'

'नहीं,..... मैं......मैं उन्हें नहीं जानती।'

कुछ क्षण निःस्तब्धता रही। महिला अपने रेशमी रूमाल से बार-बार अपनी आँखें पोंछती रही। पाशा को साहस नहीं हुआ कि उसके सामने वह भी कुर्सी पर बैठ जाय। वह सहमी हुई उसकी ओर देखती रही।

'तो आपका कहना है कि मेरे पति यहाँ नहीं हैं?' महिला ने दृढ़ स्वर में पूछा। उसके ओठों पर एक भेदभरी मुस्कराहट थी।

'मैं.....मैं समझी नहीं कि आपका क्या मतलब है।'

'साँपिन .....' महिला घृणा की दृष्टि से पाशा की ओर देखती हुई बुदबुदाई --'हाँ, हाँ .....तुम साँपिन हो। मुझे बहुत हर्ष है कि मुझे तुम्हारे मुँह पर यह कहने का अवसर मिला है।'

पाशा ने अनुभव किया कि नवागन्तुका महिला पर उसकी वेश-भूषा का बुरा प्रभाव पड़ा है। उसे अपने पाउडर लगे हुए गालों और रँगे हुए ओठों पर लज्जा आने लगी। उसने सोचा कि अगर वह भी बिना पाउडर और लिपस्टिक के सादी वेश-भूषा में होती तो वह आसानी से यह छिपा सकती थी कि वह 'बुरी' औरत है। तब तो वह महिला से समानता का बरताव करती और उसके सामने कुर्सी पर भी बैठ जाने का साहस करती।

'तो फिर मेरे पति कहाँ हैं?' महिला ने प्रश्न किया—'लेकिन इससे मुझे कोई सरोकार नहीं कि वह यहाँ इस समय हैं कि नहीं। मैं तुम्हें यह बताने के लिए आई हूँ कि उनका ग़बन प्रकट हो गया है और पुलिस उनकी खोज में है। पुलिस उन्हें गिरफ़्तार कर लेगी और यह सब तुम्हारे कारण होगा।'

महिला उठ खड़ी हुई और उत्तेजना में कमरे में इधर-उधर टहलने लगी। पाशा आश्चर्य के साथ उसकी ओर देखती रही। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि महिला का तात्पर्य क्या है।

'आज वे गिरफ़्तार कर लिये जायँगे।' महिला ने सुबकियाँ भरते हुए कहा—'मैं जानती हूँ कि उन्हें इस दशा पर किसने पहुँचाया है। तूने साँपिन! तूने!' महिला के मुख पर पाशा के प्रति घृणा के भाव स्पष्ट थे। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह पाशा के मुँह पर थूक देगी। 'मैं निस्सहाय हूँ.. सुनती है, डाइन?... मैं निस्सहाय हूँ, तू इस समय मुझसे समर्थ है। लेकिन मेरा भी परमात्मा है। परमात्मा मेरी और मेरे बच्चों की रक्षा करेगा। परमात्मा सब कुछ देखता है। वह न्यायी है। वह तुझे तेरे पापों का दंड देगा। मैंने रो-रोकर रातें काटी हैं। जब तेरे सिर पर पड़ेगी तब तू भी याद करेगी।'

फिर बड़ी देर तक निःस्तब्धता रही। महिला इधर-उधर टहलती रही। पाशा भयभीत नेत्रों से उसे एकटक निहार रही थी। वह अभी

तक उसका तात्पर्य नहीं समझ पाई थी और प्रतिक्षण किसी भीषण दुर्घटना होने की आशंका कर रही थी।

'मैं आपके पति के बारे में कुछ भी नहीं जानती', पाशा ने कहा। वह भी रोने लगी।

'तू झूठ बोलती है!' महिला ने चीखकर कहा--'मैं सब कुछ जानती हूँ। मैं तुझे बहुत समय से जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि पिछले चार महीने में एक दिन भी ऐसा नहीं बीता है, जब मेरे पति तेरे यहाँ न आये हों।'

'हाँ, आये। तो इसमें बुराई की कौन सी बात? कितने लोग यहाँ आते हैं। मैं उनसे कहने नहीं जाती कि तुम मेरे यहाँ आओ। वे अपनी इच्छा से आते हैं।'

'मैं तुझे बता रही थी कि ग़बन का पता चल गया है। उन्होंने अपने दफ़्तर का रुपया चुराया। यह सब तेरे लिए..... हाँ, हाँ, तुझ जैसी औरतों के लिए उन्होंने यह अपराध किया। अब मेरी बात सुन!' महिला पाशा के ठीक सामने खड़ी हो गई और स्थिर-नेत्रों से उसे देखने लगी। 'तुझमें कुछ भी लाज-शर्म नहीं है। तू पराये मर्दों के साथ रहती है। तुझे तो केवल रुपया प्यारा है। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि तू इतनी नीच है कि तुझमें मानवता का ज़रा भी अंश नहीं रह गया। उनके बीबी है, बच्चे हैं। अगर जेल चले गये तो उनके बच्चे भूखों मरेंगे।...ज़रा इस बात पर ध्यान दे। अभी हमें दुःख और अपमान से बचाने का एक मार्ग है। अगर आज ही मैं तीन सौ रुपया जमा कर दूँ तो वे बच सकते हैं। केवल तीन सौ रुपये की बात है।'

'तीन सौ रुपये?' पाशा ने शांत भाव से कहा—'मुझे इन तीन सौ रुपयों का कुछ भी पता नहीं। मुझे नहीं दिये गये।'

'मैं तुझसे तीन सौ रुपयों की भिक्षा नहीं माँगती। तेरे पास रुपया नहीं है और मैं तुझसे रुपया माँगती भी नहीं। मुझे दूसरी चीज़ की

ज़रूरत है।...पुरुषों की आदत है कि वे तुझ जैसी स्त्रियों को आभूषण उपहार में दिया करते हैं। बस, तू मेरे पति की दी हुई चीज़ें लौटा दे।'

'उन्होंने मुझे कभी आभूषण नहीं दिये, आप सच मानिए!' पाशा ने कातर भाव से कहा। उसकी समझ में अब सारी बातें आ रही थीं।

'तब सारा रुपया कहाँ गया? उन्होंने अपना, मेरा और दफ़्तर का भी रुपया फूँक डाला।···मेरी बात सुन, मैं तुझसे बिनती करती हूँ। इन आपदाओं के कारण मैं अपने वश में नहीं हूँ। मैंने तुझे अप्रिय बातें कही हैं। मैं तुझसे बिनती करती हूँ कि मुझे क्षमा कर। मैं जानती हूँ कि तू मुझसे घृणा करती होगी। अगर तुझमें दया बच रही है तो अपने को मेरी स्थिति में रखकर ज़रा कल्पना कर! मैं प्रार्थना करती हूँ, उनकी दी हुई चीज़ें वापस कर दे।'

पाशा ने अपने कंधे सिकोड़े। 'मैं ऐसा बड़ी प्रसन्नता से करती, परन्तु उन्होंने मुझे उपहार दिये भी तो हों! ईश्वर मुझे दण्ड दे, अगर मैं झूठ बोलती होऊँ। कृपया आप मेरा विश्वास कीजिए। पर आप ठीक कहती हैं,' अभिनेत्री ने लज्जित-भाव से अपनी ग़लती सुधारी—'एक बार उन्होंने मुझे दो चीज़ें दी थीं। अगर आपकी इच्छा हो तो मैं प्रसन्नता से उन चीज़ों को वापस कर सकती हूँ।

पाशा ने अपने सिंगारदान की दराज़ खोली और उसमें से सोने की दो चूड़ियाँ और एक लाल नगीने की अँगूठी निकालकर महिला को दे दी।

महिला के चेहरे पर लाली दौड़ गई। उसके सारे शरीर में आग लग गई। वह बड़ी क्रुद्ध हो गई थी।

'तू मुझे चरका दे रही है।' उसने कहा—'मैं भिक्षा नहीं माँगती। मैं तुझसे वे ही चीज़ें वापस माँगती हूँ जो तूने मेरे भोले-भाले पति से उसी तरह ठगी हैं, जिस तरह तेरी जैसी युवतियाँ पुरुषों से ठगा करती हैं। बृहस्पतिवार को मैंने तुझे पति के साथ देखा था। उस समय तू जड़ाऊ

चूड़ियाँ और क़ीमती अँगूठी पहने थी। तुझे मुझ पर दया-भाव दिखाने की आवश्यकता नहीं है। मैं तुझसे अन्तिम बार बिनती करती हूँ कि तू मेरी सारी चीज़ें लौटायेगी या नहीं !'

'तुम बड़ी विचित्र हो...' पाशा ने कहा। उसे भी क्रोध आ गया था। 'मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि इन चूड़ियों और अँगूठी के अलावा तुम्हारे पति ने मुझे कुछ भी नहीं दिया। कभी-कभी वे जलपान का सामान लाते थे—'

'जलपान...' महिला ने पागलों जैसी हँसी हँसते हुए कहा—'घर पर बच्चे खाने को तरसते थे और यहाँ तुम्हें दावत दी जाती थी। तो तू मेरी चीज़ें लौटाने से इन्कार करती है ?'

महिला को कोई उत्तर नहीं मिला। वह एक कुर्सी पर बैठ गई और एकटक दीवाल की ओर देखने लगी। उसके मन में विचारों की आँधी चल रही थी।

'मैं अब क्या करूँ ?' उसने सोचा -'अगर तीन सौ रुपयों का प्रबंध नहीं हुआ तो उन्हें जेल अवश्य होगी और मेरे बच्चे भूखों मरेंगे। इस राक्षसी का गला घोट दूँ या इसके पैरों पर अपना सिर डाल दूँ ?'

महिला ने रूमाल में अपना मुँह छिपा लिया और सिसक-सिसक-कर रोने लगी।

'मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ', महिला ने हिचकियाँ लेते हुए कहा—'तुमने ही मेरे पति का सर्वनाश किया है। तुम्हीं उनकी रक्षा करो। मैं जानती हूँ कि तुम्हें उन पर दया नहीं आती, लेकिन बच्चों का तो ख़याल करो ..वे बेचारे बच्चे क्यों दुख उठावें ?'

पाशा उन बच्चों की कल्पना करने लगी—'सड़क पर नंगे खड़े हैं, भूख से रो रहे हैं।' उसका हृदय चीख़ उठा।

'बहूजी, मैं क्या कर सकती हूँ ?' पाशा ने असहाय-भाव से कहा—'तम कहती हो मैं साँपिन हूँ, मैंने तुम्हारे पति का जीवन नष्ट कर दिया।

लेकिन मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहती हूँ कि मैंने उनसे कोई लाभ नहीं उठाया। हमारे थ्येटर में एकमात्र मोजा है, जिसका प्रेमी अमीर है। बाक़ी सब पेट काटकर रहती हैं। निकोलाई सुंदर और सज्जन है, इसलिए मैं उसकी ओर खिंची। हम और क्या करें......।'

'मैं तुमसे अपनी चीज़ें वापस माँगती हूँ। उन्हें लौटा दो। मैं विपत्ति में हूँ...मैंने अपनी मर्यादा तक को तिलांजलि दे दी है। अगर तुम्हारी इच्छा हो तो मैं तुम्हारे पैरों पड़ सकती हूँ। दया करो...दया!'

पाशा भय से चिल्ला पड़ी। उसने देखा कि यह सम्भ्रान्त महिला अपने अभिमान—अपने कुल-गौरव—को उसके पैरों पर चढ़ा देने के लिए तैयार हो गई है: अपना अपमान करने के लिए और उसका भी अपमान करने के लिए।

'अच्छा! मैं तुम्हें सब चीज़ें दूँगी!' पाशा ने आँसू पोंछते हुए, अवरुद्ध कंठ से कहा—'यह लीजिए। यह चीज़ें निकोलाई की दी हुई नहीं हैं। ये चीज़ें और लोगों की दी हुई हैं। लेकिन तुम्हारी इच्छा...'

पाशा ने फिर अपने सिंगारदान की दराज़ खोली और उसमें से जड़ाऊ चूड़ियाँ, कई अँगूठियाँ और कई हार निकालकर महिला को दे दिये।

'यह ले जाइए, यह भी ले जाइए, यह भी ले जाइए। इनमें एक भी चीज़ आपके पति की नहीं है। लीजिए, सब चीज़ें ले जाइए। अब तो आप अमीर हो जायँगी।' पाशा को अब भी भय हो रहा था कि कहीं वह सम्भ्रान्त महिला उसके पैरों पर अपना सिर न रख दे।

'लेकिन अगर तुम बड़ी कुलवंती हो..... अगर तुम निकोलाई की पत्नी हो तो तुम अपने पति को अपने पास रक्खा करो। मैं तुम्हारे पति को बुलाने नहीं गई थी। वह अपने आप मेरे पास आया था।'

महिला ने आँसू भरे नेत्रों से मेज़ की ओर निहारा, जिस पर सब आभूषण पड़े थे और कहा—'अभी तो और चीज़ें होंगी......इतनी तो दो सौ रुपयों की भी न होंगी।'

पाशा फिर सिंगारदान के निकट गई और उसमें से एक सोने की घड़ी, एक सिगरेट केस, एक जोड़ा कालर बटन और अन्य बहुत-सी ऐसी ही चीज़ें निकालकर फेंक दीं। उसने बड़े दृढ़ स्वर में कहा—'बस, अब मेरे पास कुछ नहीं है .....तुम मेरी तलाशी ले सकती हो।'

महिला ने एक निःश्वास फेंकी, काँपते हुए हाथों से सारी चीज़ें समेटकर एक रूमाल में बाँधीं और चली गई। उसने जाते समय पाशा से धन्यवाद का एक शब्द भी नहीं कहा, सिर उठाकर उसकी ओर देखा तक नहीं।

बग़ल के कमरे का दरवाज़ा खुला और निकोलाई ने कमरे में प्रवेश किया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह अपना सिर हिला रहा था, जैसे उसने कोई कड़वी घूँट पी हो। उसकी आँखों में आँसू चमक रहे थे।

'बताओ तो तुमने मुझे कौन-कौन चीज़ें उपहार में दी हैं?' पाशा उसकी ओर घूम पड़ी।' 'मैं तुमसे पूछती हूँ, तुमने मुझे कब उपहार में चीज़ें दी हैं।

'उपहार......मूर्खता की बात!' निकोलाई ने सिर हिलाते हुए कहा—'हे भगवन्. मेरी पत्नी आकर गिड़गिड़ाई, और वह भी तुमसे! उसने अपनी कुल-मर्यादा तक को तिलांजलि दे दी. ...'

'मैं तुमसे पूछती हूँ, तुमने मुझे कौन उपहार दिये हैं?' पाशा चीख़ पड़ी।

'हे भगवन्, मेरी पत्नी, एक बड़े प्रतिष्ठित कुल की स्त्री .....वह तुम्हारे पैरों पर गिरने तक को तैयार हो गई! मेरे कुकर्मों ने उसे इतने नीचे गिरा दिया है। यह सब मेरे ही कारण हुआ है।'

कोलिया अपना सिर थामकर कहने लगा—'मैं अपने को कभी नहीं क्षमा करूँगा, कभी नहीं। साँपिन, मेरी आँखों के सामने से हट जा।' उसने घृणा की दृष्टि से पाशा को देखा। उसके काँपते हुए हाथों ने पाशा को दूर ढकेल दिया। 'मेरी पत्नी तेरे पैरों पर अपना सिर रखना चाहती थी.......और किसी के नहीं, तेरे पैरों पर! हे भगवन्!'

निकोलाई ने शीघ्रता से कपड़े पहने। वह सावधानी से पाशा के स्पर्श तक से अपने को बचाता हुआ घर के बाहर निकल गया।

पाशा कुर्सी पर गिर पड़ी और फूट-फूटकर रोने लगी। उसे दुःख था कि उसने अपने सब आभूषण दे दिये। सारे दृश्य को याद कर उसका ख़ून उबलता था। उसे याद आया, इसी प्रकार तीन साल पहले एक व्यापारी ने उसे ख़ूब पीटा था, अकारण ही। वह और अधिक फूट-फूटकर रोने लगी।

——

मकर छुद्रक

(मैक्सिम गोर्की, रूस)

[(१८६८—१९३६) आपका वास्तविक नाम अलेक्साई मैक्सिमोविच पेशकव था। आपने आवारागर्दी में अपने जीवन का एक बड़ा भाग बिताया, जिसमें बहुत से कटु अनुभव उठाये। इसी लिए आपने अपना साहित्यिक नाम गोर्की रक्खा, जिसका अर्थ कटु होता है। १८९७ में आपका प्रथम कहानी-संग्रह प्रकाशित हुआ और तत्काल आपकी कीर्ति चारों ओर फैल गई। आपने समाज के उपेक्षित वर्गों के जीवन का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है।]

चारों तरफ़ फैले हुए लम्बे-चौड़े मैदान में शीतकालीन ठंडा पवन, दूर समुद्रतट पर टकरानेवाली लहरों की नीरस मर मर ध्वनि अपने साथ लिये हुए, बह रहा था। जब-तब पवन अपने साथ मुरझाई हुई पीली पत्तियों का ढेर का ढेर बटोर लाकर डेरे में जलती हुई आग में झोंक देता था, जिससे उसकी लपट तेज़ हो उठती थी और चारों तरफ़ फैले हुए अन्धकार में एक कँपकँपी दौड़ जाती थी। उस क्षणिक प्रकाश में हमें दाहनी ओर क्षितिज तक फैले हुए मैदान और बाईं तरफ़ हरहरानेवाले सीमाहीन समुद्र के बीच अपनी एकान्त निर्जनता का अच्छी तरह भास हो जाता था। साथ ही हमारी आँखों के सामने उस बुड्ढे जिप्सी मकर छुद्रक का चेहरा भी चमक उठता था, जिस पर डेरे के साथ आये हुए घोड़ों की देखभाल करने का भार सौंपा गया था।

उस बुड्ढे जिप्सी का, मालूम पड़ता था, इस ठिठुरा देनेवाले पवन की ओर ध्यान भी नहीं जाता था, जो उसके लबादे को झक-

झोरता हुआ उसकी घने बालोंवाली कठोर छाती को टकरा रहा था। वह मुझसे बिना रुके हुए एक प्रवाह में बातें करने लगा।

"तो तुम हम लोगों के दल में शामिल हो रहे हो! बहुत अच्छा किया। होता वही है जो हम सबकी तक़दीर में लिखा होता है। फिर भी हमें चाहिए, हम आँखें खोलकर घूमें, दुनिया देखें और दुनिया देखने के बाद चादर तानकर लेट जायँ और मर जायँ। बस, यही सब कुछ है!

"आदमी भी क्या तमाशे के हैं!" उसने अपनी बलिष्ठ भुजाएँ लम्बे-चौड़े मैदान की ओर फैला दीं—"दुनिया में इतनी जगह पड़ी है, फिर भी वे एक ही जगह इकट्ठा हो जायँगे और ज़रा सी ज़मीन के लिए मरने-मारने को तैयार हो जायँगे। अधिक से अधिक मेहनत करेंगे! किस वास्ते? किसके लिए? कोई नहीं जानता। तुम ख़ुद हल चलाते हुए किसान की ओर देखो, तुम्हारे मन में फ़ौरन यह विचार आयेगा। पहले तो वह धरती जोतने में अपनी शक्ति गँवाता है और अन्त में उसी खेत में मरकर सो जाता है, सड़ जाता है। उसका कुछ भी अवशेष नहीं रहता। वह अपनी पसीने की कमाई का उपभोग नहीं कर पाता। जैसे जन्मा था वैसे ही मर जाता है, मूर्ख कहीं का!

"क्या वह इसी लिए जन्मा था कि पहले तो ज़मीन खोदता रहे और फिर अपनी क़ब्र तैयार करने से भी पहले टाँग पसार दे? क्या उसने कभी आज़ादी का अनुभव किया? क्या उसने कभी इस लम्बे-चौड़े मैदान को पहचाना? इस विशालकाय समुद्र की मरमर को सुना? क्या यह ध्वनि सुनकर कभी उसका हृदय प्रसन्न हुआ? हिः! पैदा होने के समय भी ग़ुलाम रहता है और ज़िन्दगी भर ग़ुलाम बना रहता है, बस यही ग़ुलामी का पट्टा उसके लिए सब कुछ है! वह कभी अपने लिए कुछ नहीं कर पाता।

"और मुझे देखो! मेरे इन पके बालों ने ज़िन्दगी के पचास वर्ष देखे हैं। अगर तुम मेरी सारी जीवन-कथा लिखने बैठो तो पोथे रँग जायँगे और फिर भी कुछ बाक़ी रहेगा। तुम मुझे ऐसे किसी नगर का नाम बताओ जो मैंने न देखा हो। तुमने तो उन नगरों का नाम भी न सुना होगा जो मैंने देखे हैं। बस, ज़िन्दगी में ऐसे ही रहना चाहिए—सदा घूमते रहो, घूमते रहो—प्रत्येक स्थान पर थोड़ी देर के लिए ठहरो—बस। जिस प्रकार रात और दिन का क्रम सदा चला करता है, उसी प्रकार तुम भी चलते रहो। ज़िन्दगी की बाबत कभी कुछ सोचो मत, अगर तुम अपना दिमाग़ नहीं ख़राब करना चाहते हो। यही मेरी सलाह है। तुम ज़िन्दगी के बारे में जितना अधिक विचार करोगे, तुम उससे उतनी ही अधिक घृणा करने लगोगे। यही होता है। मैं स्वयं अनुभव कर चुका हूँ। सच, मैं ज़िन्दगी देख चुका हूँ।

"मैं जेल में रह चुका हूँ। वहाँ सोचने-विचारने का बहुत समय मिलता था। इस दुनिया में मैं क्यों पैदा हुआ? मैं अपने से प्रश्न किया करता। मैं ये सब बातें सिर्फ़ वहाँ वक़्त काटने के लिए सोचा करता था; क्योंकि वहाँ वक़्त नहीं कटता था। इन बातों पर विचार करने से मेरा हृदय और भारी हो जाता था!......सच, हम दुनिया में इसी लिए रहते हैं कि रहते हैं, बस! क्यों रहते हैं? कौन जानता है? कोई नहीं! और प्रश्न करना व्यर्थ है। अपनी ज़िन्दगी को पूरी तौर से जिओ, सदा यहाँ से वहाँ घूमते रहो, अपने चारों ओर आँख खोलकर देखो! और तब तुम्हें कभी उस वस्तु की इच्छा नहीं होगी जो तुम्हारे पास नहीं है। मैं सच कहता हूँ, मैं यह सब अनुभव कर चुका हूँ।

"हिः! एक बार मेरी एक आदमी से बातचीत हुई...वह भी तुम्हारी ही तरह हट्टा-कट्टा था, एक रूसी था। उसने कहा—'तुम्हें अपनी मर्ज़ी के अनुसार नहीं रहना चाहिए, बल्कि उस तरह रहना चाहिए, जिस तरह रहने के लिए ईश्वर ने आज्ञा दी है। बस तुम

उसके चरणों में अपने को चढ़ा दो और फिर तुम जिस चीज़ की प्रार्थना करोगे, तुम्हें प्राप्त हो जायगी।' और मज़े की बात यह कि उस बेचारे के बदन पर फटा हुआ चीथड़े जैसा लबादा था। मैंने उससे कहा कि तुम प्रार्थना कर अपने लिए नये कपड़े क्यों नहीं प्राप्त कर लेते। इस पर वह मुझसे नाराज़ होने लगा, गालियाँ देने लगा और अपने रास्ते चला गया। इससे कुछ ही देर पहले वह क्षमा और प्रेम की बात कर रहा था। उसे चाहिए था कि जब मैंने अपनी बात से उसके अहंकार को चोट पहुँचाई तब मुझे क्षमा कर देता! बस, ऐसे ही शिक्षक होते हैं! वे तुम्हें शिक्षा 'देंगे, थोड़ा खाओ और ख़ुद दिन में दस बार खायेंगे.... .''

वह आग में थूककर चुप हो गया और अपने पाइप में तम्बाकू भरने लगा। पवन का वेग शान्त हो गया था, अब जैसे कराह रहा था। घोड़े अँधेरे में हिनहिना रहे थे। और डेरे से, जो हम लोगों से पचास क़दम पर था, एक कोमल पर एक वेदनापूर्ण कण्ठ के अलाप भरने की आवाज़ आ रही थी। वह छुद्रक की सुन्दर छोकरी नानका थी, जो गा रही थी। मैं उसकी आवाज़ पहचानता हूँ, वह बड़ी कोमल और कसक भरी है, व्यथा और अभाव की साकार मूर्ति है। वह गा क्या रही थी अपने हृदय की पीड़ा उँडेल रही थी? अपनी अभिमान से छलकती हुई आकृति से वह कोई रानी मालूम पड़ती है, पर उसकी गहरी भूरी आँखों में, जिन पर सदैव मर्मान्तक वेदना की एक जाली पड़ी रहती है, साफ़ झलकता है कि वह अपने सौन्दर्य के दुर्दमनीय आकर्षण से भली भाँति अवगत है, साथ ही उसमें उन लोगों के प्रति विकट घृणा भी है जो उसके समान नहीं हैं।

छुद्रक ने पाइप मुझे दिया।

"लो तमाखू पियो! यह छोकरी अच्छा तो गाती है? क्यों, तुम्हारा भी यही विचार है न? अच्छा, इस छोकरी के समान सुन्दर कोई लड़की तुम्हें प्यार करे तो तुम पसन्द करोगे? नहीं! ठीक है! तुम

सही हो ! कभी भी स्त्रियों पर विश्वास मत करो, उनसे सदा दूर रहो। तमाखू पीने की अपेक्षा किसी छोकरी को चूमना अधिक अच्छा लगता है...लेकिन तुमने जहाँ एक बार किसी स्त्री के ओठों को चूमा, तुम्हारे हृदय की स्वतन्त्रता छिन जाती है। स्त्री तुम्हें ऐसे पाश में बाँध लेती है जो तुम्हें दिखाई भी नहीं पड़ता और जिससे तुम मुक्त भी नहीं हो पाते। तुम अपनी आत्मा तक उसे भेंट चढ़ा देते हो और बदले में कुछ नहीं मिलता। मेरी यह सलाह गिरह में बाँध लो। स्त्रियों से सदैव सावधान रहो, वे नागिनें होती हैं...मैं तुम्हें संसार में सबसे अधिक प्रेम करती हूँ, वह कहती है। और अगर तुम चाहे अन्जान में ही उसके पिन चुभो दो तो वह तुम्हें फाड़ खाने को तैयार हो जायगी। मैं जानता हूँ ! ख़ूब अच्छी तरह जानता हूँ ! अगर तुम सुनना चाहो तो तुम्हें एक कहानी सुना सकता हूँ। लेकिन मेरी यह बात गिरह में बाँध लो कि सदा सावधान रहना, किसी के शिकार मत होना, सदा पक्षी की भाँति स्वतन्त्र रहना।

'बहुत समय की बात है। एक नवजवान जिप्सी था। उसका नाम था जोबर। हंगरी, बोहेमिया, स्लावोनिया और समुद्रतट के सभी देश उससे परिचित थे; क्योंकि वह एक बहादुर जवान था। ऐसा कोई गाँव न था, जहाँ के कम से कम एक दर्जन लोगों ने यह शपथ न खाई हो कि वे जोबर का ख़ून करेंगे। फिर भी वह ज़िन्दा था। अगर उसे कोई घोड़ा पसन्द आ जाता था तो फिर उसे लेकर हवा हो जाता था, चाहे एक पूरी फ़ौजी टुकड़ी ही उसकी निगरानी के लिए नियुक्त क्यों न हो ! उसे न ईश्वर का डर था, न मनुष्य का और अगर शायद शैतान भी अपनी पूरी सेना लेकर उसका सामना करता तो वह अकेले ही उससे लोहा लेता और मुझे पूरा विश्वास है कि शैतान के जबड़े भी जोबर की मज़बूत कलाइयों का रस चख लेते।

'जिप्सियों के सभी दल या तो उससे परिचित थे या उन्होंने उसका नाम सुन रक्खा था। उसे केवल घोड़े का शौक़ था और सो

भी केवल दो-चार घड़ी के लिए। बस एक बार सवारी करने के बाद वह घोड़ा मन से गिर जाता था और घोड़े के बेचने पर उसे जो पैसा मिलता था वह कोई भी उससे माँग सकता था। उसके पास ऐसी कोई भी वस्तु न थी जो वह दूसरों को न दे सकता हो। अगर तुम उसका हृदय भी माँगते तो वह अपना सीना चीरकर तुम्हारे हाथों पर रख देता, सिर्फ़ इसी संतोष के वास्ते कि उसने तुम्हारी बात टाली नहीं।

'हमारा दल उस समय बुकोविना में था। यह दस वर्ष पहले की बात है। लेकिन मुझे ऐसा मालूम पड़ता है, जैसे कल की घटना हो। वसन्त-ऋतु थी। हम लोग एक जगह डेरा डाले थे। मैं था, सिपाही दानिला था जो कितनी ही लड़ाइयाँ लड़ चुका था, बूढ़ा नूर था। और भी कई आदमी थे। हमारे साथ दानिला की लड़की राद्दा भी थी।

'तुमने तो नानका को देखा है। क्या वह कोई रानी नहीं मालूम पड़ती? लेकिन राद्दा की तुलना उससे नहीं की जा सकती; क्योंकि नानका उसके पैरों का धोवन भी नहीं है। उसके माधुर्य का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। हाँ, बेला पर किया जा सकता है, लेकिन ऐसा वही कर सकता है जो बेला की आत्मा से परिचित हो।

'कितने ही बहादुर नौजवान उसके पीछे अपना हृदय खो बैठे थे। एक बार एक अमीर आदमी की उस पर नज़र पड़ गई। वह अपनी जगह पर बस खड़ा ही रह गया, जैसे उसके शरीर पर फ़ालिज गिर पड़ा हो। वह अपने घोड़े पर बैठा हुआ इस तरह काँप रहा था, जैसे ज्वर चढ़ा हो। वह शैतान की तरह ख़ूबसूरत था। उसकी पोशाक पर ज़री का काम था। जब उसका घोड़ा अपनी टाप पटकता था, उसकी पोशाक बिजली की तरह चमकती थी। उसकी नीली टोपी में हीरे जड़े थे...वह बड़ा अमीर आदमी था। वह राद्दा की ओर देखता रहा,

देखता रहा, फिर उसने सहसा उससे कहा—"तुम मुझे एक प्यार दो और मैं तुम्हें उसके बदले में रुपयों से भरी थैली दूँगा।" राद्दा ने उत्तर में मुँह फेर लिया। "माफ़ करो! अगर मेरी बात से नाराज़ हो गई हो तो इतनी ही कृपा करो कि एक बार केवल मुस्कुरा दो, बस!" वह उसके सामने इस प्रकार दीन बन गया, उसने रुपयों से भरी एक बड़ी थैली उसके पैरों पर फेंक दी! लेकिन जानते हो राद्दा ने क्या किया? उसने रुपयों की थैली पैरों से ठुकरा दी, बस!

' "अच्छा तुम दूसरे प्रकार की लड़की हो?" उस अमीर आदमी ने बुदबुदाकर कहा और घोड़े के ऐंड़ लगाई। उसके पीछे केवल गर्द का बादल रह गया।

'दूसरे रोज़ वह फिर आया। "इस लड़की का बाप कौन है?" उसकी आवाज़ डेरे भर में गूँज उठी। दानिला सामने आया। "इस लड़की को मेरे हाथ बेच दो, तुम जितना रुपया चाहो मुझसे ले लो!" लेकिन दानिला ने उत्तर दिया—"यह रवाज केवल रईसजादों में है; वे सब कुछ बेच सकते हैं, साधारण वस्तु से लेकर अपनी आत्मा तक। लेकिन मैं फ़ौज में लड़ चुका हूँ, मैं कोई चीज़ बेच नहीं सकता!" वह अमीर आदमी ग़ुस्से से लाल हो उठा और अपना हंटर फटकारने लगा, लेकिन हमने उसी समय उसके घोड़े के कानों के निकट दियासलाई जलाकर दिखा दी, जिससे वह घोड़ा अपने सवार को लेकर हवा हो गया...हम लोगों ने अपना डेरा समेट लिया और आगे बढ़े। हम लोग दो दिन से यात्रा कर रहे थे, फिर भी उसने हम लोगों को पकड़ लिया! "सुनो जी!" उसने चिल्लाकर कहा—"मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ कि मेरे दिल में कोई मैल नहीं है। मुझे यह लड़की शादी में दो, मैं तुम लोगों के साथ रहूँगा। मेरे पास बहुत दौलत है!" वह बड़े आवेश में था और अपने घोड़े पर बैठा हुआ थरथर काँप रहा था, जैसे तेज़ हवा में घास का तिनका काँपता है। "बोलो, बेटी!" दानिला अपनी दाढ़ी के भीतर गुर्राया। "अगर एक सिंह की लड़की

किसी सियार के साथ चली जाय तो लोग उसे क्या कहेंगे?" –राद्दा ने पूछा। दानिला हँस पड़ा और हम लोग भी उसके साथ हँसने लगे। "ख़ूब कहा बेटी! महाशय, आपने सुन लिया? यह हो नहीं सकता। अच्छा होगा, आप किसी सियार की लड़की तलाश करें। बहुत-सी मिल जायँगी।"

'हम लोग आगे बढ़े। उस अमीर आदमी ने अपनी टोपी ग़ुस्से में ज़मीन पर पटक दी और इतनी तेज़ी से घोड़ा दौड़ाया कि पृथ्वी काँपने लगी। ऐसी लड़की थी राद्दा!

'एक रोज़ हम लोग बैठे हुए सुन रहे थे। मैदान में संगीत की धारा प्रवाहित हो रही थी। बड़ा मधुर संगीत था! वह हमारी नसों के ख़ून को उछाल रहा था और ऐसा मालूम पड़ता था, किसी दूर देश की पुकार हो। हममें से प्रत्येक आदमी को ऐसा अनुभव हो रहा था कि उस संगीत ने हममें एक अस्पष्ट अभिलाषा जाग्रत कर दी है कि या तो हम मर जायँ या फिर सारी दुनिया के शासक होकर जियें! ऐसा था वह संगीत।

'वह संगीत प्रतिपल हमारे निकट आता जाता था। सहसा हमारे सामने अँधेरे में एक घोड़ा प्रत्यक्ष होता है और इस घोड़े पर हम एक आदमी बैठा देखते हैं, जिसके हाथ में एक बेला है। "जोबर, तुम हो!" दानिला ने हर्ष प्रकट किया।

'तो वह जोबर था! उसकी मूँछें उसके कन्धों तक लटकती हुई उसके लम्बे-लम्बे बालों के गुच्छों से उलझ रही थीं। उसकी आँखें तारों जैसी चमक रही थीं। जब हँसता था, जैसे सूरज चमकता था। दूर से वह मालूम पड़ता है कोई पत्थर की मूर्ति, जैसे हमारे सामने घोड़े के साथ ही एक पत्थर की मूर्ति अंकित हो। हमारे डेरे में जलती हुई आग उस पर लाल प्रकाश फेंक रही थी। दुनिया में ऐसा कौन आदमी होगा जो उसे देखते ही उस पर मोहित न हो जाय। मैं सच कहता हूँ।

'सच, दुनिया में ऐसे कुछ लोग होते हैं। उन्होंने तुम्हारी ओर नज़र उठाई कि तुम्हारा दिल बेक़ाबू हुआ। और इसके लिए तुम लज्जित नहीं होते, बल्कि एक प्रकार का गर्व होता है। लेकिन दोस्त दुनिया में ऐसे बहुत से आदमी नहीं हैं, और यह अच्छा ही है। अगर दुनिया में अच्छाइयाँ ही अच्छाइयाँ होतीं तो लोग उन्हें अच्छाइयाँ मानने से इनकार कर देते। दुनिया का यही रवैया है। ख़ैर, आगे की कथा सुनो।

'राद्दा ने उससे कहा—"जोबर, ख़ूब बजाते हो। बेला तुम्हारे हाथों का स्पर्श पाकर जैसे अपना हृदय खोलकर रख देता है।"

'जोबर हँसने लगा। उसने कहा—"मैंने इसे अपने हाथों बनाया है, लकड़ी से नहीं, एक नवयुवती के हृदय से, जिसे मैं बहुत प्यार करता था। इसमें मेरी ही हृत्तंत्रियाँ लगी हुई हैं। यह बेला तो दिखाने का है। मैं जानता हूँ मेरे हाथों को कौन चलाता है! समझ गई न?"

'हम जिप्सी लोग आरम्भ से ही स्त्रियों की दृष्टि की उपेक्षा करते है, जिससे वे हमारे हृदयों में आग न लगा सकें। हम चाहते हैं, इसके विपरीत उन्हीं के हृदयों में पहले आग लगे! जोबर भी ऐसी ही चाल चल रहा था, पर राद्दा दूसरे प्रकार की युवती थी। उसने मुँह फेरकर जम्हाई लेते हुए कहा—"लोग कहते हैं, जोबर बड़ा बुद्धिमान् और चतुर है। वे झूठे हैं।" राद्दा दूसरी ओर चली गई। "आह, निष्ठुर सौन्दर्य!" जोबर की आँखें चमकने लगीं। वह घोड़े पर से कूद पड़ा। "दोस्तो, मैं भी आता हूँ।" "आओ, स्वागत!" दानिला ने कहा। उससे गले मिलने के बाद हम लोग थोड़ी देर तक तो बातचीत करते रहे, फिर सोने चले गये......हम लोग ख़ूब ख़र्राटे भरकर सोये... दूसरे रोज़ सुबह हमने देखा कि जोबर के माथे पर पट्टी बँधी है। क्या बात हुई? "कुछ नहीं, घोड़े ने लात मार दी।" उसने कहा।

'हा—हा ! हम लोग जानते थे, किस घोड़े ने लात मारी है। हम लोगों की दाढ़ियाँ चमक उठीं। दानिला भी मुस्कराने लगा। "क्या जोबर भी राद्दा को पसन्द नहीं आया ?" "अवश्य ही नहीं !" स्त्री चाहे जितनी सुन्दर हो, उसका हृदय हमेशा कमीना होता है। तुम उसके गले में चाहे सोने की थैली लटका दो, फिर भी वह वही की वही बनी रहेगी। मैं ठीक कहता हूँ।

'इस प्रकार हम लोगों के दिन कटते रहे। उस स्थान पर व्यापार अच्छा था। जोबर भी हमारे साथ रहा। वह बड़ा सुन्दर साथी था। बूढ़ों की तरह बुद्धिमान् , सब कामों में चतुर। वह रूसी और हंगेरियन भाषा भी पढ़ और लिख सकता था। जब वह बोलने लगता था तब बस यही इच्छा होती थी कि नींद को सदा के लिए बिदा दे दी जाय और उसकी बातें बैठा सुनता रहे। और वह बेला तो इतना सुन्दर बजाता था कि मुझसे क़सम ले लो कि मैंने दुनिया में और किसी को इतना सुन्दर बेला बजाते देखा हो। वह जैसे ही कमानी अपने हाथ में लेता था, हृदय उछलने लगता था, और तारों के झंकृत होते ही हृदय की धड़कन रुक जाती थी। वह बजाता ही जाता था और हमारी ओर देख-देखकर मुस्कराता जाता था। हमारा मन एक साथ ही हँसने और रोने को चाहता था। उसकी करुण तान हृदय को बींध देती थी और जब वह सहसा दूसरी मधुर सुखद रागिनी छेड़ देता था, तब हृदय आनन्द से नृत्य करने लगता था। ऐसा मालूम पड़ता था कि आसमान, चाँद और तारे भी उसके ताल पर नाच रहे हैं। ऐसा सुन्दर बेला बजाता था, वह !

'उसके संगीत की एक आवाज़ पर शरीर की एक-एक नस उभड़कर उसका ग़ुलाम हो जाती थी, और अगर ऐसे वक़्त जोबर हम लोगों को आज्ञा देता—"दोस्तो, हथियार सँभालो !" तो हम लोग एक साथ ही, जिस किसी की ओर वह संकेत करता, उसके सीने में ख़ंजर भोंक देते। वह हम लोगों से सब कुछ करवा सकता था, हम उसे बहुत प्यार करते थे।

केवल राद्दा उसकी ओर ध्यान न देती थी। अगर इतना ही करती तो ऐसी बुरी बात न थी, पर वह तो उसकी हँसी भी उड़ाती थी। वह उसके हृदय को बन्दी बनाये थी। जोबर दाँत किटकिटाता, मूँछें टेढ़ी करता। उसकी आँखें अँधेरी रात की तरह काली थीं, फिर भी कभी-कभी इतनी तेज़ी से चमक उठती थीं कि हम लोगों को डर लगता था। रात को वह दूर मैदान में चला जाता और सुबह होने तक बेला को छेड़ा करता। बेला करुण स्वर में चीत्कार करता, क्योंकि उसकी स्वतन्त्रता छिन चुकी थी। हम लोग अपने डेरे में आँखें खोले हुए पड़े रहते और सोचते, क्या होगा? हम जानते थे कि दो चट्टानों के बीच अपने को डालना मौत को निमन्त्रण देना है।

'एक दिन हम लोग बैठे हुए अपने व्यवसाय के बारे में बातचीत कर रहे थे। हमारी बातचीत नीरस होती जा रही थी, इसलिए दानिला ने कहा—"जोबर, एक गाना सुनाओ। हमारे हृदयों को अपनी मधुर तान से सरस कर दो।" जोबर ने एक दृष्टि राद्दा पर डाली। वह हमसे थोड़ी दूर पर पीठ के बल लेटी हुई आसमान की ओर निहार रही थी। जोबर ने अपना बेला उठा लिया। बेला वाचाल हो उठा, जैसे किसी नवयुवती का हृदय हो। जोबर गाने लगा। "हो! लम्बे-चौड़े मैदान में मैं घोड़े पर चढ़कर भागा जा रहा हूँ। मेरे हृदय में आग लगी है। मेरा घोड़ा तीर की तरह भाग रहा है।"

'राद्दा ने अपना सिर घुमाया, कुहनी के बल बैठ गई और जोबर की आँखों में मुस्कराने लगी। जोबर के मुख पर सूर्योदय हो आया। वह गाता गया—"हो! चलो हम लोग भाग चलें। चलो, हम रात से भागकर दिन के निकट चलें। चलो, हम कोहरे के परदे को चीरकर सूर्य को पहाड़ियों के सिर का चुम्बन लेते हुए देखें। हम लोग सूर्य के साथ रात्रि होने तक आसमान में प्रकाश बिखेरते हुए यात्रा करेंगे। हम लोग दोपहर से अर्धरात्रि तक घोड़ा दौड़ायेंगे, और फिर चन्द्रमा की शीतल गोद में सो जायँगे।"

'बस, वह ऐसे ही गाता था ; अब आजकल उसकी तरह कोई नहीं गा पाता। राद्दा ने जैसे ठण्डे पानी का छींटा देते हुए कहा—"जोबर, मैं तो कभी इतने ऊँचे उड़कर चन्द्रमा की गोद में सोने न जाऊँ! क्योंकि तब गिरने का भी तो भय रहता है और गिरने पर तुम्हारी नाक पिचक जायगी, मूछों में कीचड़ सन जायगी। इसलिए ज़रा सावधान रहना।" जोबर पल भर तक उसकी ओर एकटक देखता रहा, उसने कोई उत्तर न दिया। अपने क्रोध को वश में करके वह गाता रहा—"और जब दूसरा दिन आसमान से झाँकेगा तब वह हमें गहरी नींद सोता हुआ पायेगा। हम लोग सूर्य के लाल प्रकाश में सदा के लिए सो जायँगे।"

' "बस इसे कहते हैं गीत!" दानिला ने कहा—"मैंने अपने जीवन में ऐसा सुन्दर गीत नहीं सुना। मैं अगर सच न बोलता होऊँ तो शैतान मुझे इसी वक्त पत्थर बना दे!" बूढ़े नूर ने भी अपनी मूछें उमेठीं और कंधे हिलाये! जोबर का यह गीत हम सब लोगों के हृदयों में प्रतिध्वनित हो उठा। लेकिन राद्दा इस गीत से प्रसन्न नहीं हुई। "गीत क्या मिनमिनाना है!" उसने कहा। हम सब लोगों को बुरा मालूम हुआ।

' "राद्दा, शायद कोड़ा खाने की तबीअत है!" उसके पिता ने कहा। लेकिन बीच में जोबर ने टोपी ज़मीन पर पटककर, आँखें निकालते हुए कहा—"नहीं, दानिला! बिगड़ैल घोड़े के लिए ज़रा नोकदार लोहे के बूटों की आवश्यकता होती है। मैं तुम्हारी लड़की से विवाह करने के लिए तुम्हारी अनुमति चाहता हूँ।" "ठीक कहा!" दानिला मुस्कराया—"और तुममें इच्छा और शक्ति हो तो इसे अपनी बना लो।" "बहुत अच्छा!" जोबर ने उत्तर दिया—और राद्दा की ओर मुड़ पड़ा—"ओ ख़ूबसूरत छोकरी, मेरी बात सुन, इतनी हठीली न बन! मैंने तेरी जैसी कितनी ही छोकरियाँ देखी हैं—हाँ न मालूम कितनी! लेकिन किसी ने भी मेरे हृदय में इस प्रकार आग नहीं लगाई। आह, राद्दा, तूने मेरी आत्मा को अपना बन्दी बना लिया है...तो अब मैं क्या करूँ! जो होना होगा,

होगा...मैं तुझसे ईश्वर के सामने, तेरे पिता के सामने, इन सब लोगों के सामने कहता हूँ कि मुझसे शादी कर ले। लेकिन यह सदा याद रखना, मेरी स्वतन्त्रता में कभी बाधा डालने का प्रयत्न न करना; क्योंकि मैं एक स्वतन्त्र आदमी हूँ और जिस तरह मन आये उस तरह रहना चाहता हूँ।" इसके बाद ओंठ चबाता हुआ वह राद्दा की ओर बढ़ा, उसे घोड़े पर बिठाकर ले भागने के लिए..."अहा!" हम लोगों ने आपस में एक दूसरे से कहा—"अब राद्दा को सेर का सवा सेर मिला है।" लेकिन सहसा हमने जोबर को हवा में हाथ नचाते और पीठ के बल ज़मीन पर गिरते देखा!...

'वह गोली खाये हुए मनुष्य की भाँति ज़मीन पर गिर पड़ा। यह घटना कैसे हुई? राद्दा ने अपने कोड़े में उसके पैरों को लपेटकर उसे अपनी ओर खींचा था, जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

'इसके बाद राद्दा फिर धरती पर लेटकर मुस्कराती हुई आसमान निहारने लगी। हम लोग साँस बाँधकर प्रतीक्षा कर रहे थे कि जोबर अब क्या करता है। जोबर ज़मीन पर बैठकर दोनों हाथों से अपना माथा दबाने लगा। वह इस प्रकार मुँह बना रहा था जैसे उसका माथा अभी फट जायगा। इसके बाद वह शान्तिपूर्वक उठा और हम लोगों की ओर दृष्टि डाले बग़ैर मैदान की ओर चल दिया। बूढ़े नूर ने मुझसे फुसफुसाकर कहा—"देखो वह जा रहा है!" मैं भी उस अँधेरी रात में जोबर के पीछे-पीछे चल पड़ा।'

छुद्रक ने अपने पाइप की राख झाड़ी और फिर उसमें तमाखू भरने लगा। मैं अपने लबादे के अन्दर काँपता हुआ छुद्रक के चेहरे की ओर देखने लगा, जो हवा और धूप के थपेड़े सहते सहते काला पड़ गया था। वह अपना भारी सिर हिलाकर कुछ बड़बड़ाने लगा, मैं सुन न सका। उसकी बड़ी-बड़ी मूछें भी उसके लम्बे-लम्बे बालों की भाँति हवा में हिल रही थीं। वह किसी पुराने पेड़ की भाँति मालूम पड़ता था, जिस पर बिजली गिरती है, फिर भी वह अभिमान के साथ सिर ऊँचा उठाये खड़ा

रहता है! समुद्रतट पर लहरें शोर मचा रही थीं और पवन उनकी मरमर-ध्वनि अपने साथ लिये मैदान पर दौड़ रहा था। नानका ने गाना बन्द कर दिया था। आसमान में बादल छा आये थे, जिससे रात और अँधेरी हो गई थी।

'जोबर सिर झुकाये, हाथ लटकाये, क़दम नापता हुआ चल पड़ा। नदी के निकट आकर वह एक चट्टान पर बैठ गया और कराहने लगा। वह इतने करुण स्वर में कराह रहा था कि मेरा हृदय सहानुभूति से द्रवित हो गया। फिर भी मैं उसके निकट नहीं गया। क्या केवल शब्दों से मनुष्य की पीड़ा को सान्त्वना मिल जाती है? नहीं!...वह चट्टान पर पत्थर की भाँति अचल होकर एक घंटे, दो घंटे, तीन घंटे—न मालूम कितने समय तक बैठा रहा।

'मैं थोड़ी ही दूर पर ज़मीन पर लेटा था। उँजियारी रात थी, चन्द्रमा के प्रकाश में सारा मैदान चाँदी के समान चमक रहा था। सब चीज़ें साफ़-साफ़ दिखाई पड़ रही थीं।

'सहसा मैंने राद्दा को जिप्सियों के डेरे से जोबर की ओर आते देखा। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। राद्दा बड़ी विचित्र लड़की थी। राद्दा जोबर के निकट जाकर कुछ कहने लगी, जोबर ने सुना ही नहीं। राद्दा ने उसके कंधे पर हाथ रक्खा, जोबर ने चौंककर अपना हाथ मुँह पर से हटाया। वह उछलकर खड़ा हो गया। उसके हाथों ने कसकर कटारी की मूठ पकड़ ली। "वह इस लड़की का ख़ून कर डालेगा!" मैंने मन ही मन कहा। मैं सहायता के लिए डेरे की ओर दौड़ने ही वाला था कि मैंने ये शब्द सुने—"उसे फेंक दो, नहीं तो मैं तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगी, इसे देखते हो!" राद्दा जोबर के सिर पर पिस्तौल ताने थी। ऐसी औरत थी राद्दा! मैंने सोचा—अच्छी जोड़ी मिली है। अब आगे क्या होगा!

'अच्छा अब सुनो!" राद्दा ने पिस्तौल पेटी में रखते हुए कहा—"मैं तुम्हारी जान लेने के लिए नहीं, बल्कि तुमसे सुलह करने आई हूँ!

अपनी कटार फेंक दो।" उसने कटार फेंक दी और उसकी ओर आँखें मरोड़कर देखने लगा। बड़ा विचित्र दृश्य था। दोनों एक-दूसरे की ओर इस प्रकार देख रहे थे जैसे कोई हिंसक पशु हों, फिर भी दोनों ही बहादुर और दिलेर थे। केवल चन्द्रमा उन्हें देख रहा था, और मैं... बस और कोई नहीं।

' "जोबर, मेरी बात सुनो! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ!" उसने केवल अपने कंधे हिलाये, जैसे उसके हाथ और पैर बँधे हों।

' "मैंने बहुत से जवान देखे हैं, पर तुम सबों से बहादुर और ख़ूबसूरत हो और कोई होता तो मेरे आँखें मरोड़ते ही मूँछ मुड़ा डालता, मेरे संकेत करते ही अपना सिर मेरे पैरों पर रख देता। लेकिन इससे फ़ायदा क्या होता! वे मुझे प्रसन्न नहीं रख सकते थे और मैं उन्हें भेड़ बनाकर रखती। जोबर, दुनिया में बहुत थोड़े जिप्सी हैं। मैंने तुमसे पहले किसी को प्यार नहीं किया, अब तुम्हें प्यार करती हूँ। मुझे अपनी स्वतन्त्रता प्यारी है, लेकिन उससे भी अधिक तुम प्यारे हो। मैं भी अब तुम्हारे बग़ैर नहीं रह सकती, जिस प्रकार तुम मेरे बग़ैर नहीं रह सकते। इसलिए मैं अब चाहती हूँ, तुम मेरे हो जाओ, सम्पूर्ण रूप से मेरे! सुना, जोबर?"

'जोबर मुस्कराया। "मुझे तुम्हारी बातें सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। हाँ, कहती जाओ, रुको मत!'

' "मैं बस इतना ही और कहूँगी। जोबर, तुम चाहे जितना भागो, मैं तुम्हें अपना बनाकर छोड़ूँगी। इसलिए मैं तुमसे कहूँगी कि अब समय मत गँवाओ, मेरे गर्म चुम्बन और आलिंगन तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं—वे बहुत गर्म हैं। मेरी बाहुओं की गरमी में तुम अपना सारा साहसी जीवन भूल जाओगे, अपने सुन्दर गीत भी भूल जाओगे, जो इस मैदान में गूँजा करते हैं...तब तुम अपने प्रणय-गीत मुझे ही सुनाओगे, अपनी राद्दा को!...इसी लिए मैं कहती हूँ, समय मत गँवाओ। कल तुम्हें किसी अफ़सर की भाँति मेरी आज्ञा का पालन करना होगा। कल तुम्हें सारे

डेरे के लोगों के सामने मेरे पैरों पर गिरकर, मेरा दाहना हाथ चूमना होगा—और तब मैं तुम्हारी बीबी बन जाऊँगी।"

'तो इस शैतान लड़की की यह इच्छा थी। ऐसी बातें पुराने ज़माने में हुआ करती थीं, सो भी जिप्सियों में कभी नहीं। औरत के पैर पड़ना! क्या इससे भी अधिक अपमान की बात और कोई हो सकती है? क्यों, तुम तो ऐसा सात जनम भी न करो। कभी नहीं।

'जोबर उछल पड़ा और उसने इस प्रकार दारुण आह भरी, जैसे उसके सीने से गोली पार कर गई हो। उसकी वह दारुण आह सारे मैदान में गूँज उठी। राद्दा भी काँप उठी, फिर भी डिगी नहीं।

' "अच्छा जोबर, कल तक के लिए बिदा! तो कल तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे? सुन लिया न?"

' "सुन लिया। मैं पालन करूँगा!" जोबर ने व्यथित कण्ठ से कहा और उसकी ओर हाथ बढ़ा दिया। लेकिन वह उससे दूर चली गई। वह कटे हुए वृक्ष के समान ज़मीन पर गिर पड़ा और पागलों की भाँति कभी हँसने लगा और कभी रोने लगा।

'सुन्दर नागिनें इसी प्रकार पुरुषों को डस लेती हैं। मैंने बड़ी मुश्किल से जोबर को सँभाला।

'मुझे आश्चर्य होता है, शैतान को इस प्रकार मनुष्य को शोक में डूबे हुए देखकर कौन-सा सुख मिलता है। उसे इस प्रकार स्त्रियों और पुरुषों की भयानक आहें सुनकर क्या प्रसन्नता होती है? क्या दार्शनिकों के पास इसका कोई उत्तर है? मुझे संदेह है...

'मैंने डेरे पर लौटकर सब बातें और लोगों को बता दीं। उन्होंने आपस में सलाह करने के बाद यह निश्चय किया कि कल तक की प्रतीक्षा की जाय। और दूसरे रोज़ यह हुआ—हम लोग शाम को डेरे के निकट बैठे हुए थे जब जोबर आया। वह विचारमग्न दिखाई पड़ता था। उसका चेहरा उतरा हुआ था, आँखों के नीचे काली लकीरें खिंची थीं। वह

धरती की ओर एकटक निहारता रहा। हम लोगों की ओर देखे बग़ैर ही उसने कहा—'दोस्तो, मैंने सारी रात अपने हृदय की छानबीन की और मैंने पाया कि अब उसमें पुरानी स्वतन्त्रता नहीं है। उसमें अब केवल राद्दा का निवास है। सुन्दरी राद्दा खड़ी हुई मुस्करा रही है, किसी रानी की तरह! वह अब भी मुझसे अधिक अपनी स्वतन्त्रता को प्यार करती है। और मैं? मैं अपनी स्वतन्त्रता से अधिक उसे प्यार करता हूँ, इसलिए मैंने उसके पैरों पर सिर नवाने का निश्चय कर लिया है। उसने मुझे यही आज्ञा दी है, जिससे आप सब लोग अपनी आँखों देख लें कि किस प्रकार सुन्दरी राद्दा ने बहादुर जोबर को अपना ग़ुलाम बना लिया है। उसी बहादुर जोबर को, जो राद्दा को जानने से पहले स्त्रियों को उसी प्रकार खिलाया करता था, जिस प्रकार सिंह अपने शिकार को खिलाता है। पैरों पर पड़ने के बाद राद्दा मेरी बीबी हो जायगी और अपने चुम्बनों और आलिंगनों से मेरा दुलार करेगी। उसके बाद मुझे तुम सब लोगों को अपना गीत सुनाने की ज़रा भी इच्छा न रह जायगी, न अपनी स्वतन्त्रता के खोने ही का पश्चात्ताप होगा! क्यों, मैं ठीक कहता हूँ न, राद्दा?'' आँखें उठाकर उसने उदास नेत्रों से उसकी ओर देखा। उसने उत्तर में कुछ कहा नहीं, केवल अपना सिर हिलाया और अपने पैरों की ओर संकेत किया। हम लोग दुःख और आश्चर्य से सब कुछ देख रहे थे। समझ में कुछ न आ रहा था। हमारे मन में हो रहा था कि हम किसी दूर देश को चले जायँ, जिससे जोबर को किसी औरत के पैरों पर—चाहे वह औरत राद्दा ही क्यों न हो—सिर नवाते न देखें। इस दुःखद दृश्य के कारण हम लोगों के हृदयों में लज्जा, शोक और दया का समुद्र उमड़ रहा था।

' "तो फिर?"—राद्दा ने जोबर से कहा।

' "आह, इतनी जल्दी मत करो! अभी बहुत समय है। आज तुम महिमामयी बनोगी!" जोबर हँसने लगा। उसकी हँसी बिजली की कड़क जैसी थी।

' "तो दोस्तो, यह सारी कथा है। अब मेरे लिए और क्या रास्ता है! अब मुझे देखना है कि मेरी राद्दा उतनी ही कठोर-हृदया है कि नहीं, जितनी ऊपर से दीखती है! अब मैं यही जानने के लिए उत्सुक हूँ...दोस्तो, मुझे क्षमा करना!"

'इससे पहले कि हम लोग समझ सकें कि जोबर क्या करने जा रहा है, राद्दा ज़मीन पर तड़प रही थी, उसकी छाती में जोबर की कटार पूरी घुस गई थी। हम लोग चित्रलिखित से खड़े रहे।

"राद्दा ने अपने हाथ से कटार सीने में से निकालकर एक ओर फेंक दी। घाव को अपने बालों के एक गुच्छे से दबा लिया और मुस्कराने लगी। उसने बहुत ही स्पष्ट और तेज़ स्वर में कहा—"जोबर, विदा! मैं जानती थी, तुम ऐसा ही करोगे!"...और ओठों पर इन शब्दों के साथ उसकी पलकें मुँद गईं।

'अब तुम समझ गये होगे कि राद्दा किस प्रकार की लड़की थी। विचित्र लड़की थी!

' "मेरी हठीली रानी, मैं अब तुम्हारे पैरों पर गिरूँगा!" जोबर ने चीख़कर कहा। उसकी हृदय-विदारक चीख़ सारे मैदान में गूँज उठी। उसने ज़मीन पर गिरकर मृत राद्दा के पैरों को चूमा, फिर निर्जीव के समान पड़ गया। हम लोगों ने आदर-भाव से अपनी टोपी उतार ली और चुपचाप दोनों की ओर देखने लगे।

'अन्त में बूढ़े नूर ने चाहा, वह बाँध दिया जाय, पर हम लोगों में से कोई भी जोबर के बाँधने के लिए हाथ न बढ़ायेगा, यह नूर अच्छी तरह जानता था। दानिला ने राद्दा के ख़ून से डूबी हुई कटार उठा ली। यह कटार राद्दा ने अपने हाथों से अपने सीने से निकालकर एक ओर फेंक दी थी। दानिला बड़ी देर तक एकटक उस कटार को निहारता रहा। उसके ओंठ काँपने लगे। कटार पर अब भी राद्दा का गर्म ख़ून लिपटा था। दानिला ने तेज़ी से बढ़कर वह कटार जोबर के

हृदय में भोंक दी। आख़िर दानिला भी एक सिपाही था, राद्दा का पिता था।

' "शाबाश!" जोबर ने दानिला की ओर घूमते हुए तेज़ स्वर में कहा। उसका शरीर राद्दा के निकट ढेर हो गया और उसकी आत्मा भी राद्दा से मिलने के लिए दूसरे लोक को चली गई।

'और हमारी आँखों के सामने राद्दा पड़ी थी। उसका एक हाथ बालों का एक गुच्छा छाती के घाव से दबाये था, खुली आँखें आसमान की ओर निहार रही थीं। और उसके पैरों के पास जोबर पड़ा था, उसके लम्बे-लम्बे केश उसके मुख पर बिखरे हुए थे, जिससे उसके चेहरे का भाव हम लोग नहीं देख सकते थे।

'हम लोग विचार-मग्न खड़े रहे। बूढ़े दानिला की मूँछें काँप रही थीं, आँखों में एक भयानक अन्धकार था। वह आसमान की ओर निहार रहा था। मुँह से उसके एक शब्द भी नहीं निकला। लेकिन बूढ़ा नूर बालकों की भाँति ज़मीन पर लोटता हुआ रो रहा था।

'और रोता क्यों नहीं, रोने की बात थी!

'दोस्त, मेरी यही कामना है, ईश्वर सदा तुम्हारा भला करे। तुम सदा आगे देखते हुए चलो, पीछे सिर मत फेरो; क्योंकि अगर तुम किसी जगह रुक गये तो फिर तुम्हारी मौत है। बस, यही मेरी कहानी है!'

छुद्रक मौन हो गया। उसने अपना पाइप बटुए में रक्खा और अपना लबादा ठीक से ओढ़ लिया। पानी बरसने लगा था, हवा भी तेज़ हो गई थी और समुद्र-तट पर लहरें चीख़ रही थीं। घोड़े हमारे चारों ओर आकर खड़े हो गये और अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से हमें देखने लगे।

छुद्रक ने प्यार से उन्हें चुमकारा, उनकी गर्दन थपथपाई, फिर मेरी ओर घूमकर कहा—"अब सोने का समय हो गया!" लबादे से अपना मुँह ढँककर वह ज़मीन पर लेट गया और शीघ्र ही गहरी नींद सो गया। लेकिन मेरी सोने की इच्छा नहीं हो रही थी। मैं मैदान में छाये हुए

अन्धकार की ओर और दूर गरजते हुए समुद्र की ओर टकटकी बाँधे निहार रहा था। मेरी आँखों के सामने राद्दा का रानियों के समान अभिमान से ऊँचा सिर चित्रित था। वह अपने हाथों बालों के एक गुच्छे से हृदय के घाव को दबाये थी और उसकी कोमल उँगलियों से बूँद-बूँद ख़ून अग्निकणों की भाँति पृथ्वी पर टपक रहा था।...

राद्दा के पीछे बहादुर जोबर खड़ा था। उसके मुख पर उसके लम्बे-लम्बे बाल छितराये थे और उन बालों की ओट में लम्बी लम्बी आँसुओं की धारा बह रही थी...

पानी और तेज़ हो गया। पवन किसी व्यथित हृदय की भाँति चीख़ने लगा। मालूम पड़ता था, वह भी जोबर और राद्दा की स्मृति में शोक प्रकट कर रहा है। रात्रि के अन्धकार में दो छायाएँ एक दूसरे के निकट नाचती रहीं, परन्तु वह मधुर गायक जोबर अपनी उस अभिमानिनी प्रिया राद्दा को पा नहीं सका।

———